

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

Postal Regn No. C.G./RYP DN/65/2022-24

प्रकाशन तिथि : 1 सितम्बर

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.

CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 6 अंक 9, सितम्बर 2022



<http://www.kilol.co.in>



स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य

खुदरा - 80/-

वार्षिक - 720/-

आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा,
धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

मेरे प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

इस माह शिक्षक दिवस है और आप सभी को मालूम ही है कि यह दिवस क्यों मनाया जाता है. हम सबको अपने शिक्षकों का बहुत आदर करना चाहिए क्योंकि हम आज जो भी हैं और आगे जो भी बनेंगे, उसमें शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान होता है.

सितंबर में अन्तराष्ट्रीय साक्षरता और हिंदी दिवस भी है. आइये इस बार प्रण करें कि हम सब हिन्दी पढ़ने, बोलने, लिखने हेतु बहुत मेहनत करेंगे. हमारे आसपास कोई भी ऐसा बच्चा नहीं होगा जिसे पढ़ना, लिखना और साधारण गणित के सवाल हल करना नहीं आता हो.

किलोल पत्रिका आपको हिन्दी भाषा पढ़ने एवं पढ़ने में रुचि विकसित करने में बहुत सहायक साबित हो सकती है. स्कूल में एवं घर में इस पत्रिका का नियमित उपयोग करें और हाँ सबसे महत्वपूर्ण बात ! इस पत्रिका के लिए आलेख लिखकर भेजना न भूलें ! आपके द्वारा एवं आपके बच्चों द्वारा लिखे जा रहे आलेखों को नियमित रूप से हमें लिख भेजें.

**आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा**

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.

सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

बंदर और कुत्ता.....	8
मेरी गुडिया रानी.....	9
मेरा पोता ओम.....	10
सावन	12
अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस.....	13
आओ! चलें स्कूल	16
संघर्ष.....	18
मेरे घर की दिवालघड़ी	20
आओ पढ़ें अब मन लगाकर	22
कहीं आपका बच्चा भी बुलिंग (bullying) का शिकार तो नहीं	24
जनगणमन की धुन के सर्जक स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन रामसिंह.....	27
मच्छर.....	29
राखी भिजवा देना	30
पंद्रह अगस्त	32
विनम्रता	34
अधूरी कहानी पूरी करो	36
व्यर्थ बैठने से मेहनत भली.....	36
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी	36
अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा पूरी की गई कहानी	37
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी.....	38
चींटी और टिड्डा	38
काजू कतली.....	39
पोल खोल नहीं	40
सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता	41
अर्थव्यवस्था का पहिया बड़ा अनमोल है.....	43

आज रविवार है.....	44
मुर्गों का दर्द	45
जलवायु परिवर्तन.....	47
विश्व मस्तिष्क दिवस.....	49
नगरिहा किसान.....	52
वृक्ष हमारे सच्चे मित्र.....	53
बुढ़ापे का सहारा	55
महिलाओं का कौशल और रोजगार	57
आखिर क्यों बदल रहे हैं मनोभाव और टूट रहे परिवार.....	60
कोल्ड-ड्रिंक को ना ना.....	64
लक्ष्य भेद.....	66
निंदा त्यागने का संकल्प लें	68
तुम आगे बढ़ो	71
या तो मैं तिरंगा फहराकर वापस आऊंगा, या फिर उसमें लिपटकर वापस आऊंगा	73
खामोशियां ही बेहतर है.....	76
ईमानदारी और आत्म सम्मान मानवीय जीवन के दो अनमोल हीरे मोती.....	78
बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस)	81
अब करो तैयारी जीत की.....	84
माता-पिता हर घर की शान है.....	86
हरेली तिहार.....	88
विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस	89
हिंदी का स्वरूप व स्थान.....	92
समाधान प्रकृति में हैं.....	96
गांव	99
मां	101
जीवन युद्ध.....	103

उज्जवल भारत उज्जवल भविष्य की गाथा की एक कड़ी	105
जड़ सूत्र	108
अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस	110
बेटी	113
माँ की सीख	115
चल चौसर खेले गौरी	116
उड़ते तोते	118
आओ ताली बजाएं	119
बादल और बच्चे	122
बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीयता पहचान है	125
किसान	126
बरसात	127
मम्मी तुम भूगोल बताओ	128
रोज दिवाली मनाते पेड़	129
चतुर लोमड़ी और सियार	130
बेचारी चिड़िया	131
तितली रानी	132
मैं हूँ अप टू डेट	133
पेड़ लगाएँ कई हजार	135
देखो मेरे नाना जी	149
बढ़ा एक कदम और	151
विरह	153
विज्ञान बाल पहेलियाँ	155
मन बहलाना	157
पीपुल्स प्रेजिडेंट -अब्दुल कलाम	158
आलू और भटे	160

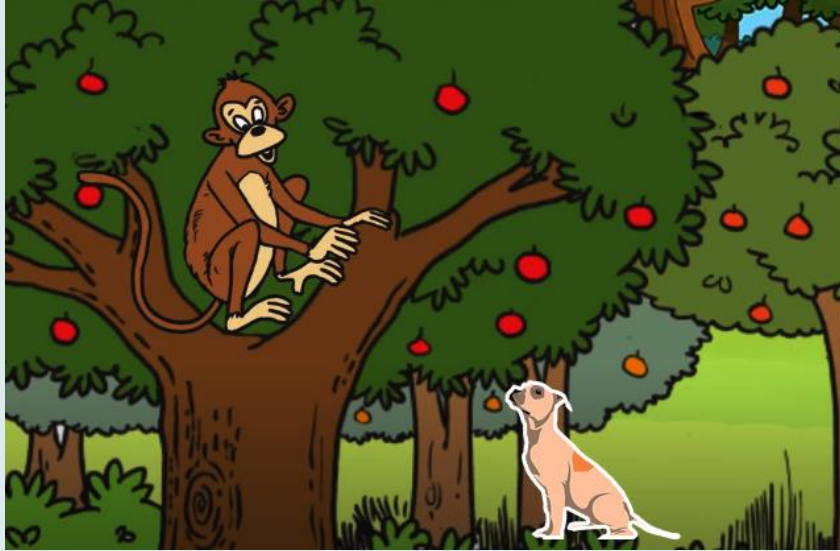
ज्ञान की बातें.....	161
सरकारी स्कूल.....	162
बालवाडी.....	164
रोटी.....	165
कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े.....	166
ज्ञानमणि.....	168
भाई-बहन के अटूट रिश्ते के क्या है मायने.....	170
स्नेह पर्व राखी.....	173
बढ़े चलो.....	175
संपूर्ण रूप से अहिंसा वादी बने.....	178
संयम मनुष्य का सर्वोत्तम चिकित्सक.....	180
मैं अबोध बालक शिशु हूँ.....	182
कर हौसला, कर हिम्मत.....	183
स्वतंत्रता की समर वेदी पर.....	185
किसान.....	187
रानी का रक्षाबंधन.....	189
उत्कृष्ट धातु.....	192
प्यारा सावन.....	193
कोशिका.....	194
अवंतिका.....	195
बंदर मामा हमें बताओ.....	197
बंदर मामा का ड्रामा.....	198
मेरे घर की दिवालघड़ी.....	199
बस मुस्कुराना सीख लो.....	200
सावन आया, सावन आया.....	201
बैंगलेश शनिवार.....	203

अमर रहेगा नाम.....	204
भारत छोड़ो आंदोलन	206
रक्षासूत्र	208
आओ जय जय गान करें.....	210
सुखी परिवार	212
घर घर तिरंगा, हर घर तिरंगा	214
सागर मे जितना पानी.....	216
रक्षाबंधन	217
गुरुजी	219
तुम तो पढ़े लिखे हो.....	220
विज्ञान हाइकु.....	221
तुम तो पढ़े लिखे हो.....	224
राखी का त्यौहार	227
तिरंगा झंडा भारत की शान है.....	228
बाल पहेलियां (रक्षा बंधन के पावन पर्व पर)	229
तिरंगा.....	231
जीवन की यात्रा	254
एहसास	255
जाने के बाद.....	257
रख खुद पर एतबार.....	258
ग़ज़ल.....	259
मेघलोक से उतरो बादल	260
तिरंगा.....	261
रक्षाबंधन	262
भारत देश की आजादी.....	263
हिन्दी भाषा.....	265

प्यारी माँ.....	266
ऐसा मेरा हिंदुस्तान हो	267
मैं एक तारा हूँ.....	269
चलो घर-घर तिरंगा फहराएंगे	270
भोर ले भार धर के रेंगव	272
चित्र देख कर कहानी लिखो	273
सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी.....	273
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी	274
कहानी महानता की "दिव्यांग लड़का और घायल पिल्ला ".....	274
अनन्या तंबोली कक्षा 7 द्वारा भेजी गई कहानी	275
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र.....	276
भाखा जनऊला.....	277

बंदर और कुत्ता

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बंदर घर में घुस कर
रोटी चुरा कर भागा.
घर का कुत्ता टामी
उसके पिछे लागा.

पेड़ पर चढ़ कर बंदर
सारा रोटी खाया.
मगर बेचारा कुत्ता
बंदर को पकड़ न पाया.

इस घर से उस घर से हो कर
भाग गया बंदर.
कुत्ता निराश हो कर
वापस आया घर के अंदर.

मेरी गुडिया रानी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



समय से रोज स्कूल जाती
मेरी गुडिया रानी.
कभी बहाना नहीं बनाती
मेरी गुडिया रानी.

रोज किताबें पढ़ती है
मेरी गुडिया रानी.
पाठ याद करते है
मेरी गुडिया रानी.

होमवर्क करना नहीं भूलती
मेरी गुडिया रानी.
टियूशन भी पढ़ने जाती
मेरी गुडिया रानी.

खेल कूद में आगे रहती
मेरी गुडिया रानी.
कभी नहीं जिद्द करती
मेरी गुडिया रानी.

मेरा पोता ओम

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बाबा कह कर बुलाता
मेरा पोता ओम.

अपना धोड़ा हमें बनाता
मेरा पोता ओम.

साथ हमारे गौशाला जाता
मेरा पोता ओम.

सब गायों को रोटी खिलाता
मेरा पोता ओम.

गाय के पीठ पर बैठ जाता
मेरा पोता ओम.

सब गायों की पीठ सहलाता
मेरा पोता ओम.

पढ़ने स्कूल रोज जाता
मेरा पोता ओम.

मेरे मन को बहुत ही भाता
मेरा पोता ओम.

पंचतंत्र की कथाएँ

रचनाकार- बोलने वाली गुफा

बहुत पुरानी बात है, एक घने जंगल में बड़ा-सा शेर रहता था. उससे जंगल के सभी जानवर थर-थर कांपते थे. वह हर रोज जंगल के जानवरों का शिकार करता और अपना पेट भरता था.



एक दिन वह पूरा दिन जंगल में भटकता रहा, लेकिन उसे एक भी शिकार नहीं मिला. भटकते-भटकते शाम हो गई और भूख से

उसकी हालत खराब हो चुकी थी. तभी उस शेर को एक गुफा दिखी. शेर ने सोचा कि क्यों न इस गुफा में बैठकर इसके मालिक का इंतजार किया जाए और जैसे ही वो आएगा, तो उसे मारकर वही अपनी भूख मिटा लेगा. यह सोचते ही शेर दौड़कर उस गुफा के अंदर जाकर बैठ गया.

वह गुफा एक सियार की थी, जो दोपहर में बाहर गया था. जब वह रात को अपनी गुफा में लौट रहा था, तो उसने गुफा के बाहर शेर के पंजों के निशान देखे. यह देखकर वह सतर्क हो गया. उसने जब ध्यान से निशानों को देखा, तो उसे समझ आया कि पंजे के निशान गुफा के अंदर जाने के हैं, लेकिन बाहर आने के नहीं हैं. अब उसे इस बात का विश्वास हो गया कि शेर गुफा के अंदर ही बैठा हुआ है.

फिर भी इस बात की पुष्टि करने के लिए सियार ने एक तरकीब निकाली. उसने गुफा के बाहर से ही आवाज लगाई, “अरी ओ गुफा! क्या बात है, आज तुमने मुझे आवाज नहीं लगाई. रोज तुम पुकारकर बुलाती हो, लेकिन आज बड़ी चुप हो. ऐसा क्या हुआ है?”

अंदर बैठे शेर ने सोचा, “हो सकता है यह गुफा रोज आवाज लगाकर इस सियार को बुलाती हो, लेकिन आज मेरे वजह से बोल नहीं रही है. कोई बात नहीं, आज मैं ही इसे पुकारता हूं.” यह सोचकर शेर ने जोर से आवाज लगाई, “आ जाओ मेरे प्रिय मित्र सियार. अंदर आ जाओ.”

इस आवाज को सुनते ही सियार को पता चल गया कि शेर अंदर ही बैठा है. वो तेजी से अपनी जान बचाकर वहां से भाग गया.

सावन

रचनाकार- शशिकांत कौशिक

सावन म गिरे पानी
घुमर घुमर के.
गर्मी ह घलो मिटागे
पूरा बछर के.
एति पानी झरझर-झरझर.
ओति हवा फरफर फरफर.
लबा-लब होगे गली-खोर
गाँव शहर के.

लइका मन कागज के
डोंगा बना के.
खेलत हे गली-गली म
टोली सजा के.
संगी-साथी पानी डारय
पसर भर-भर के.

नाँगर धरे किसान
चलय छाती ल तान.
कनिहा म बाँधे के पंछा
बइला संग बधे मितान.
खेत म गूँजय अवाज
तता-अर्र के.



अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



वैश्विक स्तर पर विगत एक-दो दशक से जिस तरह संगठित अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है इसे गंभीरता से रेखांकित करना समय की मांग है. संगठित अपराधों को अगर हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो जांच एजेंसियों द्वारा आजकल अपराध की अन्तर्राष्ट्रीय एंगल से जांच की थ्योरी भी अपनाई जाती है जिस तरह से वर्तमान में सिद्धू मूसेवाला केस, रूस-यूक्रेन मानवीय अधिकार हनन अपराध चर्चा में आया था क्योंकि उसने घोषणा की थी कि वह यूक्रेन में रूस द्वारा किए गए संभावित युद्ध अपराध की जांच शुरू करेगा, युद्ध अपराध के लिए विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय मानक मौजूद हैं, सहित अनेक केसों के तार विदेशों तक जुड़े हुए हैं. एक आपराधिक संगठन को गिरोह, माफिया, सिंडीकेट, अंडरवर्ल्ड या गैंगलैंड भी कहा जा सकता है, जिसमें अनेक अपराध जैसे सफेदपोश अपराध, वित्तीय अपराध, राजनीतिक अपराध, युद्ध अपराध सहित अनेक परिभाषित अपराधों को शामिल किया जा सकता है जो अंतरराष्ट्रीय कनेक्टेड होते हैं इसीलिए आज हम ऐसे अपराधों और न्याय पर चर्चा करेंगे जो अंतरराष्ट्रीय श्रेणी में आते हैं उनके पीड़ितों को न्याय दिलाने, दुनिया भर में हो रहे गंभीर अपराधों पर रोक लगाने विश्व को अंतर्राष्ट्रीय अपराधों से सचेत रहने के प्रति जागरूक करने के संबंध में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उपलब्ध जानकारी के आधार पर अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस 17 जुलाई 2022 के उपलक्ष्य में चर्चा करेंगे.

आज के लोकतांत्रिक युग में पारंपरिक अर्थ में राजा नहीं रहे. उनका स्थान शासकवर्ग में ले लिया है. एक से अधिक व्यक्तियों का समूह राजा का स्थान ले चुका है. सिद्धांततः राजा के अधिकार उन्हें मिल चुके हैं, और राजा के कर्तव्यों का निर्वाह भी उन्हीं के जिम्मे है. अधिकारों के मामले में तो वे काफी आगे हैं, किंतु दायित्वों के क्षेत्र में उनका कार्य चिंताजनक है. उन्होंने दण्ड की प्रक्रिया को पेचीदा, समयासाध्य, अपराधी के प्रति नरमी वाला बना दिया है, इसलिए दिन प्रतिदिन अपराध बढ़ रहे हैं.

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः
दण्डस्य हि भयात्सर्वं जगद्भोगाय कल्पते.

(सर्वः दण्डजितः लोकः दुर्लभः हि शुचिः नरः दण्डस्य हि भयात् सर्वम् जगद् भोगाय कल्पते.)

भावार्थः यह संसार दण्ड के द्वारा ही जीते जाने योग्य है, अर्थात् दण्ड के द्वारा ही इसे नियंत्रण में रखा जा सकता है. ऐसा व्यक्ति दुर्लभ है जो स्वभाव से ही साफ सुथरा एवं सच्चरित्र हो, न कि दण्ड के भय से. दण्ड के भय से ही वह व्यवस्था बन पाती है जिसमें लोग अपनी संपदा का भोग कर पाते हैं.

संयुक्त राष्ट्र से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का मुख्यालय द हेग में है. इस न्यायालय में 6 भाषाओं (अंग्रेजी, फ्रेंच, रसियन, स्पेनिश, अरेबिक, चाइनीज) में सुनवाई होती है, लेकिन काम अंग्रेजी और फ्रेंच में ही होता है. इसके सदस्य देशों की संख्या 123 है. 17 जुलाई 1998 को इसकी स्थापना हुई थी, इसने 1 जुलाई 2002 से कार्य करना प्रारंभ कर दिया.

अपराध पर लगाम लगाने के लिए न्यायालय की जरूरत पड़ती है. इसी को ध्यान में रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना हुई थी.

प्रतिवर्ष 17 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस मनाया जाता है. इसे आमतौर पर अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्याय दिवस भी कहा जाता है. इसी दिन अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय की स्थापना हुई थी. इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य विश्व को अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के प्रति जागरूक करना है.

अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय एक स्थाई और स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक ऑर्गेनाइजेशन है, जो अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकारों के गंभीर उल्लंघन के आरोपियों को दंडित करने में सक्षम है. जिसमें नरसंहार, युद्ध और मानवता के खिलाफ अपराध शामिल है. अंतर्राष्ट्रीय अपराधिक न्यायालय की स्थापना तब हुई जब, राज्यों ने रोम में एक कानून को अपनाया इस की प्रतिमाको अंतर्राष्ट्रीय अपराधिक न्यायालय के संविधि के रूप में जाना जाता है. आईसीसी राष्ट्रीय अदालतों की जगह नहीं लेता है. लेकिन यह तब उपलब्ध होता है जब कोई देश जांच करने में सक्षम नहीं होता और अपराधियों पर यह मुकदमा चला सकता है.

यह दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि न्याय का समर्थन करने वाले और पीड़ितों के अधिकार को बढ़ावा देने के लिए लोगों के बीच जागरूकता और एकजुट करना बहुत आवश्यक है. यह दुनिया भर के लोगों को महत्वपूर्ण और गंभीर मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करता है. यह लोगों को कई अपराधों से भी बचाता है और उन लोगों को यह चेतावनी देता है जो राष्ट्र की शांति सुरक्षा और भलाई को खतरे में डालते हैं, उनके ऊपर अंतर्राष्ट्रीय न्याय काम करता है. इसलिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस हर साल 17 जुलाई

को अंतरराष्ट्रीय अपराधिक न्यायालय के महत्व को बताने और दुनिया भर में हो रहे गंभीर अपराधों को रोक लगाने एवं ध्यान देने के लिए मनाया जाता है.

बातअगर हम अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को अंतिम उपाय मानने की करें तो, अंतिम उपाय की अदालत के रूप में सेवा करने के इरादे से, आईसीसी मौजूदा राष्ट्रीय न्यायिक प्रणालियों का पूरक है और अपने अधिकार क्षेत्र का प्रयोग तभी कर सकता है जब राष्ट्रीय अदालतें अनिच्छुक हों या अपराधियों पर मुकदमा चलाने में असमर्थ हों. इसमें सार्वभौमिक क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र का अभाव है और यह केवल सदस्य राज्यों के भीतर किए गए अपराधों, सदस्य राज्यों के नागरिकों द्वारा किए गए अपराधों, या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा न्यायालय को संदर्भित स्थितियों में अपराधों की जांच और मुकदमा चला सकता है.

आओ! चलें स्कूल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



गोपी, गौरी, केशव, मोहन
आओ! चलो, चलें स्कूल.

कलम, पेंसिल, रबर, पुस्तकें,
जल्दी रख लें बस्ते में,
ध्यान लगाएँ, आ जाएगा
पढ़ना-लिखना सस्ते में,

बात पते की, गाँठ बाँध लें
शिक्षा है जीवन का मूल.

केवल ज्ञान दीप ऐसा है,
जो झंझावातों में जलता,
दुःख में भले छोड़ दें साथी
पुस्तक - ज्ञान साथ है चलता,

साक्षरता का पौधा रोपें
देगा जीवनभर फल - फूल.

एक से सौ तक गिनती सीखें
अ से ज्ञ तक स्वयं लिखें,
जोर - जोर से कविता गाएँ
स्वच्छ - स्वस्थ होशियार दिखें,

खाली समय पतंग उड़ाएँ
बड़ों की सीख न जाना भूल.
आओ, चलो, चलें स्कूल.

संघर्ष

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



समय नहीं है अब सोने का, उठकर आगे आना है.
संघर्षों से लड़ कर हमको, जीवन सफल बनाना है.

राह हजारों होते हैं जी, जो हमको भटकाते हैं.
पाँव पकड़ कर पीछे खींचे, समझ नहीं हम पाते हैं.
बहरे मेंढक बन कर हमको, चोटी में चढ़ जाना है.
संघर्षों से लड़ कर हमको, जीवन सफल बनाना है.

दुनिया वाले कहते सारे, तुम से ना हो पायेगा.
राह कठिन है देखो आगे, दलदल में फँस जायेगा.
कहते हैं तो कहने देना, कर के हमें दिखाना है.
संघर्षों से लड़ कर हमको, जीवन सफल बनाना है.

लक्ष्य साध कर चलते हैं जो, वही सफल हो पाते हैं.
चुभे पाँव में काँटे फिर भी, दर्द सहन कर जाते हैं.
दृढ़ निश्चय कर आगे बढ़ना, करना नहीं बहाना है.
संघर्षों से लड़ कर हमको, जीवन सफल बनाना है.

मंजिल अपनी मिल जाती है, मात पिता खुश होते हैं.
देख सफल अपने बच्चों को, नींद चैन की सोते हैं.
यही रीत है दुनिया की तो, हँसना और हँसाना हैं.
संघर्षों से लड़ कर हमको, जीवन सफल बनाना है.

मेरे घर की दीवालघड़ी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर



मेरे घर के दीवाल पर,
जो दीवाल घड़ी है,
वो उम्र में मुझसे,
बहुत बड़ी है.

ममता मयी सन्देश देकर,
मुझे रोज सुलाती है,
उसे मेरा फिक्र रहता है,
सुबह जल्दी उठाती है.

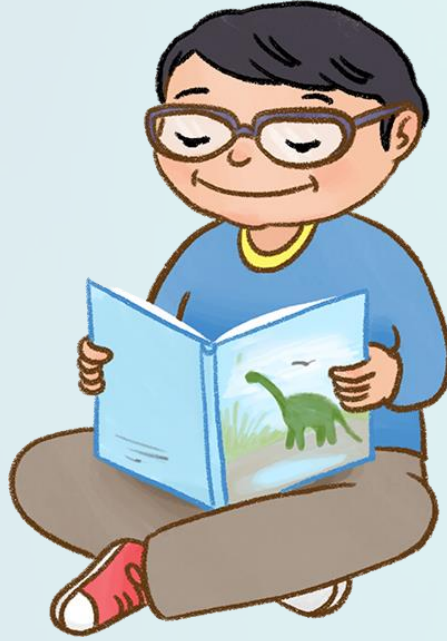
जी हाँ, उसके रहते, मुझे
न किसी काम में लेट होता है,
मेरे लिए न कभी भी बंद,
मेरे स्कूल का गेट होता है.

पूरा-पूरा उपयोग,
मेरे दिन का हर पल होता है,
उसके ही कारण मेरा हर काम
सहज व सफल होता है.

मेरी दिनचर्या में न
किसी प्रकार की हड़बड़ी है.
मेरे घर के दीवाल पर,
जो दीवाल घड़ी है.

आओ पढ़ें अब मन लगाकर

रचनाकार- अजय कुमार प्रधान



स्कूल खुले, चेहरे खिले,
कितने दोस्त अपने मिले.
पिछले साल, हम कितने अधुरे
कक्षा पाठ अभ्यास भी बिखरे
सजे संवारे, अपने स्कूल को,
खिला दें हम, शिक्षा के फूल को.
रंग-बिरंगे सपनों के
नए-नए उपवन लगाकर.
आओ पढ़ें अब मन लगाकर.

बंद कर ऑनलाइन में मोबाइल,
बस, ऑटो, रिक्शा और साइकिल,
सरपट दौड़ें स्कूल ड्रेस लगाकर,
पालक हमारे पढ़ाते
कितना धन लगाकर.
आओ पढ़ें अब मन लगाकर.

खुश हैं बंटी, सुनकर घंटी,
मुन्नी भी सबको बुलाई है.
कापी, किताब, बैग और टिफिन,
लेकर आया जुलाई है.
होकर सब विषय में दक्ष,
साफ सजाकर रखें कक्ष.
सच्ची लगन और अनुशासन से
हों सफल अपना जीवन लगाकर,
खेलें कूदें कला भी सीखें,
योग व्यायाम में भी तन लगाकर,
आओ पढ़ें अब मन लगाकर.

कहीं आपका बच्चा भी बुलिंग (bullying) का शिकार तो नहीं

रचनाकार- पंकी सिंघल, दिल्ली



कहावत है कि सदियों से ताकतवर, कमजोर को दबाता आया है। यह कहावत सृष्टि के प्रत्येक जीव पर लागू होती है। हमें अपने आसपास भी अक्सर दिखाई देता है कि जो व्यक्ति स्वयं को अक्षम महसूस करते हैं उन्हें उनसे सक्षम और मजबूत व्यक्ति अक्सर दबाते हैं और उनकी अक्षमता का फायदा उठाते हुए अपनी सक्षमता का रौब जमाते हैं। मनुष्य और अन्य जीव जंतुओं पर भी यह समान रूप से लागू होता है। यह चलता आया है कि कमजोर सदैव ताकतवर के सामने दबते आए हैं। अपनी कमजोरी के बोझ तले दबे हुए व्यक्ति अपने से अधिक ताकतवर और सशक्त व्यक्ति की बातें मानने के लिए स्वयं को मजबूर महसूस करते हैं। उन्हें चाहे अनचाहे उनके सामने झुकना होता है।

उपरोक्त स्थिति को अंग्रेजी में बुलिंग कहा जाता है। बुलिंग ऐसी स्थिति है जिसमें ताकतवर अपने से कमजोर को दबाता है, वहीं दूसरी ओर कमजोर व्यक्ति अपने से अधिक मजबूत लोगों के सामने झुकते हैं और यदि ऐसा नहीं होता है तो कमजोर व्यक्ति के लिए मुश्किलें खड़ी होने लगती हैं जिससे वे तनाव की स्थिति में आ जाते हैं।

बुलिंग कई प्रकार की हो सकती है जिसका शिकार न केवल बच्चे अपितु वयस्क लोग (विशेषतः महिलाएँ) भी हो जाते हैं। सोशल मीडिया के इस दौर में बुलिंग होना आम हो गया है। गली मोहल्ले, ऑफिस या स्कूल में इस प्रकार की घटनाएँ अक्सर घटित होती रहती हैं।

इस आलेख में हम बच्चों से संबंधित बुलिंग के बारे में बात करेंगे। हम में से अधिकतर लोग बुलीइंग से भली भाँति परिचित हैं, किंतु कभी-कभी ऐसा होता है कि सब कुछ जानने के पश्चात भी हम स्थिति से अवगत नहीं हो पाते और समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। बच्चों के संदर्भ में बात की जाए तो अक्सर हमारे बच्चे स्कूल, कोचिंग एकेडमी, या ट्यूशन सेंटर में इसका शिकार होते हैं और डर के

कारण बच्चे अपनी बात आसानी से किसी से कह भी नहीं पाते. ऐसा होने पर समस्याएँ बढ़ने लगती हैं और कभी-कभी उनका परिणाम बहुत ही घातक होता है . विद्यालय में अक्सर सीनियर या ताकतवर बच्चे छोटी कक्षाओं के बच्चों को डराते-धमकाते हैं. कमजोर और जूनियर्स अक्सर बुलिंग का शिकार होते हैं , उनके बड़े उनको दबाते रहते हैं और वे चाहकर भी उनके खिलाफ कुछ नहीं कर पाते हैं .ऐसी स्थिति में वे खुद को और अधिक बेबस और कमजोर महसूस करते हैं. अपनी इसी बेबसी के चलते वे शर्मिदा भी होते हैं जिसकी वजह से वे अपनी समस्या किसी के साथ साझा नहीं कर पाते. यहाँ तक कि वे माता-पिता से भी अपने मन की बात नहीं कर पाते क्योंकि उनके दिल में डर बैठ चुका होता है और उस डर के कारण ही वे सदैव, असुरक्षित और सहमे सहमे से रहते हैं.

सोशल मीडिया के इस युग में बुलिंग की समस्या भयंकर रूप लेती जा रही है, जिस पर लगाम कसी जानी अति आवश्यक है. बुलिंग इस कदर बच्चों को परेशान कर डालती है कि बच्चे अपना आत्मसम्मान खो बैठते हैं और कभी-कभी तो वे अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लेते हैं. अपने मन की कमजोरी के चलते वे किसी के समक्ष स्थिति को स्पष्ट नहीं कर पाते और असमंजस का शिकार होने लगते हैं असमंजस की इस स्थिति का सामना जब वे नहीं कर पाते तो उनके कदम गलत दिशा में उठने लगते हैं.माता-पिता के प्रति उनका विश्वास खत्म होने लगता है.

गली मोहल्ले या पार्क में भी अक्सर इसी प्रकार की स्थितियाँ देखने मिल जाती है. बुलिंग का उम्र से कोई लेना देना नहीं होता छोटे से छोटे बच्चे से लेकर बड़ी उम्र के लोगों तक यह स्थिति देखने को मिल सकती है. अक्सर बड़े बुजुर्ग भी बुलिंग का शिकार होते हैं और अपनी सहायता के लिए वे किसी के पास जाने में भी संकोच का अनुभव करते हैं जिसकी वजह से स्थिति और अनियंत्रित हो जाती है. महिलाएँ भी बुलिंग से बची नहीं हैं, महिलाओं को अक्सर सोशल मीडिया पर बुलिंग का शिकार होते देखा जाता है .प्रतिदिन समाचार पत्र- पत्रिकाओं में महिलाओं की बुलिंग की खबरें आती रहती हैं. बुलिंग के फलस्वरूप महिलाएँ अवसाद में चली जाती हैं अथवा आत्महत्या का शिकार होने लगती हैं. बुलिंग का शिकार होने वाले लोगों का आंकड़ा दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है .पिछले कुछ वर्षों में बुलिंग संबंधी समस्याएँ पहले से बढ़ी ही हैं.

बुलिंग की समस्या पर नियंत्रण के लिए सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता की होती है. माता-पिता को अपने बच्चों पर विश्वास कायम रखना चाहिए और अपने बच्चों को भली प्रकार समझाना चाहिए कि किसी भी प्रकार की अनहोनी की स्थिति में वे सबसे पहले अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग करेंगे, गलत के समक्ष नहीं झुकेंगे और सदैव सही का साथ देते हुए अपने मन की हर बात उनसे साझा करेंगे, कभी हिचकिचाएँगे नहीं.

बच्चों के मन में यह भाव उत्पन्न करना चाहिए कि माता-पिता सदैव उनके साथ हैं. वे उन्हें किसी भी मुश्किल स्थिति में नहीं रहने देंगे और यदि कभी कोई समस्या आएगी तो वे बाहर निकाल लेंगे. इतना

विश्वास जब बच्चों का अपने माता-पिता के प्रति होने लगेगा तो निसंदेह बुलिंग जैसी समस्याएँ भी हमारे बच्चों का कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगी, बच्चे खुद को पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वासी और सशक्त महसूस करने लगेगे और विभिन्न स्थितियों में भी स्वयं को ताकवर महसूस कर समक्ष खड़ी स्थितियों का सामना डट कर कर पाएँगे.

यह सत्य है कि आज के भागदौड़ भरे समय में किसी के पास समय नहीं है किंतु हमें अपने बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताने की कोशिश करनी चाहिए, उनके मन की बात जानने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें यह एहसास करवाना चाहिए कि आप हर पल, हर क्षण, हर प्रकार की स्थिति में उनके साथ हैं. गलती होने की स्थिति में भी आप उन्हें भली प्रकार समझाएँगे और उनका साथ देंगे न कि उनकी छोटी-छोटी गलतियों पर उन्हें डांट फटकार लगाएँगे. माता-पिता का फर्ज है कि वे अपने बच्चों से खुलकर बात करें, उन्हें बुलिंग का अर्थ समझाएँ और सदैव सतर्क रहने के लिए कहें. बच्चों को समझाया जाए कि गलत के प्रति वे अपनी आवाज बुलंद करें, अन्याय को सहन ना करें और मजबूती से ना कहने की आदत खुद में विकसित करें. बच्चों को साइबर सिक्योरिटी संबंधित नियमों और प्रावधानों से अवगत कराएं ताकि किसी अवांछित स्थिति और प्रतिकूल समय में यदि वे आप तक न भी पहुंच पाएं तो वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकें.

एक बार यदि सिर्फ एक बार आपके बच्चों के मन में आपके प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया तो यकीन मानिए वे कभी भी बुलिंग जैसी समस्याओं का शिकार नहीं होंगे और यदि होंगे भी तो वे उस स्थिति का निपटारा स्वयं करने में सशक्तता का अनुभव करेंगे, और अपने मन की हर छोटी बड़ी बात भी आपसे जरूर साझा करेंगे और फिर इस प्रकार की समस्याएं खुद-ब-खुद दूर होकर खत्म होने लगेंगी.

बच्चे हमारे हैं तो निसंदेह हम सभी की जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने बच्चों को सचेत बनाएं, सावधान बनाएं और जागरूक बनाएं ताकि कोई भी उन्हें कमजोर समझ कर स्थिति का फायदा उठाने की सोच तक ना सके. अपनी इस जिम्मेदारी का पूर्ण ईमानदारी एवं दृढ़ता से निर्वाह करें और अपने बच्चों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ एक स्वस्थ और सुरक्षित समाज के निर्माण की नींव को मजबूत करने में भी अपना यथासंभव योगदान देने का प्रयास करें. याद रहे, सुरक्षित समाज ही एक स्वस्थ समाज की कल्पना को साकार कर सकता है.

जनगणमन की धुन के सर्जक स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन रामसिंह

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

भारत को अंग्रेजी शासन के चंगुल से मुक्त कराने के लिए असंख्य वीर सपूतों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है, ऐसे ही एक सपूत हैं कैप्टन रामसिंह ठाकुर जो अल्पायु में ही अंग्रेजों की गोरखा राइफल्स में सम्मिलित हो गए थे.

अखिल भारतीय इतिहास लेखन योजना के संस्थापक-अध्यक्ष ठाकुर रामसिंह का जन्म 15 अगस्त 1914 को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के समी खनियारा गाँव में हुआ था. उनके पिता का नाम ठाकुर भायसिंह और माता का नाम निहातु देवी था. ठाकुर रामसिंह पाँच भाई-बहन थे. उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के बाद सन 1935 में राजपूत हाईस्कूल भारेवाहा से प्रथम श्रेणी में मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1938 में डी ए वी कॉलेज होशियारपुर पंजाब से इंटरमीडिएट तथा 1940 में सनातन धर्म कॉलेज लाहौर से बीए तथा 1942 में लाहौर विश्वविद्यालय से एम ए (इतिहास) की परीक्षा उत्तीर्ण की. कॉलेज में वे हॉकी टीम के प्रमुख रहे. हॉकी स्टिक लगाने से उनकी एक आँख क्षतिग्रस्त हो गई थी. सन 1939 में सूबेदार शमशेर सिंह की पुत्री प्रेमकली से उनका विवाह हुआ तथा उनके तीन पुत्र प्रकाश, रमेश और उदय शंकर हुए.



एक दिसंबर 1942 को नेता जी सुभाष चंद्र बोस के अधीन आजाद हिंद फौज (आई एन ए) का गठन हुआ. जापानी सैनिकों द्वारा कैद किए गए 55000 सैनिकों में से 12000 सैनिक स्वेच्छा से आजाद हिंद फौज में सम्मिलित हो गए. उनमें रामसिंह भी एक थे. उन्हें संगीत में प्रवीणता प्राप्त थी, इसलिए उन्हें आजाद हिंद फौज बैण्ड में कप्तान बनाया गया.

उन्हें संगीत से लगाव बचपन से ही था और वे जानवरों के सींग से बने वाद्ययंत्र बजाया करते थे. उन्होंने जापान की सेना में प्रसिद्ध ब्रिटिश संगीतकार हडसन एंड नेविस से ब्रास बैण्ड, स्ट्रिंग बैण्ड और डांस बैण्ड का भी प्रशिक्षण लिया था.

21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने आजाद हिंद फौज सरकार के 'कौमी तराना' का संगीत तैयार किया था जिसके शब्द थे - शुभ सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य है जागा. यह गीत रवीन्द्रनाथ टैगोर के 'जन गण मन' का काव्य भावानुवाद था. इसको कुछ संशोधनों के साथ नेताजी ने कुछ सलाहकारों के साथ स्वयं लिखा था और इसकी धुन रामसिंह ने बनाई थी. कौमी तराना नाम से यह गीत आजाद हिंद फौज का राष्ट्रीय गीत बना. इस गीत की ही धुन का बाद में राष्ट्रगान की धुन के रूप में प्रयोग किया गया. इस प्रकार हमारे राष्ट्रगान की धुन के सृजन का श्रेय कैप्टन रामसिंह को ही जाता है. वे प्रख्यात

स्वतंत्रता सेनानी के साथ कुशल संगीतकार और सक्षम गीतकार भी थे. उनके संगीत प्रेम को देखकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें एक वायलिन भेंट किया था जो उनको बहुत प्रिय रहा.

राष्ट्रगान की धुन के अतिरिक्त कैप्टन रामसिंह ने 'कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा. ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा', 'भारत के जां निसारों, हिलमिल के गीत गाओ,' 'हिंदुस्तान हमारा है,' 'शीश झुकाकर भारतमाता तुझको करूँ प्रणाम', 'सबसे ऊँचा दुनिया में, प्यारा तिरंगा झंडा हमारा' जैसे अनेक जोशीले और देशभक्तिपूर्ण गीत उन्होंने ही लिखे और उनकी धुनें बनायीं.

20 जून 1946 को बाल्मीकि भवन में महात्मा गाँधी के समक्ष शुभ सुख चैन की बरसा बरसे 'गीत गाकर उन्होंने उन्हें भी अपना प्रशंसक बना लिया. प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने प्रथम बार 16 अगस्त 1947 को लाल किले की प्राचीर पर तिरंगा फहराया था. इस समारोह में कैप्टन रामसिंह को आर्मी बैण्ड के साथ वायलिन पर राष्ट्रगान की धुन प्रस्तुत करने बुलाया गया था.

अगस्त 1948 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के अनुरोध पर वे उत्तर प्रदेश पी ए सी सब इंस्पेक्टर के रूप में लखनऊ आए और पी ए सी में बैण्ड मास्टर बन गए. लखनऊ में ही 15 अप्रैल 2002 को 87 वर्ष की आयु में इस महान देशभक्त संगीतकार का निधन हो गया.

कैप्टन रामसिंह ने देशभक्ति से परिपूर्ण 70 से अधिक गीतों को संगीतबद्ध किया जिसमें से अधिकांश के रचनाकार वे स्वयं थे. उन्हें कई पुरस्कार मिले. वे देश की स्वतंत्रता के बाद ऑल इंडिया रेडियो की शान रहे.

कैप्टन रामसिंह के साथ एक विडंबना रही कि उन्हें वह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ, जिसके वे पात्र थे. उनका पैतृक गांव में उनका घर जर्जर अवस्था में अब भी है जिसको उनके संबंधी संभाल रहे हैं. महान स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रगान की धुन के सर्जक का देश में कहीं एक भी स्मारक नहीं है. आज हम देश की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, साथ ही इस दिवस को ही महान देशभक्त कैप्टन रामसिंह की भी जन्म जयंती का सुयोग पड़ता है तो क्या उस वीर सपूत को मरणोपरांत मान - सम्मान नहीं दिया जा सकता है. उनका एक स्मारक तो होना ही चाहिए जिस पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए जा सकें. परम तत्त्व में विलीन विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी को शत- शत नमन.

मच्छर

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव, मध्य प्रदेश



भनभन करते मच्छर मारे,
पापा मैंने ,तीन.
कानों पर वे बजा रहे थे,
राग भैरवी बीन.

पहले सोचा उन्हें भगा दूँ,
न लूँ उनकी जान.
लेकिन वे सब तुले हुए थे,
खाने मेरे कान.

चीनी रेकिट से तीनों का
कर दिया काम तमाम
अब न रहे मच्छर और
न रही उनकी बीन.

राखी भिजवा देना

रचनाकार- अंकुर सिंह



बहन, राखी भिजवा देना,
अबकी मैं ना आ पाऊंगा.
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा.

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
तुम याद ये रख लेना.
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भिजवा देना.

ये महंगाई है सबपे भारी,
फिर भी राखी भिजवाना.
गर पूछे भांजी-भांजा तो,
उन्हें मामा का प्यार कहना.

राखी पर मेरे ना आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना.
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भिजवा देना.

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल.
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल.

राह देख अबकी तुम मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना.
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,
भेज राखी तुम फर्ज निभाना.

पंद्रह अगस्त

रचनाकार- अंकुर सिंह



पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार.
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार.

आजादी के साथ देश ने,
बंटवारे का दर्द भी झेला.
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला.

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी.
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी.

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी.
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी.

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना.
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना .

उन्नीस सौ उन्तीस में
पूर्ण स्वराज्य की मांग किया.
अगस्त बयालीस में गांधी ने,
भारत-छोड़ो' का एलान किया.

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया.
नमन वीरों के कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया.

विनम्रता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



वर्तमान मानवीय जीवन शैली में

आधुनिकता का भाव कूट-कूट कर भरा है. इस वैज्ञानिक युग में पुरानी परंपराओं, पौराणिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों का स्थान वैज्ञानिक सोच ने ग्रहण कर लिया है. आज यदि कोई पुराने रीति-रिवाजों, मान्यताओं, पर बात करे तो उसे पुरानी सोच, दकियानूसी कह कर हँसी का पात्र बना दिया जाता है.

भारत में भी ऐसी सोच स्थापित होती जा रही है.

भारतीय मानवीय गुण विश्वप्रसिद्ध हैं. मानवीय गुणों की श्रेष्ठता में भारत प्रथम रैंक में आएगा ऐसा मेरा मानना है. मानवीय गुणों में अनेक ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, विचारात्मक, संस्कार, आत्मिक गुण, शामिल होते हैं. हम आज विनम्रता पर चर्चा करेंगे. मेरा मानना है कि भारतीय मिट्टी में विनम्रता का गुण कूट-कूट कर भरा है. विनम्रता का गुण जिसने ग्रहण किया उसमें आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, कर्मवाद, विश्वबंधुत्व उच्च संस्कार, आशावादिता, अतिथि देवो भव वाले विचार अपने आप समाहित हो जाते हैं.

भारत में जन्मा प्रवासी भारतीय या भारतीय मूल का व्यक्ति आज विश्व के कोने-कोने में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराता हुआ मिलेगा. चाहे वह विदेशों में मजदूरी का काम करता हो या किसी देश का सांसद, उद्योगपति, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेशनल हो तो उसे उस देश के प्रशासक प्राथमिकता देंगे क्योंकि वह अपेक्षाकृत अधिक मेहनती, विनम्र, और योग्य है. उसमें मानवीय गुण अपेक्षाकृत अधिक हैं और विनम्रता का भाव अधिक है इसीलिए उसका सम्मान होता है.

विनम्रता के कारण मानव किसी को भी जल्दी संप्रेषण द्वारा आसानी से संतुष्ट कर सकता है. सभी को अपना बना लेता है, समाज में श्रेष्ठस्थान पाता है. विनम्रता एक ऐसी खान है जिसमें सहनशीलता, दया,

परोपकार, प्रसन्नता, प्यार, वाणी, सुव्यवहार, स्वभाव, आचरण, रूपी अनेक गुण समाहित होते हैं, जिससे किसी भी परिस्थिति में जीतना आसान हो जाता है. इसलिए कहा गया है कि मनुष्य का बहुमूल्य आभूषण उसका विनम्रता का गुण है.

व्यक्ति के व्यक्तित्व को जानने की पहली सीढ़ी उसकी विनम्रता होती है. तभी वह अन्य मानवीय गुणों को प्राप्त करेगा. आधुनिक युग में मानवोचित गुणों के स्थान पर धनबल का महत्व बढ़ रहा है, परंतु भारतीय संस्कार अपना प्रभाव दिखाकर भारत में विनम्रता के विस्तार की दिशा में अग्रसर है, क्योंकि व्यक्ति की परवरिश में परिवार के संस्कार और देश की संस्कृति का असर तो होता ही है. फलस्वरूप व्यवहार में विनम्रता का गुण पनपता है, जिसका श्रेय भारत की धरोहर को जाता है. विनम्रता एक ऐसा मानवीय गुण है जो धन बल से खरीदा नहीं जा सकता. बड़ी-बड़ी समस्याओं, विपत्तियों, विपरीत परिस्थितियों, दुखों, का निवारण विनम्रता रूपी अस्त्र से किया जा सकता है और अंतिम जीत विनम्रता की ही होती है. विनम्रता गुस्से, कटुता की काट है. क्योंकि विनम्रता का पलड़ा अहंकार, गुस्से, और ज्ञान के पलड़े से भारी होता है. कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा अधिकारी, मंत्री क्यों ना हो विनम्रता के बिना उसका यह अस्तित्व व्यर्थ है, उसके सामने एक निरीह, अनपढ़, और विनम्रता से ओतप्रोत मानव अधिक सफल माना जाएगा और अंतिम जीत विनम्र व्यक्ति की होगी. जीवन तनावमुक्त, प्रेम, प्रसन्नता, सौहार्द, सुखशांति, रिश्तो में माधुर्य प्राप्त करना है तो इस विनम्र भाव को अपनाना होगा, क्योंकि जीवन में कुछ करने के लिए विनम्र होना जरूरी है जैसे एक बीज को भी जमीन के नीचे दबना पड़ता है उसके बाद ही वह अंकुरित होकर विशालकाय पेड़ का स्वरूप लेता है. इसलिए मानवीय गुणों में विनम्रता मानव जीवन का बहुमूल्य श्रृंगार और श्रेष्ठ गुण है.

विनम्रता मानव आचरण का,
एक भाव है.
जग को ऐसे मानव,
से लगाव है.
भारत का नाम रोशन,
करने का भाव है.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

व्यर्थ बैठने से मेहनत भली



एक निर्धन व्यक्ति के पास एक बंदर था जिसके खेल दिखाकर वह अपनी आजीविका चलाता था. बंदर विभिन्न प्रकार की कलाएँ दिखाता और लोग खुश होकर पैसे फेंकते. उसका मालिक उन पैसों से अपनी जीविका चलाता.

एक दिन उसका मालिक उसे चिड़ियाघर लेकर गया. वहाँ उसके बंदर ने पिंजड़े में कैद बंदर को देखा. बच्चे उसे खाने के लिए केले दे रहे थे. पिंजड़े के बंदर को देखकर वह बंदर सोचने लगा, 'ये कितना खुशकिस्मत है.'

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

और मैं हूँ जो मालिक के लिए दिन भर खेल कूद, करतब दिखाकर उसके लिए कुछ पैसे कमा कर देता हूँ. जिसमें मालिक और मुझे पेट भर भोजन ठीक से नहीं मिलता. ये पिंजड़े का बंदर इतना भाग्यवान है जो बिना किसी परिश्रम के ही विभिन्न प्रकार की खाद्य पदार्थ खाने को मिल जाता है यह सोचते हुए मालिक के साथ घर चला जाता है. जैसे ही मालिक भोजन करके सोता है, तब उस रात वह बंदर भी भागकर चिड़िया घर पर पहुँच जाता है.

उसे कुछ दिन मुफ्त का खाना और आराम बहुत अच्छा लगा पर थोड़ी ही दिनों में बंदर का मन भर गया. उसे पिंजड़े में बंद रहना कारावास जैसा लगने लग गया, शरीर शिथिल हो गया. उसे अपनी स्वतंत्रता

की याद आने लगी.वह अपनी आजादी वापस चाहता था जैसे ही उसे समय मिला वह फिर चिड़िया घर से भागकर पुनः वापस अपने मालिक के पास पहुँच गया. उसे मालूम हो गया की रोटी कमाना कठिन होता है किंतु बंधक बनकर पिंजड़े में कैद रहना उससे भी कठिन है.व्यर्थ बैठने की अपेक्षा मेहनत करके ही अपने भाग्य का निर्माण किया जा सकता है.

बच्चों इस कहानी में देखा कि मुफ्त की चीजें लोगों को निकम्मी बना देती है. जिंदगी तो अपने दम पर जिया जाता है सत्य मार्ग पर चलते हुए अपने कर्म करते रहे,यही मनुष्य की महानता है.

अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा पूरी की गई कहानी

पिंजरे के बंदर को देखकर वह बंदर सोचने लगा यह कितना खुश किस्मत है इन्हें कोई मेहनत करना नहीं पड़ता लोग उनके पास आकर ही उन्हें खाने पीने का सामान दे रहे हैं काश मैं भी इस पिंजरे में होता तो मुझे भी रोज लोगों के सामने करतब नहीं दिखाना पड़ता . मैं भी बैठे बैठे ही अपना जीवन व्यतीत करता मुझे कोई मेहनत नहीं करना पड़ता कितना अच्छा होता. वह सोच ही रहा था कि पिंजरे के एक बंदर ने कहा मुझे कोई बाहर निकालो मेरा इस पिंजरे में दम घुट रहा है मैं बाहर निकल कर उछल कूद करना चाहता हूं . यहां मैं खुश नहीं हूं मुझे स्वतंत्रता चाहिए मुझे कोई बाहर निकाल दो यह सुनकर बाहर का बंदर बोला ऐसा तुम क्यों कह रहे हो तुम्हें तो बैठे बैठे ही सारा चीज मिल जा रहा है बाहर आओगे तो कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी मेरी तरह मैं दिन भर मेहनत करता हूं तभी मुझे खाना मिलता है तब पिंजरे का बंदर बोला मेहनत करने से डर नहीं लगता लेकिन पिंजरे में तो दम ही घुट रहा है यहां पर हम अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकते खाली बैठने और गुलामी का जीवन से तो मेहनत करना ही अच्छा है . कम से कम हम स्वतंत्र रूप से तो रह सकते हैं तुम बहुत भाग्यवान हो जो अपनी मेहनत के द्वारा अपना जीवन चला रहे हो दूसरे पर तो निर्भर नहीं हो यह सुनकर बंदर खुश हो गया और दूसरे दिन से वह और अधिक मन लगाकर लोगों को खेल दिखाने लगा अब वह गरीब इंसान और बंदर दोनों कड़ी मेहनत कर अपना जीवन यापन करने लगे दोनों बहुत खुश थे.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

चींटी और टिड्डा



गर्मियों के दिन थे. एक मैदान में एक टिड्डा अपनी ही मस्ती में झूम-झूम कर गाना गा रहा था. तभी उधर से एक चींटी गुजरी. वह एक मक्के का दाना उठाकर अपने घर ले जा रही थी.

टिड्डे ने उसे बुलाया और कहा, “चींटी रानी, चींटी रानी, कहाँ जा रही हो? इतना अच्छा मौसम है... आओ बातें करें... मस्ती करें...”

चींटी ने कहा, “टिड्डे भाई, मैं सर्दियों के लिए भोजन इकट्ठा कर रही हूँ. बहुत काम पड़ा है... मुझे क्षमा कर दो, मैं बैठ नहीं सकती.”

टिड्डे ने फिर कहा, “अरे! सर्दियों की चिंता क्यों करती हो? अभी तो सर्दी आने में बहुत देर है...” पर चींटी मुस्कुराकर चलती रही.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

काजू कतली

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



मीठी मीठी-मीठी रस से भरी,
हम बच्चों को बहुत बहुत भये.
मुंह में डालो तो झट से घुल जाए,
लगती है कितनी प्यारी-प्यारी.
सफेद सफेद सफेद कलर है,
सब मिठाईयों में ये महंगी है.
तीज त्यौहार में इसकी याद आये,
मेहमान नवाजी में बरकत लाए.
इसे देखते ही मुंह में पानी आये,
देखते ही खाने को मन ललचाये.
सब मिठाईयों को पछाड़ दिया,
ऊपर से चांदी का वरक लगाया.
अजब-गजब है इसका आकार,
बूढ़े बच्चे सबको ये बहुत है भाये.
नाम है जिसका काजू कतली.

पोल खोल नही

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



झूठ का डंका बज रहा चारों ओर,
अब सच्चाई का कोई मोल नहीं.

सच बोलने से रूठ जाते हैं रिश्ते,
अब और कोई सच तू बोल नहीं.

तेरी मेहनत को समझ न पाए तेरे.
अपने आपको इतना तोल नहीं,

कितना भी तू जोड़ लें रिश्तों को,
सच्चे रिश्तों का अब रोल नहीं.

कहने को अब अपना रहा नहीं,
रिश्तों में अब तू ज़हर घोल नहीं.

खुद भी कभी देख ले आईन तू,
यों हर किसी की पोल खोल नहीं.

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

भारत की मिट्टी में ही संस्कार हैं, भारत में जिस प्रकार के संस्कार, भाव, आस्था, परोपकार की भावना है, ऐसी हमें विश्व में कहीं और दिखाई नहीं देगी ऐसा मेरा मानना है. भारत की मिट्टी में ही कुछ ऐसी विशेषता है कि यहाँ का वासी स्वभाविक ही इन भावों से ओतप्रोत हो जाता है. यूँ तो संस्कारों की माला में बहुत सारे मणि मोती हैं पर हम आज उसकी एक मणि माता-पिता के सम्मान पर चर्चा करेंगे.



माता-पिता और संतान के बीच एक अनमोल रिश्ता होता है जिससे कोई भी अछूता नहीं है. एक ऐसा रिश्ता जो अपना है, जिसमें कोई धोखा नहीं है, जिसमें स्वार्थ का कोई स्थान नहीं है, जिसमें परायेपन की तो परछाई तक नहीं है. यह एक ऐसा रिश्ता है जो दिल से जुड़ा होता है. भारत में इस रिश्ते का बहुत मान सम्मान है.

संस्कृत में माता-पिता पर श्लोक है कि

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता.

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्..

अर्थात: माता सर्वतीर्थ मयी और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप हैं इसलिए सभी प्रकार से यत्नपूर्वक माता-पिता का पूजन करना चाहिए. जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा सातों द्वीपों से युक्त पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है. माता-पिता अपनी संतान के लिए जो क्लेश सहन करते हैं, उसके बदले पुत्र यदि सौ वर्ष तक माता-पिता की सेवा करे, तब भी वह इनसे उन्नत नहीं हो सकता.

अगर हम पहले की बात करें तो सबसे सटीक उदाहरण हम श्रवणकुमार का दे सकते हैं परंतु समय का चक्र घूमता रहता है समय कैसे बदल जाता है पता नहीं चलता. आज हम पुराने समय के श्रवण कुमार से अच्छा तो फिलहाल कोई उदाहरण नहीं बता सकते, लेकिन आज के परिवेश में श्रवण कुमार तो मुश्किल से मिलेंगे. आज के पुत्र में भी काफी बदलाव आया है, अब पहले वाली बात नहीं रह गयी. एक बच्चे के लिये माता-पिता का होना बहुत महत्वपूर्ण होता है, जितना महत्व एक पौधे को पालने में माली का है, उतनी ही जिम्मेदारी एक संतान को पालने में करनी पड़ती है. वह माली जो पौधे को लकड़ी का सहारा देकर, पानी, खाद आदि से सिंचित करके उस पौधे को वृक्ष बनाता है. उसी प्रकार से माता-

पिता भी नन्हे से बच्चे को अनेक कष्ट झेलते हुए उस बच्चे को युवक बनाते हैं। माता-पिता के अथक प्रयास की बदौलत ही एक बच्चा अपने मार्ग पर चलते हुए एक बड़ा इंसान बनता है। इसीलिये माता-पिता को बच्चों का प्राथमिक विद्यालय कहते हैं। क्योंकि हर बच्चा पैदा होते ही स्कूल नहीं जाता, उसे घर पर पहली सीख माँ और पिताजी ही देते हैं। आज लोग प्यार का मतलब सिर्फ एक लड़के और लड़की के बीच के प्यार को समझते हैं। लोग भूलते जा रहे हैं कि मनुष्य को पहला निस्वार्थ और सच्चा प्यार सिर्फ अपने माता पिता से मिला है। माता-पिता ने हमें जिंदगी देने के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना किया इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसीलिए माता-पिता से हमेशा प्यार करें उनकी सेवा करें, माता-पिता की सेवा करना मतलब ईश्वर को राजी करना। हालांकि इस बदलते परिवेश में हम सभी एक बात महसूस करते हैं कि बेटे की अपेक्षा बेटी का माता-पिता के प्रति भाव, लगाव, आस्था, अधिक होती है और स्वाभाविक रूप से उसके परिवेश में माता-पिता के भी बेटी के प्रति भाव अपेक्षाकृत अधिक होते हैं फिर भी बेटा बेटी दोनों माता-पिता की आंखों के दो तारे होते हैं और दोनों आंखों को समान भाव देना मनुष्य की प्रवृत्ति है अतः हर बेटे बेटी को चाहिए कि अपने माता-पिता का भरपूर सम्मान करें। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, हमने माता-पिता की ऊँगली थाम के चलना सीखा और उनकी मेहनत से पले। आज हम जो कुछ भी हैं हमारे माता-पिता की वजह से हैं। माता-पिता के त्याग और बलिदान का कर्ज हम अपनी जान देकर भी नहीं चुका सकते। इस दुनिया में माँ की ममता का कोई मोल नहीं है और पिता के प्रेम का कोई जोड़ नहीं है। आज हम जब बड़े हो गए हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम अपने माता पिता की सेवा करें, उनसे ऊँची आवाज में बात ना करें, कोई भी काम शुरू करने से पहले उनसे सलाह ले, उनका सम्मान करें और अपने माता-पिता का कभी दिल न दुखाएँ। माता-पिता अपने बच्चों के लिए अपनी हर चीज कुर्बान कर देते हैं। लेकिन आज माता-पिता की अहमियत कम होती जा रही है। जिस बेटे की लाइफ बनाने में माता-पिता की जिंदगी गूजर जाती है आज उसी बेटे के लिए शादी के बाद माँ-बाप पराये हो जाते हैं। वे माता-पिता के त्याग और बलिदान को भूल रहे हैं। इस धरती पर हमारे माता-पिता ही साक्षात् ईश्वर रूपी अंश हैं। माता-पिता की सेवा करना ईश्वर की आराधना का दूसरा नाम है। आज माता-पिता को गंगाजल नहीं, केवल नल के जल की जरूरत है। यदि हम समय पर उनकी प्यास बुझा सकें तो इसी धरती पर स्वर्ग है। जिनके माता-पिता जिंदा हैं वे दुनिया के सबसे अमीर और संपन्न लोग हैं। माता-पिता ईश्वर का दूसरा रूप होते हैं। अगर आपके माता-पिता आपसे खुश हैं तो समझो ईश्वर खुश है। जिस घर में माता-पिता की इज्जत नहीं होती है उस घर में बरकत नहीं होती है। माता-पिता की दुआ आपको मिल गयी तो समझो आपकी जिंदगी संवर गयी, माता-पिता को आखिरी सांस तक खुश रखें और उन्हें हर वो सुख दें जो वो अपनी जिन्दगी में न पा सकें, उनके हर एक सपने को पूरा करें। आज माता-पिता की कद्र उस व्यक्ति से पूछिए जिनके माता-पिता इस दुनिया में नहीं हैं सब के आंसू झलकेंगे और विपरीत अपवाद कुछ ही लोग होंगे।

अर्थव्यवस्था का पहिया बड़ा अनमोल है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



अर्थव्यवस्था का पहिया बड़ा अनमोल है,
साक्ष्य आधारित नियमित अंतराल पर प्राप्त,
आंकड़ों का ही पूर्वानुमान मेल है.
ग़ज़ब की कारीगरी अनमोल मानवीय खेल है.

वैज्ञानिक तरीकों से एकत्रित आंकड़े,
नीति निर्धारण के लिए अनमोल है,
पक्ष विपक्ष के शाब्दिक बाण अस्त्र का आधार,
बचाव का ब्रह्मास्त्र आंकड़ों का सहारा अनमोल है.

ग्राम पंचायत से लेकर संसद तक,
अनमोल बाज़ीगरी का खेल है,
यहां किस्मत हिम्मत बाज़ीगरी नहीं,
बस आंकड़ों का खेल है.

आज रविवार है

रचनाकार- प्रीतम साहू, 'कुशप्रीत'



आज तो रविवार है
खुशियों का त्यौहार है.

कुश, परी, प्रकाश, गीताली
ये सब मेरे यार हैं.

मिलकर खेल खेलेंगे
साथ में झूला झूलेंगे.

मम्मी भी घर पर हैं.
पापा कि भी छुट्टी हैं.

स्कूल नहीं जाना है
घर में दावत खाना है.

मुर्गों का दर्द

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



कुकड़ूँ कूँ आवाजों से हम, सब को सुबह जगाते हैं.
कुछ दिन की जिंदगी हमारी, फिर भी मारे जाते हैं.

मुर्गा मुर्गी सारे चूजे, जाते लेकर हम टोली.
ढूँढ़-ढूँढ़ कर खाते दाने, करते हम मीठी बोली.
सुंदर सा परिवार हमारा, मानव समझ न पाते हैं.
कुछ दिन की जिंदगी हमारी, फिर भी मारे जाते हैं.

रखते हम को कैद करा कर, जाली में भर देते हैं.
दाम हमारा कम ज्यादा कर, मानव हम को लेते हैं.
हमें बताओ गलती यारों, हम तो सुबह जगाते हैं.
कुछ दिन की जिंदगी हमारी, फिर भी मारे जाते हैं.

कमी नहीं है खाने को जी, किसम - किसम पकवाने है.
हरी भरी सी साग सब्जियाँ, इनके भी दीवाने हैं.
फिर भी देखो इंसानो को, नोंच-नोंच कर खाते हैं.
कुछ दिन की जिंदगी हमारी, फिर भी मारे जाते हैं.

पल-पल श्वास कीमती होती, नहीं चैन से सोते हैं.
बीवी बच्चे यारी दोस्ती, तड़प-तड़प कर रोते हैं.
दया दिखाओ कुछ तो भगवन, मानव समझ न पाते हैं.
कुछ दिन की जिंदगी हमारी, फिर भी मारे जाते हैं.

जलवायु परिवर्तन

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सृष्टि ने मानव की रचना करते समय ऐसा अनुमान नहीं लगाया होगा कि बुद्धि की अपार क्षमता का खजाना जिस मानव में डाल रहे हैं, वही प्रकृति के विनाश की ओर बढ़ने का मुख्य कारण बनेगा. आज मानव द्वारा किया जा रहा प्रकृति का अंधाधुंध दोहन संपूर्ण मानव जाति को खतरे में डाल रहा है. जिसके कारण सर्दी में भी गर्मी, गर्मी में बरसात, बरसात में भयंकर आग उगलती गर्मी जैसे परिणाम मानव जाति भुगत रही है! आज कई यूरोपियन देशों, मध्य अमेरिकी देशों में आग उगलती गर्मी का प्रकोप, भूस्खलन का दौर लगातार शुरू है और 2 दिन पूर्व ही नासा ने आग उगलती धरती की सेटेलाइट इमेज जारी की है जिससे दुनिया डरी हुई है.

सामान्य तौर पर ठंडे रहने वाले ब्रिटेन, फ्रांस समेत यूरोप के कई देशों में इन दिनों हीट वेव का कहर जारी है, आलम यह है कि यूरोप के कई देशों में प्रचंड गर्मी का माहौल बना हुआ है. जिसे देखते हुए नासा ने धरती की सेटेलाइट तस्वीर जारी की है, जिसमें दुनिया लाल दिखी है, जिससे देखने के बाद दुनिया के देशों में हडकंप मच गया है. इस बीच फ्रांस ने गर्मी का 100 साल का रिकार्ड तोड़ दिया है, इस वजह से जंगलों में आग लग गई है. भयंकर गर्मी की चपेट में आने से यूरोप और उत्तरी अफ्रीका के कई देशों में तापमान इतना बढ़ गया है कि पुर्तगाल के जंगलों में भीषण आग लग गई. जिससे पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस और मोरक्को में हजारों लोगों को उनके घरों से निकालना पड़ा. फायर ब्रिगेड की टीम आग से निपटने में लगी हुई हैं. पिछले हफ्ते पुर्तगाल के एक जंगल में आग लगने से एक व्यक्ति की मौत हो गई थी और कम से कम 135 लोग घायल हुए थे.

देश के नागरिक सुरक्षा प्राधिकरण के अनुसार, रविवार से आकस्मिक स्थिति लागू हो गई है और लगभग 800 लोगों को उनके घरों से निकाल लिया गया है. दक्षिण-पश्चिम फ्रांस में शुक्रवार को जंगल की आग के बेकाबू होने के कारण सैकड़ों लोगों को उनके घरों से निकाला गया. पिछले मंगलवार से हवाई जहाज

से पानी डालकर जंगल की आग बुझाई जा रही है. 1,000 से अधिक फायर फाइटर्स चिलचिलाती गर्मी, टिंडर-बॉक्स की स्थिति और तेज हवाओं के कारण दो धमाकों से जूझ रहे हैं. यहाँ कई दिनों से आग लगी हुई है. जिससे 4200 हेक्टेयर जंगल जलकर राख हो गए. लगभग एक हजार रहवासियों को वहाँ से निकाला गया. स्पेन के कई हिस्सों में तापमान ने रिकॉर्ड तोड़ दिया है, गुरुवार को पहली बार उत्तर-पश्चिमी शहर ओरेन्से में पारा 44.1 डिग्री पहुँचा. एक्स्ट्रीमादुरा के कुछ हिस्सों में तापमान 45 डिग्री पहुँच चुका है. यहाँ फायरफाइटर्स जंगल की आग से अभी भी जूझ रहे हैं. यहाँ लगी आग से 4 हजार हेक्टेयर क्षेत्र के जंगल जल कर राख हो चुके हैं. चीन भी भीषण गर्मी की चपेट में है.

भीषण गर्मी ने चीन के अधिकांश हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया है, जिससे 900 मिलियन से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं. अधिकारियों ने वरिष्ठ नागरिकों को ऐसी स्थितियों के खतरे के बारे में चेतावनी दी है. देश के सबसे अधिक आबादी वाले शहर शंघाई ने इस गर्मी में तीसरी बार अपना हाई अलर्ट जारी किया है. इस बार गर्मी के उच्च तापमान ने कई रिकॉर्ड तोड़ दिए. गुरुवार दोपहर को तापमान 40.6 डिग्री तक बढ़ गया. हालांकि, शुक्रवार को हुई बारिश से शंघाई के निवासियों ने राहत की सांस ली.

अगर हम जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते की बात करें तो यह जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी मुद्दों पर, देशों के लिये, क़ानूनी रूप से बाध्यकारी एक अन्तरराष्ट्रीय सन्धि है. ये समझौता वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक जलवायु सम्मेलन (कॉप-21) के दौरान, 196 पक्षों की ओर से 12 दिसम्बर को पारित किया गया था. 4 नवम्बर 2016 को यह समझौता लागू हो गया था. पेरिस समझौते का लक्ष्य औद्योगिक काल के पूर्व के स्तर की तुलना में वैश्विक तापमान में बढ़ोत्तरी को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखना है, और 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के लिये विशेष प्रयास किये जाने हैं. तापमान सम्बन्धी इस दीर्घकालीन लक्ष्य को पाने के लिये देशों का लक्ष्य, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के उच्चतम स्तर पर जल्द से जल्द पहुँचना है ताकि उसके बाद, वैश्विक स्तर पर उसमें कमी लाने की प्रक्रिया शुरू की जा सके. इसके ज़रिये 21वीं सदी के मध्य तक नेट कार्बन उत्सर्जन शून्य हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है. जलवायु कार्रवाई के लिये बहुपक्षीय प्रक्रिया में पेरिस समझौता एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, पहली बार क़ानूनी रूप से बाध्यकारी एक समझौते के तहत सभी देशों को, साझा उद्देश्य की पूर्ति हेतु साथ लाया गया है ताकि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटा जा सके और अनुकूलन के प्रयास सुनिश्चित किये जा सकें. बता दें कि, अमेरिका के नव निर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडेन ने पेरिस जलवायु समझौते में, फिर से शामिल होने की घोषणा की है. पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने, वर्ष 2020 में, अमेरिका को पेरिस जलवायु समझौते से हटा लिया था. इस सन्दर्भ में, पेरिस जलवायु समझौता एक बार फिर से चर्चा में आ गया है.

विश्व मस्तिष्क दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



84 लाख योनियों में सृष्टि ने मस्तिष्क सभी को दिया है परंतु मानव मस्तिष्क की जो रचना की है वह अद्भुत है. मस्तिष्क के सदुपयोग से मानव ने अनेक चमत्कारिक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं. अब मानव शरीर में ऐसा क्या है जिसके निकल जाने से मानव की मृत्यु हो जाती है इसपर रिसर्च चल रही है. मेरा मानना है कि मानव इस रिसर्च में कभी सफल नहीं होंगे.

हम इस आर्टिकल में अद्भुत कृति मानव मस्तिष्क पर विश्व मस्तिष्क दिवस 22 जुलाई 2022 के उपलक्ष्य में चर्चा करेंगे.

शुक्रवार, 22 जुलाई को लंदन वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ न्यूरोलॉजी (डब्ल्यूएफएन) 9 वें वार्षिक विश्व मस्तिष्क दिवस की मेजबानी कर रहा है. इस वर्ष की थीम 'ब्रेन हेल्थ फॉर ऑल' है. विषय का उद्देश्य सार्वभौमिक प्रयास को बढ़ावा देना है जो मस्तिष्क विकारों के बोझ को कम करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण जानकारी साझा करेगा. विश्व मस्तिष्क दिवस (डब्ल्यूबीडी) 2022 को सभी के लिए मस्तिष्क स्वास्थ्य के लिए समर्पित किया गया है क्योंकि हमारे मस्तिष्क को मानव अस्तित्व को प्रभावित करने वाली असंख्य बीमारियों से चुनौती दी जा रही है.

मस्तिष्क में कई अरब विद्युत तार होते हैं जिन्हें न्यूरोन्स के रूप में जाना जाता है. यह दूरी पृथ्वी के चारों ओर एक पंक्ति में चार बार यात्रा के बराबर है! यह सोचा गया है कि मानव मस्तिष्क में लगभग एक सौ अरब न्यूरोन्स हैं, इन न्यूरोन्स के बीच लगभग दस खरब संबंध हैं जो हमें पढ़ने, लिखने, देखने, सीखने, समझने, महसूस करने, चलने और समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं. डब्ल्यूडीबी 2022 अभियान विश्व स्तर पर इन पाँच प्रमुख संदेशों पर ध्यान केंद्रित किया गया है. इसके प्राथमिक स्तंभ जागरूकता, रोकथाम, वकालत, शिक्षा और पहुंच हैं.

- (1) जागरूकता-मानसिक सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मस्तिष्क का स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है.
- (2) रोकथाम - मस्तिष्क की कई बीमारियों को रोका जा सकता है.
- (3) समर्थन - इष्टतम मस्तिष्क स्वास्थ्य के लिए वैश्विक प्रयासों की आवश्यकता है.
- (4) शिक्षा - शिक्षा सभी के लिए मस्तिष्क स्वास्थ्य की कुंजी है.
- (5) पहुँच- मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए संसाधनों, उपचार और पुनर्वास के लिए समान पहुँच आवश्यक है.

हर साल, 22 जुलाई को मल्टिपल स्केलेरोसिस के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विश्व मस्तिष्क दिवस मनाया जाता है. मल्टीपल स्केलेरोसिस एक ऐसी बीमारी है जो मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी को प्रभावित करती है. विश्व मस्तिष्क दिवस इस स्थिति के शीघ्र निदान की सिफारिश करता है ताकि रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके. मल्टीपल स्केलेरोसिस मस्तिष्क और शरीर के बाकी हिस्सों के बीच संचार को बाधित करता है. इस स्थिति में माइलिन, तंत्रिका तंतुओं के चारों ओर एक सुरक्षात्मक परत, पर प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा हमला किया जाता है. इसके कारण सूजन और अस्थायी घाव हो जाते हैं.

डब्ल्यूएफएन के अनुसार, मल्टीपल स्केलेरोसिस एक दुर्बल करने वाली न्यूरोलॉजिकल बीमारी है जो किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती है, जिसमें संज्ञानात्मक हानि से लेकर शारीरिक विकलांगता तक के प्रभाव होते हैं. रोग-संशोधित उपचारों द्वारा मल्टीपल स्केलेरोसिस की प्रगति को धीमा किया जा सकता है. इस बीमारी के लक्षण आमतौर पर धुंधला दिखाई देने और अंगों में सुन्नपन और झुनझुनी आने से शुरू हो सकते हैं और फिर अंत में आँखों की रौशनी जाने के साथ व्यक्ति में शारीरिक समस्याएँ शुरू हो जाती हैं. भारत में भी यह बीमारी काफी देखी जाती है.

न्यूरोलॉजिस्ट की संख्या में आई वृद्धि और एमआरआई सुविधाओं की आसान और सस्ती उपलब्धता की वजह से अब इस बीमारी का पता चलने लगा है. इस बीमारी के लक्षण हर व्यक्ति में अलग होते हैं. कुछ लोगों में लक्षण नहीं दिखते हैं, जबकि कुछ में ये लक्षण गंभीर दिखाई देते हैं जैसे कि आँखों की रौशनी से जुड़ी समस्याएँ, झुनझुनी और सुन्नपन, दर्द और ऐंठन, थकान और कमजोरी, संतुलन से जुड़ी समस्याएँ, चक्कर आना, मूत्राशय, आंत्र की बीमारी, यौन बीमारी आदि शामिल होती हैं. इस वक्त इसका कोई इलाज नहीं है, लेकिन दवाओं और अन्य इलाजों से लक्षणों का इलाज करना संभव है. विश्व मस्तिष्क दिवस के सह-अध्यक्ष ने समझाया है कि मस्तिष्क संबंधी विकार दुनिया भर में अरबों लोगों को प्रभावित करते हैं और विकलांगता का प्रमुख कारण हैं. बेहतर मस्तिष्क स्वास्थ्य एक स्वस्थ

मस्तिष्क को बनाए रखने और मानवता के लिए मस्तिष्क की महत्वपूर्ण भूमिका की वैश्विक समझ को बनाए रखने के बारे में जागरूकता के साथ शुरू होता है.

वार्षिक विश्व मस्तिष्क दिवस 22 जुलाई को होता है और हर साल एक अलग विषय के लिए समर्पित होता है. तारीख का चुनाव कोई संयोग नहीं था, डब्ल्यूएफएन की स्थापना 22 जुलाई 1957 को हुई थी . अब, अपने अस्तित्व के 65वें वर्ष में, डब्ल्यूएफएन मस्तिष्क संबंधी सभी विकारों से लड़ने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और यह पहचान दिला रहा है कि वे कितने केंद्रित हो सकते हैं. एक महत्वपूर्ण तथ्य है, विश्व मस्तिष्क दिवस मस्तिष्क स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता बढ़ाने और पक्ष समर्थन को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है. 22 जुलाई 2014 को, वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ न्यूरोलॉजी ने पहला विश्व मस्तिष्क दिवस शुरू किया, अपनी 123 राष्ट्रीय न्यूरोलॉजिकल सदस्य समितियों के समर्थन से, वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ न्यूरोलॉजी दुनिया के कम-संसाधन वाले क्षेत्रों पर जोर देते हुए, न्यूरोलॉजिकल शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर दुनिया भर में गुणवत्ता वाले न्यूरोलॉजी और मस्तिष्क स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है.

नगरिहा किसान

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



नांगर, बईला धरे कुदारी
खेत-खार जेकर संगवारी.
उठथ बिहनिया जाथे खेत
भूख-पियास हरागे चेत.

धरती ल लागिस पियास
सुन गुहार आगिस अगास.
गरगर-गरगर बादर गरजे
झरझर-झरझर पानी बरसे.

तरिया-डबरी टिपटिप भरागे
चारों डहर भुइयाँ हरियागे.
जोतत खेत किसनहा बेटा
धरे चतवार निकालय लेटा.

खेत जोत के बोइस धान
धरती दाई के राखिस मान.
जम्मो झन के भूख मिटाथे
अन्नदाता वो हर कहलाथे.

वृक्ष हमारे सच्चे मित्र

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



हे मानव! तुम मुझे मत काटो,
बदन को टुकड़ों में मत बाँटो.
महसूस करता हूँ दुःख दर्दों को,
कोमल शाखाओं को मत छाँटो.

मेरी डालियों में पंछी के घोंसले हैं,
तम रंध्र में साँप के नन्हे सपोले हैं.
बैठ छाया में खाना खाता किसान,
मुझसे ही खेत के अन्न में हौसले हैं.

मैं ही बगिया में बैठी हरियाली हूँ,
बसंतदूत की कूक,आम्रपाली हूँ.
बरगद और पीपल दादा के समान,
स्वयं रोग भस्मक औषधि छाली हूँ.

बरखा को बुलाता हूँ देकर संदेश,
पिया से मिलवाता जो जाता परदेश.
प्राणियों का जीवन दाता कहलाता,
विविध निवास करते हैं मेरे भीतर वास.

एक वृक्ष होता है दस पुत्रों के समान,
एक पेड़ लगाओ,सौ गायों का दान.
जन जब बना लेंगे मुझे अपना मित्र,
तब विश्व बन जायेगा महकता उद्यान.

बुढ़ापे का सहारा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतीय संस्कृति और सभ्यता प्रतिष्ठा के लिए प्रसिद्ध है, जिसे देखने, अनुभव करने, दुनियाभर के सैलानी भारत आते हैं। यूँ तो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के ऐसे व्यवहार, रिश्ते, मान सम्मान, आतिथ्य, बड़े बुजुर्गों की कहावतें, उनका मान सम्मान, भक्त प्रह्लाद, भगवान राम सहित अनेक प्रतीक हैं परंतु वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के पैर पसारने को लेकर ही हमारे बड़े बुजुर्गों चिंतित हैं।

बड़े बुजुर्गों से सुनी कहावत है कि चार पैसे बचा के रखो बुढ़ापे में काम आएँगे। इसकी सटीक मिसाल वर्तमान प्रैक्टिकल लाइफ में हमें देखने को मिल रही है!! हालांकि बुढ़ापे के सहारे में अपना परिवार, बेटा, भी सशक्त माध्यम है, सहारा है परंतु वर्तमान में हम देख रहे हैं कि बड़े बुजुर्गों, माता-पिता के साथ ऐसा नकारात्मक व्यवहार किया जा रहा है कि परिवार टूट रहे हैं, संतान अपने जीवन साथी के साथ विदेश में जॉब करने निकल पड़े हैं, बुजुर्गों की वृद्धाश्रम में बढ़ती संख्या और पारिवारिक झगड़ों झमेलों को देखकर बुजुर्गों की उपरोक्त कहावत का संज्ञान लेना जीवन का आवश्यक अंग बन गया है।

वृद्धावस्था में जब उन्हें सबसे ज्यादा सहारे की जरूरत होती है, तब उन्हें वृद्धाश्रमों में या कहीं भी बेसहारा छोड़ दिया जाता है। उम्र के साथ-साथ शक्ति और सामर्थ्य में कमी आने लगती है, इसे स्वीकार करने की बजाए परिवार का हर सदस्य उनके प्रति शिकायती रुख अपना लेता है। उन्हें अनुपयोगी समझकर उनसे किसी भी तरह छुटकारा पाना चाहता है।

इन पारिवारिक झगड़ों पर अदालती फैसलों के सामने आने से समस्या की गंभीरता का पता चलता है। भारत ही नहीं पूरी दुनिया में जिस तेजी से बूढ़ों की संख्या बढ़ रही है, उससे स्थिति आगे और गंभीर हो सकती है। परिवार में उपेक्षित बुजुर्गों को रोज-रोज के अपमान से बचाने और उनके स्वास्थ्य व सुविधाओं का ध्यान रखने के लिए देश में इसके समाधान को तीव्र गति से रेखांकित करने की जरूरत है।

बात अगर हम इन्हीं संतानों को माता-पिता द्वारा बचपन से युवा बनाने की करें तो, माता पिता के कितने भी बच्चे हों, वे कई कष्ट उठाकर और अपना पेट काट कर भी सबको प्यार से पालते हैं। कोई बच्चा कितना भी नालायक क्यों न हो, वे उसे अपने से अलग करने की बात सोच भी नहीं सकते, लेकिन दुख

की बात है कि बड़े होने पर यही बच्चे मिलकर भी अपने माता-पिता के प्रति अपना दायित्व नहीं निभा सकते. ऐसी संतान माता-पिता की संपत्ति पर तो अपना अधिकार जताती है, लेकिन उनके प्रति अपना कर्तव्य भूल जाती है.

बात अगर हम यौवन अवस्था से ही योजना बनाकर बुढ़ापे की तैयारी की करें तो, यौवनारंभ से बुढ़ापे की सोचकर नियमित आय का स्रोत बनाना बुढ़ापे का सबसे बड़ा सहारा है. हम साठ पैसठ साल तक इस ओर से निष्क्रिय रह कर कैसे आशा कर सकते हैं कि इस आयु में कुछ कर पाएँगे, इस लिए यौवनारंभ से ही वृद्धावस्था का सामना करने की तैयारी आवश्यक है. बुढ़ापा जीवन की वह अवस्था है जो हर किसी के जीवन में आना ही है. हमसे पहले की पीढ़ी तो बुढ़ापे के लिए खुद को तैयार करने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी क्योंकि उनके व्यवहार और परिवार दोनों के सहारे जीवन यात्रा कैसे पूरी हो जाती थी, उन्हें पता ही नहीं चलता था. परंतु अब वह समय नहीं रह गया है और न ही वैसे लोग रह गए हैं जिनके पास दूसरों के लिए फुर्सत हो इसलिए व्यक्ति को सोचना पड़ जाता है. थोड़ा सा ध्यान दें तो बुढ़ापा सुखद हो सकता है. पैसे के मामले में हमेशा दिमाग से काम ले और समस्त धन कों बच्चों पर न लुटा कर थोड़ा सा बुढ़ापे के लिए अवश्य संचित करके रखें. बुढ़ापे में धन का होना बहुत आवश्यक होता है. कभी किसी अन्य वजह से अपनी तुलना न करें. थोड़ा सा ध्यान रखकर हमारा बुढ़ापा संतोषजनक हो सकता है. सबसे संबंध अच्छे रखें जिससे कि बुढ़ापे में यदि बच्चे दूर रहते हो तो सामाजिक दायरा काम आए और अकेलापन व घबराहट न महसूस हो.

साथियो जवानी में हर व्यक्ति को संतुलित जीवन जीना होगा जिससे कि बुढ़ापा आने तक उसका शरीर रोगों का घर न हो जाए. अच्छी आदतें और उचित खानपान शरीर को अधिक समय तक स्वस्थ रखता है. व्यक्ति को अपने कार्य स्वयं करने की आदत होनी चाहिए. यह आदत बुढ़ापे तक व्यक्ति को सक्रिय रहती है और थकान नहीं आने देती. अपने शौक को बुढ़ापा आ गया है समझ कर, कभी समाप्त न करें. आपके शौक आपको ऊर्जा देंगे और आपके समय का सदुपयोग होगा, यह हमेशा याद रखें.

बच्चों से संबंध अच्छे रखना चाहिए. हर वक्त उन पर अपनी इच्छाओं को थोपना उचित नहीं होता. यदि हमारी अनावश्यक इच्छा उन पर नहीं थोपेंगे तो वे हमारा और अधिक ध्यान रखेंगे. बच्चों की यथासंभव मदद अवश्य करे. बहू के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करें.

बैंकों ने 'रिवर्स मॉर्टगैज' का प्रावधान शुरू किया है, जिसके तहत जिनके पास अपना मकान है, वे उसे बैंक को गिरवी रखकर बदले में पैसा ले सकते हैं और उस मकान में रहते हुए उस पैसे से अपना जीवन-यापन कर सकते हैं. उनकी मृत्यु के बाद अगर उनके बच्चों को वह मकान चाहिए तो बैंक का कर्ज और ब्याज चुकाकर वापस ले सकते हैं. बुढ़ापे में सुख-शांति से रहने के लिए ऐसे ही और उपायों पर भी गौर करना जरूरी है.

महिलाओं का कौशल और रोजगार

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन इस बात पर जोर देता है कि महिलाएँ जनसांख्यिकीय लाभांश का आधा हिस्सा हैं और महिला कौशल देश की श्रम शक्ति में उनकी भागीदारी बढ़ाने की कुंजी हो सकती है. आंकड़ों से पता चलता है कि पुरुषों के लिए 56.8% की तुलना में महिला श्रम बल की भागीदारी 16.9% है; इसलिए स्किलिंग को एक समाधान के रूप में आगे बढ़ाया गया है. महिलाओं को रोजगार योग्य कौशल से लैस करना पुरुषों को कुशल बनाने की तुलना में कहीं अधिक बड़ी चुनौती है. भारत में अधिकांश महिलाओं को न तो सामाजिक सुरक्षा और न ही नौकरी की सुरक्षा प्राप्त है. आमतौर पर महिलाओं को कम-कौशल और कम वेतन वाले काम में लगाया जाता है.

भारत में, पुरुषों की तुलना में महिला श्रमिकों का उच्च प्रतिशत अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा है जिससे 94 प्रतिशत महिला श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्रों में हैं. अधिक अनौपचारिकता नए कौशल हासिल करने की कमी की ओर ले जाती है, नए रोजगार सृजित नहीं होते, जिससे कार्यबल को नुकसान झेलना पड़ता है. महिला कार्यबल के मामले में, व्यापक अनौपचारिकता को अन्य चुनौतियों में जोड़ा जाता है जो उन्हें काम में भाग लेने से रोकती हैं - जैसे परिवार और देखभाल करने का बोझ, प्रतिबंधात्मक सामाजिक मानदंड और गतिशीलता पर सीमाएँ. हम देखते हैं कि कौशल प्रशिक्षण में भी अपरिहार्य लिंग अंतर दिखाई देता है.

इन सब के बावजूद महिला कौशल के लिए सरकार की पहल का परिणाम है कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) में 30 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं. महिलाओं के लिए विशिष्ट राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान दो योजनाओं के तहत प्रशिक्षण प्रदान करते हैं; शिल्पकार प्रशिक्षण योजना (सीटीएस) और शिल्प प्रशिक्षक प्रशिक्षण योजना (सीआईटीएस). इनके साथ-साथ प्रधान मंत्री

कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) अल्पकालिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करती है और पीएमकेवीवाई के तहत करीब 50 प्रतिशत उम्मीदवार महिलाएँ हैं।

प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना अपने तीसरे चरण में है और इस दौरान करोड़ों महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (डीडीयू-जीकेवाई), ग्रामीण युवाओं के लिए प्लेसमेंट से जुड़ा कौशल विकास कार्यक्रम, महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करता है। आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता (संकल्प) योजना का लक्ष्य अल्पकालिक व्यावसायिक प्रशिक्षण में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना है। यह पीएमकेवीवाई जैसी कौशल प्रशिक्षण योजनाओं के लिए एक सहायक कार्यक्रम है। भारत में, 4 में से 3 महिलाएं काम नहीं करती हैं, हालांकि साक्षरता दर में लगातार वृद्धि हुई है। क्या कौशल, जीवन और सीखने का समर्थन और नौकरियों की गारंटी इसे बदल सकती है?

राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (एनएपीएस) कौशल और नियुक्ति के लिए शिक्षुता मॉडल का अनुसरण करती है। 2020 में क्वांटम हब द्वारा मूल्यांकन में कहा गया है कि एनएपीएस महिला प्रशिक्षुओं के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं करता है, जैसे कार्यस्थल पर सुरक्षा, या उन्हें लिंग-अनुकूल बुनियादी ढांचा प्रदान करना। जन शिक्षण संस्थान खासकर गैर-साक्षर और स्कूल छोड़ने वालों, विशेषकर महिलाओं को कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है।

भारत में कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और महिलाओं के काम की धारणाओं पर आधारित हैं, जो ज्यादातर घर से संबंधित कार्यों और देखभाल करने तक ही सीमित हैं। उदाहरण के लिए, पीएमकेवीवाई के तहत महिलाओं के लिए पाठ्यक्रम परिधान, सौंदर्य, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित हैं - यह महिलाओं को अधिक लाभकारी क्षेत्रों से दूर रखता है। महिलाओं के लिए राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान केवल 21 पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जबकि सामान्य आईटीआई, जहां पुरुष प्रधान हैं, 153 पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। कौशल प्रशिक्षण में विविधता की यह कमी नौकरी बाजार के लिंग अलगाव को दर्शाती है।

मगर देश के कई एनजीओ महिलाओं को नौकरियों में प्रशिक्षित करते हैं जो रूढ़िवादिता को तोड़ने में मदद करते हैं, इस प्रकार उन्हें पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान आजीविका तक पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे वे पारंपरिक रूप से उन्हें सौंपी गई नौकरियों (जैसे घरेलू सेवा और देखभाल) की तुलना में अधिक कमाने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए आजाद फाउंडेशन की वीमेन ऑन व्हील्स, जहां महिलाओं को पेशेवर ड्राइविंग में प्रशिक्षित किया जाता है और गुजरात में निर्माण श्रमिकों के लिए स्व-नियोजित महिला संघ (सेवा) कर्मिका स्कूल।

कौशल के लिए रणनीति में स्थानीय स्वयं सहायता समूह का उपयोग करना शामिल है ताकि सहायक परिवारों के साथ महिला श्रमिकों की पहचान की जा सके और इन महिलाओं को प्रासंगिक जानकारी

प्रदान की जा सके ताकि उन्हें कौशल लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके. स्किलिंग को डिजिटल युग के परिवर्तनों से निपटने की जरूरत है. विशेष रूप से महिलाओं के लिए समावेशी डिजिटल कौशल के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी आगे का रास्ता हो सकती है. जैसे माइक्रोसॉफ्ट और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी में, डिजिटल कौशल में 100,000 से अधिक अयोग्य महिलाओं को प्रशिक्षित करते हैं. एसएपी इंडिया और माइक्रोसॉफ्ट ने प्रौद्योगिकी से संबंधित करियर के लिए प्रशिक्षित करने के लिए, अयोग्य समुदायों की 62,000 महिला छात्रों के लिए एक संयुक्त कौशल कार्यक्रम 'टेक सक्षम' शुरू किया है.

आज देश को कौशल कार्यक्रमों में जीवन कौशल, जैसे संचार क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास को एकीकृत करने की भी आवश्यकता है. इसके अलावा, सामाजिक-आर्थिक समर्थन, प्रासंगिक कौशल, गारंटीकृत नौकरियों और कम बाधाओं के लिए महिला-केंद्रित समूह और महिलाओं के लिए अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करने और भारत की प्रगति में योगदान करने के लिए एक सुलभ प्रवेश द्वार तैयार करना चाहिए.

जब तक महिला श्रम को केंद्रित समर्थन नहीं दिया जाता, तब तक अकेले साक्षरता के लाभकारी रोजगार में तब्दील होने की संभावना नहीं है. हमें सामाजिक-आर्थिक समर्थन, प्रासंगिक कौशल, गारंटीकृत नौकरियों और महिलाओं के लिए अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए एक सुलभ प्रवेश द्वार बनाने, भारत की प्रगति में सक्रिय रूप से योगदान देने वाली महिला-केंद्रित सक्षमता पहलों का एक गुलदस्ता चाहिए. महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए वास्तविक वित्तीय और सामाजिक समावेशन के लिए कई मोर्चों पर मजबूत प्रयासों की आवश्यकता है.

आखिर क्यों बदल रहे हैं मनोभाव और टूट रहे परिवार

रचनाकार- प्रियंका सौरभ



भौतिकवादी युग में सुख-सुविधाओं की प्रतिस्पर्धा ने रिश्तों को झुलसा दिया है. कच्चे से पक्के होते घरों की ऊँची दीवारों ने आपसी वार्तालाप को लुप्त कर दिया है. पत्थर होते हर आँगन में फूट-कलह का नंगा नाच हो रहा है. आपसी मतभेदों ने गहरे मन भेद कर दिए हैं. बड़े-बुजुर्गों की शिक्षाओं के अभाव में घरों में रिश्तों को ताक पर रखकर निर्णय होने लगे हैं. फलस्वरूप आज परिजन ही अपनों को काटने पर तुले हैं. एक तरफ सुख में पड़ोसी हलवा चाट रहे हैं तो दुःख अकेले भोगने पड़ रहे हैं. हमें ये सोचना-समझना होगा कि अगर हम सार्थक जीवन जीना चाहते हैं तो परिवार की महत्ता समझनी होगी और आपसी तकरार को छोड़कर परिवार के साथ खड़ा होना होगा तभी हम बच पाएँगे और ये समाज रहने लायक होगा.

आज सभी को एक संस्था के रूप में पारिवारिक मूल्यों और परिवार के बारे में सोचने-समझने की सख्त जरूरत है और साथ ही इन मूल्यों की गिरावट के कारण ढूँढकर उनको दुरुस्त करने की भी जरूरत है. इसके लिए समाज के कर्णधार कवि/लेखकों/गायकों/ नायक/नायिकाओं/शिक्षक वर्गों और अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ राजनीतिज्ञों को एक संस्था के रूप में परिवार के पतन के निहितार्थ के बारे में भी लिखना और सोचना चाहिए. खुले मंचों से इस बात पर चर्चा होनी चाहिए कि इस गिरावट के कारण क्या है? और इस गिरावट से कैसे उबरा जा सकता है? युवा कवि सत्यवान 'सौरभ' ने इस स्थिति को अपने शब्दों में कहते हुए सही लिखा है कि-

"टूट रहे परिवार हैं, बदल रहे मनभाव.
प्रेम जताते ग़ैर से, अपनों से अलगाव.
गलती है ये खून की, या संस्कारी भूल!
अपने काँटों से लगें, और पराये फूल!!

परिवार, भारतीय समाज में, अपने आप में एक संस्था है और प्राचीन काल से ही भारत की सामूहिक संस्कृति का एक विशिष्ट प्रतीक है. संयुक्त परिवार प्रणाली या एक विस्तारित परिवार भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है, जब तक कि शहरीकरण और पश्चिमी प्रभाव के मिश्रण ने उस संस्था को झटका देना शुरू नहीं किया. परिवार एक बुनियादी और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जिसकी व्यक्तिगत और साथ ही सामूहिक नैतिकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है. परिवार सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का पोषण और संरक्षण करता है.

यह कानून का पालन करने वाले नागरिकों को प्रोत्साहन देकर समाज को स्थिरता प्रदान करता है. यह व्यक्ति में सामूहिक चेतना के निर्माण में मदद करता है. परिवार प्रणाली एक एकल, शक्तिशाली किस्म है जो सदियों से है, और विविधता के साथ समृद्ध, सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करती है समाजीकरण में यह भावनात्मक संबंध का प्रमुख स्रोत है, समाजीकरण और नैतिकता को आकार देने के तरीके से सही और गलत की भावना उत्पन्न करता है. बच्चों को उनके माता-पिता, उनके साथियों और उनके समाज के सामाजिक सम्मेलनों" के अनुसार नैतिक निर्णय लेने के रूप में देखा जाता है. यह व्यक्तिगत चरित्र को मजबूत करता है. यह अच्छी आदत बनाने का पहला स्रोत है जैसे अनुशासन, सम्मान, आज्ञाकारिता आदि."

नैतिक मजबूती के साथ-साथ यह व्यक्ति के परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों को बिना किसी हिचकिचाहट के कठिन समय में भरोसा करने के लिए लचीलापन प्रदान करता है. यह कठिनाइयों से निपटने के लिए अनैतिक साधनों के उपयोग से बचाता है. परिवार लोगों को सांसारिक समस्याओं के प्रति स्त्री के दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद करता है. मगर वर्तमान दौर में हम संस्था के रूप में परिवार में गिरावट का कटु अनुभव झेल रहे हैं.

"घर-घर में मनभेद है, बचा नहीं अब प्यार.
फूट-कलह ने खींच दी, हर आँगन दीवार.
स्नेह और आशीष में, बैठ गई है रार.
अरमानों के बाग में, भरा जलन का खार. "

गिरावट के प्रतीक के रूप में आज परिवार खंडित हो रहा है, वैवाहिक सम्बन्ध टूटने, आपसी भाईचारे में दुश्मनी एवं हर तरह के रिश्तों में कानूनी और सामाजिक झगड़ों में वृद्धि हुई है. आज सामूहिकता पर व्यक्तिवाद हावी हो गया है. इसके कारण भौतिकवाद उन्मुख, प्रतिस्पर्धी और अत्यधिक आकांक्षा वाली पीढ़ी तथाकथित जटिल पारिवारिक संरचनाओं से संयम खो रही है. जिस तरह व्यक्तिवाद ने अधिकारों और विकल्पों की स्वतंत्रता का दावा किया है. उसने पीढ़ियों को केवल भौतिक समृद्धि के परिप्रेक्ष्य में जीवन में उपलब्धि की भावना देखने के लिए मजबूर कर दिया है.

वर्तमान स्थिति में भड़काऊ रवैया परिवारों के बिखरने का प्रमुख कारण है. परिवार के अन्य सदस्यों को उच्च आय और कम जिम्मेदारी ने विस्तारित परिवारों को विभाजित किया है. उच्च तलाक की दर निसंदेह सामाजिक रिश्तों को निगल रही है. विवाह के टूटने का प्रमुख कारण एकल रवैये, व्यवहार और समझौता किए गए मूल्यों में प्रौद्योगिकी काला धब्बा है. युवा पीढ़ी का असामाजिक व्यवहार परिवारों को तेजी से नष्ट कर रहा है. आज के अधिकांश सामाजिक कार्य, जैसे कि बच्चे की परवरिश, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, बुजुर्गों की देखभाल, आदि, बाहर की एजेंसियों, जैसे क्रेच, मीडिया, नर्सरी स्कूलों, अस्पतालों, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, धर्मशाला संस्थानों ने ठेकेदारों के तौर पर संभाल लिए हैं जो कभी परिवार के बड़े लोगों की जिम्मेवारी होती थी.

"बड़े बात करते नहीं, छोटों को अधिकार.

चरण छोड़ घुटने छुए, कैसे ये संस्कार.

कहाँ प्रेम की डोर अब, कहाँ मिलन का सार.

परिजन ही दुश्मन हुए, छुप-छुप करे प्रहार. "

परिवार संस्था के पतन ने हमारे भावनात्मक रिश्तों में बाधा पैदा कर दी है. एक परिवार में एकीकरण बंधन आपसी स्नेह और रक्त से संबंध हैं. एक परिवार एक बंद इकाई है जो हमें भावनात्मक संबंधों के कारण जोड़कर रखता है. नैतिक पतन परिवार के टूटने में अहम कारक है क्योंकि वे बच्चों को दूसरों के लिए आत्म सम्मान और सम्मान की भावना नहीं भर पाते हैं. पद-पैसों की अंधी दौड़ से आज सामाजिक-आर्थिक सहयोग और सहायता का सफाया हो गया है. परिवार अपने सदस्यों, विशेष रूप से शिशुओं और बच्चों के विकास और विकास के लिए आवश्यक वित्तीय और भौतिक सहायता तक सीमित हो गए हैं, हम आये दिन कहीं न कहीं बुजुर्गों सहित अन्य आश्रितों की देखभाल के लिए, अक्षम और दुर्बल परिवार प्रणाली की गिरावट की बातें सुनते और देखते हैं जब उन्हें अत्यधिक देखभाल और प्यार की आवश्यकता होती है.

आज ज्यादातर लोग सार्थक जीवन का अभाव झेल रहे हैं. पारिवारिक प्रणाली के पतन का एक नुकसान ये है कि साझाकरण, देखभाल, सहानुभूति, सहयोग, ईमानदारी, सुनने, स्वागत करने, मान्यता, विचार, सहानुभूति और समझ के गुणों का कम होना है. हाल के दिनों में तनाव की सहनशीलता में कमी, चिंता और अवसाद जैसे मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे बढ़ रहे हैं. परिवार प्रणाली बुजुर्ग सदस्यों से बात करने, बच्चों के साथ खेलने आदि से गहरी असुरक्षा की अभिव्यक्ति के साथ मानसिक रूप से व्यक्ति को राहत दे सकती है. परिवार प्रणाली में गिरावट अधिक व्यक्तियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के मामले पैदा कर सकती है.

भविष्य में संस्था के रूप में परिवार में गिरावट समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाएगी. सकारात्मक पक्ष पर, भारतीय समाज में जनसंख्या की वृद्धि में कमी देखी जा सकती है और संस्था के रूप में परिवार में

गिरावट के प्रभाव के रूप में कार्यबल का महिलाकरण हो सकता है. हालाँकि, संयुक्त परिवार से परिवार के संरचनात्मक परिवर्तनों को समझने की आवश्यकता है, कुछ मामलों में इसे परिवार प्रणाली की गिरावट नहीं कहा जा सकता है. जहाँ परिवार प्रणाली किसी सकारात्मक परिवर्तन के लिए संयुक्त परिवार से एकल परिवार में परिवर्तित होती है. वैसे भी भारतीय समाज भी परिवार के संलयन और विखंडन की अनूठी विशेषता का निवास करता है जिसमें भले ही परिवार के कुछ सदस्य अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग रहते हैं, फिर भी एक परिवार के रूप में रहते हैं.

"बच पाए परिवार तब, रहता है समभाव.
दुःख में सारे साथ हो, सुख में सबसे चाव.
अगर करें कोई तीसरा, सौरभ जब भी वार.
साथ रहें परिवार के, छोड़े सब तकरार."

परिवार एक बहुत ही तरल सामाजिक संस्था है और निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया में है. आधुनिकता समान-लिंग वाले जोड़ों (एलजीबीटी संबंध), सहवास या लिव-इन संबंधों, एकल-माता-पिता के घरों, अकेले रहने वाले या अपने बच्चों के साथ तलाक का एक बड़ा हिस्सा उभरने का गवाह बन रहा है. इस तरह के परिवारों को पारंपरिक रिश्तेदारी समूह के रूप में कार्य करना आवश्यक नहीं है और ये समाजीकरण के लिए अच्छी संस्था साबित नहीं हो सकती. भौतिकवादी युग में एक-दूसरे की सुख-सुविधाओं की प्रतिस्पर्धा ने मन के रिश्तों को झुलसा दिया है.

कच्चे से पक्के होते घरों की ऊँची दीवारों ने आपसी वार्तालाप को लुप्त कर दिया है. पत्थर होते हर आंगन में फूट-कलह का नंगा नाच हो रहा है. आपसी मतभेदों ने गहरे मन भेद कर दिए हैं. बड़े-बुजुर्गों की अच्छी शिक्षाओं के अभाव में घरों में छोटे रिश्तों को ताक पर रखकर निर्णय लेने लगे हैं. फलस्वरूप आज परिजन ही अपनों को काटने पर तुले हैं. एक तरफ सुख में पड़ोसी हलवा चाट रहे हैं तो दुःख अकेले भोगने पड़ रहे हैं. हमें ये सोचना-समझना होगा कि अगर हम सार्थक जीवन जीना चाहते हैं तो हमें परिवार की महत्ता समझनी होगी और आपसी तकरारों को छोड़कर परिवार के साथ खड़ा होना होगा तभी हम बच पायेंगे और ये समाज रहने लायक होगा.

कोल्ड-ड्रिंक को ना ना

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



रंगबिरंगे कोल्ड-ड्रिंक को करना है ना- ना,
पिएँ न शादी - पार्टी में, निज संकल्प निभाना.

कोल्ड-ड्रिंक पीने में मीठा
लगता ठंडा - ठंडा,
शौक स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद,
अधिक बुरा है फंडा,

सेवन करके, अधिक मोटापा
नहीं कदापि बढ़ाना.

रोग प्रतिरोधक क्षमता घटती
तन होता बीमार,
हाथ लगाया यदि इसको तो
लेगा बना शिकार,

कोमल मन - स्मरणशक्ति को,
अपने आप बचाना.

नींबू, शिकंजी, बेल का शर्बत
उत्तम मैंगो शेक,
अमिया पना, चुकंदर रस में
तत्त्व भरे हैं नेक,

लस्सी, छाछ, नारियल पानी
पोषकता का खजाना.

सूप सब्जियों के क्या कहने
गन्ने का रस भाता,
चने के सत्तू को जो पीता
लाभ और सुख पाता,

पेय प्राकृतिक लेना अच्छा
करना नहीं बहाना.
रंगबिरंगे कोल्ड-ड्रिंक को करना है ना ना.

लक्ष्य भेद

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



चाहे बनी हो दीवारें लोहे की,
जो हो चाहे अकाट्य अभेद.
मेरी प्रतिज्ञा दृढ़ संकल्पित है,
एक दिन करूंगा लक्ष्य भेद.

रोक ना पायेगा कोई चुनौती,
क्षण-क्षण देता रहूंगा परीक्षा.
जीतने की भावना है दिल में,
अभी खत्म नहीं हुई इच्छा.

मन कहता है तू कर्मवीर बन,
धीरे-धीरे ज्ञान का कर संचय.
समय को व्यर्थ ना बर्बाद कर,
एक दिन जीत मिलेगी निश्चय.

आखिर डर तुझे किस बात की,
या तो भव्य जीत होगी या हार.
दोनों सूरत में तुम कुछ सीखोगे,
विद्या युद्ध के लिए हो जा तैयार.

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार,
त्याग दो तभी मिलेगा नवज्ञान.
गिरकर चढ़ोगे पर्वत शिखर पर,
उस दिन दुनिया करेगी सलाम.

निंदा त्यागने का संकल्प लें

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सृष्टि ने मानव में गुण और अवगुण रूपी दो गुलदस्ते जोड़े हैं और 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि का सृजन मानव में कर अपने भले बुरे सोचने की क्षमता दी है. परंतु हम अपनी जीवन यात्रा में देखते हैं कि मानव खुद अवगुण का चुनाव कर उसमें डल जाता है और अंत में दोष सृष्टिकर्ता को देता है कि मेरे जीवन को नरक बना दिया जबकि गलती मानव की ही है कि उसने अपनी बुद्धि से उस अवगुण को चुना. आज हम निंदा बुराई, दूसरों पर उंगली उठाना इस अवगुण की चर्चा करेंगे.

किसी ने खूब कहा है कि, संसार में प्रत्येक जीव की रचना ईश्वर ने किसी विशेष उद्देश्य से की है. हमें ईश्वर की किसी भी रचना का मखौल उड़ाने का अधिकार नहीं है. इसलिए किसी की भी निंदा करना परमात्मा की निंदा करने के समान है. किसी की आलोचना से आप खुद के अहंकार को कुछ समय के लिए तो संतुष्ट कर सकते हैं किन्तु उसकी काबिलियत, नेकी, अच्छाई और सच्चाई की संपदा को नष्ट नहीं कर सकते. जो सूर्य की तरह प्रखर है, उस पर निंदा के कितने ही काले बादल छा जाएँ किन्तु उसकी प्रखरता, तेजस्विता और ऊष्णता में कमी नहीं आ सकती. अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा असत्य के समान है. जैसे हमारी आँखें चंद्रमा के कलंक तो देख लेती हैं, किंतु अपने काजल को नहीं देख पातीं. उसी प्रकार हम दूसरों के दोषों को देखते हैं, हालांकि खुद अनेक दोषों से भरे हैं. दूसरों में जो दोष दिखाई देते हैं, सचमुच उनका कारण हमारे अपने चित्त की दूषित वृत्तियाँ हैं. दूसरों की निंदा किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होती. इस संबंध में एक कवि ने लिखा भी है कि

हमें परखने का तरीका नहीं है.
कोई वरना दुश्मन किसी का नहीं है.

निंदक को यह याद रखना चाहिए कि दुनिया तुझे हजारों आंखों से देखेगी, जबकि तू दुनिया को दो ही आंखों से देख सकेगा.

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है, तो उसे याद रखना चाहिए कि पीछे की ओर मुड़ी उसकी तीन उंगलियां पहले उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं. निंदा- चुगली व्यर्थ ही है. इससे परस्पर वैमनस्य, कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं. इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो, केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो. यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं. बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं, मितभाषी की निंदा करते हैं, संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसकी निंदा न होती हो, इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय. ताको बुरा न मानिए, लेन कहाँ यूं जाए. ' केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझे, वह अपने आप को स्वयं ही जाने, क्योंकि लोक तो निरंकुश है, जो चाहता है सो कह देता है. द्वेषी गुण न पश्यति, द्वेषी गुणों को नहीं देखता.

परनिंदा में प्रारंभ में काफी आनंद मिलता है लेकिन बाद में निंदा करने से मन में अशांति व्याप्त होती है और हम हमारा जीवन दुःखों से भर लेते हैं. प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग दृष्टिकोण एवं स्वभाव होता है. दूसरों के विषय में कोई अपनी कुछ भी धारणा बना सकता है. हर मनुष्य का अपनी जीभ पर अधिकार है और निंदा करने से किसी को रोकना संभव नहीं है. न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति.. अर्थ – लोगों की निंदा (बुराई) किये बिना दुष्ट (बुरे) व्यक्तियों को आनंद नहीं आता. जैसे कौवा सब रसों का भोग करता है परंतु गंदगी के बिना उसकी संतुष्टि नहीं होती, लोग अलग-अलग कारणों से निंदा रस का पान करते हैं. कुछ सिर्फ अपना समय काटने के लिए किसी की निंदा में लगे रहते हैं तो कुछ खुद को किसी से बेहतर साबित करने के लिए निंदा को अपना नित्य का नियम बना लेते हैं. निंदकों को संतुष्ट करना संभव नहीं है.

महात्मा गांधी ने कहा है कि दूसरों के दोष देखने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें. दूसरों की निंदा अश्रेयस्करी है. निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है. जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विषय है. इसीलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है सपनेहां नहिं देखा परदोषा! अर्थात् स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना. भगवान बुद्ध ने कहा है, जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है. भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खाने के बराबर है. विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है. ईसा मसीह ने कहा था, लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते. हेनरी फोर्ड ने कहा कि मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूं. हमारी सद्भावना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है. सद्भावना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है. लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो. इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा.

दूसरों की निंदा करना. सदैव दूसरों में दोष ढूँढते रहना मानव का एक बड़ा अवगुण है. दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है. इस तरह के लोग हमें आसानी से मिल जाएँगे. प्रतिवाद में व्यर्थ समय गँवाने से बेहतर है अपने मनोबल को बढ़ाकर जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें. ऐसा करने से एक दिन आप काफी मजबूत हो जाएँगे और आपके निंदकों को सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा. इसलिए सब तरफ गुण ही ढूँढने की आदत डालो. देखो कितना आनंद आता है. दुनिया में पूर्ण कौन है हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं.

तुम आगे बढ़ो

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



शिक्षा में तुम आगे बढ़ो,
तुम बढ़ो आगे खेल में.
प्रतिभा को तुम दिखा दो,
तुम बढ़ो आगे मेल में.

नृत्य में तुम आगे बढ़ो,
तुम बढ़ो आगे गीत में.
संगीत की धुन सुना दो,
तुम बढ़ो आगे रीत में.

कर्म में तुम आगे बढ़ो,
तुम बढ़ो आगे धर्म में.
भक्ति से प्रभु जगादो,
तुम बढ़ो आगे मर्म में.

नैतिकता में तुम आगे बढ़ो,
तुम बढ़ो आगे महायोग में.
जन-जन सेवा तुम करदो,
तुम बढ़ो आगे सब लोग में.

राजनीति में तुम आगे बढ़ो,
तुम बढ़ो आगे व्यापार में.
गरीबी को तुम दूर भगादो,
तुम बढ़ो आगे संसार में.

या तो मैं तिरंगा फहराकर वापस आऊंगा, या फिर उसमें लिपटकर वापस आऊंगा

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



कारगिल युद्ध में सैनिकों द्वारा किए गए बलिदान को याद करने के लिए हर साल 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है. भारतीय सेना के एक मिशन 'ऑपरेशन विजय' ने भारत के लिए अंतिम सफलता हासिल की. कारगिल विजय दिवस हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है. यह दिन कारगिल युद्ध 1999 के शहीदों को समर्पित है. कारगिल विजय दिवस कारगिल युद्ध में भारतीय सेना की जीत का प्रतीक है.

कारगिल युद्ध 1999 में कारगिल जिले में घुसपैठ करने वाले पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा शुरू किया गया था. कारगिल विजय दिवस को सैकड़ों बहादुर भारतीय सैनिकों की शहादत को याद करने का दिन माना जाता है. कारगिल विजय दिवस वह दिन है जिस दिन भारतीय सेना ने 1999 में पाकिस्तान की सेना के खिलाफ युद्ध जीता था. 26 जुलाई को, भारतीय सेना ने उन सभी भारतीय चौकियों पर फिर से कब्जा कर लिया, जिन पर पाकिस्तान की सेना का कब्जा था. तब से, कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों के प्रयासों और बलिदानों को याद करने के लिए हर साल यह दिवस मनाया जाता है.

कारगिल युद्ध भारतीय सेना द्वारा लड़े गए सबसे महान युद्धों में से एक है. युद्ध जम्मू और कश्मीर के कारगिल जिले में मई और जुलाई 1999 के बीच हुआ था. भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के साथ लड़े गए चार प्रमुख युद्धों में से कारगिल युद्ध आखिरी था. अन्य तीन युद्ध 1947 में पहला कश्मीर युद्ध,

1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध है. कारगिल युद्ध में दोनों राष्ट्रों के बीच लड़ाई एक बहुत लंबी लड़ाई थी, और इसका दोनों पर व्यापक प्रभाव पड़ा.

ब्रॉक चिशोल्म द्वारा बताए गए शब्दों की तरह, "कोई भी युद्ध नहीं जीतता है. यह सच है, हार की डिग्री होती है, लेकिन कोई जीतता नहीं है." किसी भी युद्ध की तरह कारगिल युद्ध का परिणाम भी विनाशकारी था. कई माता-पिता ने अपने बेटे खो दिए, कई बच्चों ने अपने पिता खो दिए, कई पत्नियों ने अपने पति खो दिए, कई ने अपने सबसे अच्छे दोस्त खो दिए, और भारत ने कई बहादुर सैनिकों को खो दिया. हम अपने उन साहसी सैनिकों को नमन करें जिन्होंने दुश्मनों से हमारी जान बचाने के लिए खुद को समर्पित कर दिया.

मई 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच कारगिल युद्ध छिड़ गया और राष्ट्रों के बीच गहन लड़ाई साठ दिनों तक जारी रही. 26 जुलाई को, भारतीय सेना को विजयी घोषित करते हुए, युद्ध को आधिकारिक तौर पर समाप्त घोषित कर दिया गया था. कारगिल जिले के स्थानीय चरवाहों ने पहली बार 3 मई 1999 को जम्मू और कश्मीर में लद्दाख के पास के क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों की उपस्थिति की सूचना दी थी. चरवाहों के संदेश ने भारतीय सैनिकों को रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों के साथ गश्ती इकाइयों का निर्माण किया.

बाद में मई में, पाकिस्तान ने जवाबी गोलीबारी की उम्मीद में भारत पर गोलीबारी शुरू कर दी. रणनीति भारतीय सैनिकों को लड़ाई में सक्रिय रूप से शामिल करने की थी ताकि पाकिस्तानी सैनिक आसानी से भारतीय क्षेत्रों पर आक्रमण कर सकें. भारी गोलाबारी के परिणामस्वरूप, भारतीय सेना के पास इससे लड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था; पाकिस्तानी घुसपैठियों ने स्थिति का फायदा उठाया और द्रास, मुशकोह और काकसर सेक्टरों पर आक्रमण कर दिया.

जून की शुरुआत में भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तानी सेना की संलिप्तता का खुलासा करने वाले दस्तावेज जारी किए गए थे. पाकिस्तानी सेना ने दावा किया कि घुसपैठ "कश्मीरी स्वतंत्रता सेनानियों" द्वारा की गई थी, जो बाद में बालदार के रूप में साबित हुई थी. युद्ध की शुरुआत की लड़ाई भारतीय सेना के लिए बहुत प्रतिकूल थी क्योंकि पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों ने खुद को उस क्षेत्र के प्रमुख स्थानों पर तैनात कर दिया था.

प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों जैसे पहाड़ी इलाके, ठंडे मौसम और अत्यधिक ऊंचाई ने पाकिस्तानी सेना को सामरिक लाभ प्रदान किया. लेकिन फिर भी, हमारे बहादुर वीर पाकिस्तानी सैनिकों से कई चौकियाँ हासिल करने में कामयाब रहे. 4 जुलाई को, 11 घंटे की लंबी लड़ाई के बाद, भारतीय सेना ने टाइगर हिल पर कब्जा कर लिया, और अगले दिन, उन्होंने द्रास को पुनः प्राप्त कर लिया. टाइगर हिल और द्रास पर पुनः कब्जा करने से युद्ध में भारत को एक बड़ी सफलता मिली.

बाद में, 5 जुलाई को, पाकिस्तान ने सैनिकों की वापसी की घोषणा की, और बल ने 11 जुलाई को अपनी वापसी शुरू कर दी. कारगिल युद्ध को दिया गया कोडनेम ऑपरेशन विजय था. 14 जुलाई को, भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने युद्ध में भारतीय सैनिकों की सफलता की घोषणा की. सभी पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ दिया गया, और युद्ध आधिकारिक तौर पर 26 जुलाई को समाप्त हो गया.

ये युद्ध हमें याद दिलाता है कैप्टन विक्रम बत्रा की. गंभीर चोटों को झेलने के बावजूद, वह दुश्मन की ओर रेंगता रहा और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की उपेक्षा के साथ स्थिति को साफ करते हुए हथगोले फेंके, सामने से आगे बढ़ते हुए, उसने अपने आदमियों को लामबंद किया और हमले पर दबाव डाला और लगभग असंभव को हासिल कर लिया. मगर अंत में दुश्मन की भारी गोलाबारी का सामना करते हुए भारत माँ के इस लाडले ने दम तोड़ दिया.

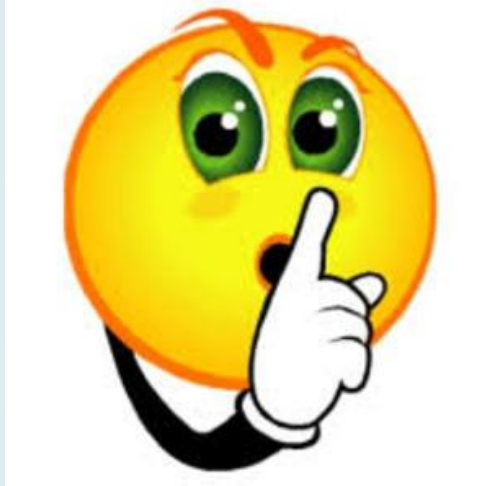
उनके साहसिक कार्य से प्रेरित होकर, उनकी सेना ने प्रतिशोध के साथ दुश्मन का सफाया कर दिया और प्वाइंट 4875 पर कब्जा कर लिया. इस प्रकार, कप्तान विक्रम बत्रा ने दुश्मन के सामने सबसे विशिष्ट व्यक्तिगत बहादुरी और सर्वोच्च नेतृत्व का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बना दिया भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं में बलिदान की परम्परा को. ”

उन्होंने अपने घर वालों को कहा था - "या तो मैं तिरंगा फहराकर वापस आऊँगा, या फिर उसमें लिपटकर वापस आऊँगा, लेकिन मैं निश्चित रूप से वापस आऊँगा". कारगिल युद्ध के शहीद कैप्टन बत्रा को 15 अगस्त, 1999 को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था. पुरस्कार राष्ट्रपति के आर नारायणन से गणतंत्र दिवस परेड के दौरान 26 जनवरी 2000 को उनके पिता द्वारा प्राप्त किया गया. कैप्टन बत्रा को उनकी वीरता और बहादुरी के लिए पूरे देश में पहचाना जाता है. प्वाइंट 4875 पर कब्जा करने में उनकी भूमिका को देखते हुए पहाड़ का नाम बत्रा टॉप रखा गया है.

इस युद्ध में भारत विजयी हुआ, हमने 527 साहसी आत्माओं को खो दिया, और युद्ध में 1363 सैनिक घायल हो गए. उन बहादुर बलिदानों की उपेक्षा कौन कर सकता है? आइए उनके धैर्य को याद करें और उनके आभारी रहें.

खामोशियां ही बेहतर हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



खामोशियां ही बेहतर हैं
शब्दों से लोग रूठते बहुत हैं
बात बात पर लोग चिढ़ते बहुत हैं
गुस्से में रिश्ते टूटते बहुत हैं.

सरकारी पद था उसकी यादें बहुत हैं
जिंदगी गुजर गई सबको खुश करने में
परिवार कहता है तुमने कुछ नहीं किया
सुनकर कहता हूं समय है बदलता जरूर है.

भ्रष्टाचार करके परिवार को पढ़ाया
टेबल के नीचे पैसे लेकर परिवार बढ़ाया
कितना भी समेट लो साहब
यह वक्त है बदलता जरूर है.

अनुभव कहता है उस समय ठस्का था
पद पर बैठकर रुतबा मस्का था
भ्रष्टाचार में जीवन खोया पैसों का चस्का था
पद कारण भ्रष्टाचार का चस्का था.

अब स्थिति जानवर से बदतर है
अब खामोशियां ही बेहतर है
पाप की कमाई का असर है
अब जिंदगी दुखदाई बसर है.

ईमानदारी और आत्म सम्मान मानवीय जीवन के दो अनमोल हीरे मोती

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सृष्टि ने मानव के मस्तिष्क में बौद्धिक क्षमता के रूप में ऐसा खजाना भर दिया है जिसमें अन्य 84 लाख योनियों को अलग रखा और मानव योनि में जन्म लेने वाला अपने परिवार मोहल्ले समाज शहर के खूबसूरत माहौल में अपना बचपन बिताता है तो उसे हमारे बड़े-बुजूर्ग ईश्वर का रूप मानते हैं. यह सर्वविदित है कि बच्चे झूठ, फरेब, बेईमानी इत्यादि अवगुणों से दूर स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में अपना बाल जीवन व्यतीत करते हैं. जब बचपन से निकलकर बौद्धिक समझदारी में आते हैं उन्हें आकर्षित करने वाली अनेक चीजों में से एक धन है, जिसकी चाहत बालपन से निकलने पर ही आने लगती है और यहीं से कुदरत द्वारा दी गई अनमोल बौद्धिक क्षमता पर भ्रष्टाचार और लालच की नकारात्मक सोच हमला करती है जिसने ईमानदारी और आत्म सम्मान रूपी अस्त्र से इन अवगुणों को काट दिया उसका संपूर्ण जीवन सफल हो जाता है और जो इसके घेरे में आ गया वह परिवार कुल सहित दुखों का भागीदार बन जाता है. जिसका मूल कारण गलत स्रोतों से कमाया गया धन है!!

गलत स्रोतों से कमाए गए धन की बात करें तो श्लोकों में आया है. अन्यायोपार्जितं वित्तं दस वर्षाणि तिष्ठति.प्राप्ते चैकादशेवर्षे समूलं तद् विनश्यति.

अर्थ- अन्याय या गलत तरीके से कमाया हुआ धन दस वर्षों तक रहता है. लेकिन ग्यारहवें वर्ष वह मूलधन सहित नष्ट हो जाता है.अन्यायोपार्जितं वित्तं दस वर्षाणि तिष्ठति.

प्राप्ते चैकादशेवर्षे समूलं तद् विनश्यति.

आचार्य चाणक्य अपने इस श्लोक में कहते हैं कि ऐसे गलत तरीकों से कमाया गया पैसा 10 साल तक ही रहता है, इसके बाद 11वें वर्ष से ही ऐसा पैसा धीरे-धीरे नष्ट होने लगता है, इसलिए व्यक्ति को कभी भी अनैतिक तरीके से पैसा नहीं कमाना चाहिए क्योंकि उसे बुरे कर्मों का फल भी झेलना पड़ता है और

कुछ समय बाद ऐसा धन नष्ट भी हो जाता है, फिर चाहे वजह कोई दुर्घटना, बीमारी, या अन्य कारण हो. बेहतर होगा कि ईमानदारी से पैसा कमाएं और उसका एक हिस्सा दान में दें, इससे आपके घर में हमेशा बरकत रहेगी और आप दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की करेंगे.

चाणक्य नीति के अनुसार पापकर्म द्वारा या किसी को कष्ट और क्लेश पहुँचाकर कमाया गया पैसा अभिशापित होकर मनुष्य का नाश कर देता है. इस धन के प्रभाव से सज्जन पुरुष भी पाप की ओर बढ़ने लगते हैं. इसलिए ऐसे पैसा ें से बचना चाहिए, वरना जल्दी ही कुल सहित उस इंसान का नाश हो जाता है. आचार्य चाणक्य बताते हैं कि ऐसा धन दस साल से ज्यादा नहीं टिक पाता. उसके बाद दुगना खर्चा बीमारी या नुकसान होकर ऐसा पैसा चला जाता है.

हम इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में भ्रष्टाचारियों के अनेक दुखद नकारात्मक परिणामों के बारे में पढ़ते सुनते रहते हैं. जो भ्रष्टाचार करता है वह जीवन में कभी सुखी नहीं रहता उसके परिवार, कुल में संकटों का पहाड़ किसी न किसी रूप में गिरता ही रहता है और सबसे बड़ी बात, कि मां लक्ष्मी चंचल होती है, यदि गलत तरीकों से धन कमाया गया तो मां लक्ष्मी नाराज होकर चली जाती हैं, अनैतिक तरीकों से चोरी, धोखे, अन्याय, जुआ आदि के जरिए कमाया गया धन हमेशा साथ नहीं रहता है.

हमने देखा है कि भ्रष्टाचारियों के पास धन अधिक समय तक नहीं रहता वह निकल जाता है सुबह नहीं तो शाम निकलता जरूर है जिसकी परिणति हम बड़े बड़े ऑफिसरों नेताओं पर ईडी, आईटी, सीबीआई की रेड से करोड़ों रुपए के धन की बरामदगी के रूप में किस्से मीडिया में देखते सुनते रहते हैं.

धन कमाने से कहीं ज्यादा मुश्किल काम होता है धन को बचाकर रखना. कुछ लोग कम पैसे कमाने के बाद भी अपने लिए अच्छा खासा धन जोड़कर रख लेते हैं वहीं कुछ लोग बहुत पैसा कमाने के बाद भी ऐसा नहीं कर पाते. आचार्य चाणक्य ने अपनी नीतियों में धन से जुड़ी कई बातें बताई हैं. जिन्हें अपनाकर हम अपने धन को नष्ट होने से बचा सकते हैं. इन नीतियों से धन को इस्तेमाल करने का सही तरीका जाना जा सकता है. साथ ही इस बात की भी जानकारी मिल जाती है कि हम कैसे पैसों की बचत कर सकते हैं.

चाणक्य नीति के अनुसार

- (1) धन की बचत करना
- (2) धन का सकारात्मक सम्मान
- (3) समृद्धि के साथ रहवास
- (4) धन जीवन की परीक्षा बोधक है
- (5) धन का मोह नहीं करना चाहिए
- (6) धन का सम्मान करना चाहिए
- (7) बेवजह धन खर्च नहीं करना चाहिए

- (8) धन के सम्मान संबंधी लक्ष्मी मां की परीक्षा
- (9) धन का दिखावा रोकना व सकारात्मक कौशल से धन का उपयोग
- (10) स्वस्थ स्रोतों से धन कमाना.

ईमानदारी और आत्म सम्मान मानव के दो अनमोल हीरे मोती हैं. भ्रष्टाचार फरेब अन्याय धोखे सहित गलत स्रोतों से कमाया गया धन बीमारी दुख कलेश के माध्यमों से ब्याज सहित परिवार कुल का नाश करते हुए निकल जाता है.

बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस)

रचनाकार- सलिल सरोज



समाज में जब भी परिवर्तन की स्थिति बनती है तो उस प्रक्रिया में सबसे ज्यादा वो प्रभावित होते हैं जो अपनी अधिकांश जरूरतों के लिए किसी और पर निर्भर होते हैं जैसे स्त्रियाँ, बच्चे और बुजुर्ग. घर, कार्य स्थल, समाज और देश में परिवार के इन तीन सदस्यों को अपनी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकताओं के लिए किसी न किसी रूप में अन्य व्यक्ति पर आश्रित होना पड़ता है. स्त्रियाँ घर में अपनी जगह तो कभी अपनी महत्ता बनाए रखने के लिए अपने पति, अपने सास-ससुर और कभी-कभी अपने बच्चों तक पर निर्भर रहती हैं. कार्य स्थल पर अपनी प्रोन्नति के लिए भी अपने बॉस तो कभी सहकर्मियों का सहारा लेती हुई देखी जा सकती हैं. समाज में अपनी हैसियत और पहचान के लिए समाज के धार्मिक और राजनीतिक ढाँचों में इन्हें अपनी "आइडेंटिटी" तलाश करनी पड़ती है. और अपने ही देश में अपने अधिकारों के लिए कानून के तराजू के दोनों पलड़ों के बीच पेंडुलम की भाँति इन्हें झूलना भी पड़ता है. बच्चों के परिप्रेक्ष्य में अगर बात की जाए तो बच्चे घर में माँ-बाप, दादा-दादी या घर की हेल्पर्स, स्कूल के लिए स्कूल वैन वाले पर, शिक्षकों पर, समाज में ऊँच-नीच, जाति-पाति, अमीरी-गरीबी आदि मापदंडों पर एवं देश में अपना स्थान जानने के लिए दमघोंटू परीक्षाओं और उन में हासिल हुए अंकों पर निर्भर रहना होता है. और यही स्थिति कमोबेश बुजुर्गों की भी है.

भारत का मिडिल क्लास कई बोझ ले कर जीता है. अपने से अगले वर्ग की तरफ बढ़ने की जद्दोजहद और स्वयं से नीचे वर्ग से खुद को बेहतर समझने के भंवर में यह वर्ग हमेशा किसी न किसी उलझन का शिकार नज़र आता है. बाजारवाद, स्त्रीवाद, दैहिक स्वतंत्रता, आर्थिक उन्नयन, बेरोक-टोक ज़िंदगी जीने की चाहत और नई पीढ़ी के द्वारा परिवार और शादी की संस्था को मिलने वाली चुनौतियों ने मिडिल क्लास को और भी भ्रमित किया है. दिल्ली जैसे मेट्रो झशहरों में एक सम्मानित ज़िंदगी घजीने के लिए अब विवाह योग्य जोड़ों के लिए नौकरी में होना पहली प्राथमिकता बन गई है क्योंकि महँगाई, बच्चों की अच्छी शिक्षा, बुजुर्गों की दवा और अपनी इच्छाओं की कीमत दो व्यक्तियों की कमाई के समक्ष

बौनी नज़र आती है. पति-पत्नी की कमाई में से एक की कमाई कभी होम लोन, कभी कार लोन, कभी एजुकेशन लोन तो कभी कोई और लोन चुकाने में चली जाती है. जिस हिसाब से महँगाई बढ़ती है उस हिसाब से आमदनी नहीं बढ़ती लेकिन जरूरतें और इच्छाएँ हर गणितीय समीकरण को तोड़ कर आगे बढ़ जाती हैं और उत्पन्न कर जाती हैं एक असमंजस की स्थिति. और इस स्थिति को कहा जाएगा - बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम (बी पी डब्ल्यू एस).

बोथ पैरेंट्स वर्किंग सिन्ड्रोम प्रायः मिडिल क्लास परिवार में देखने को मिलता है जहाँ 8 बजे सुबह माँ-बाप ऑफिस के लिए, बच्चे स्कूल के लिए, बुजुर्ग किसी क्लब, पुस्तकालय या पार्क के लिए निकल जाते हैं. बच्चे फिर दिन भर के लिए किसी दाई या घर में दादा-दादी हुए तो उनके सहारे पलने-बढ़ने लगते हैं लेकिन जिनकी जरूरत सबसे ज्यादा होती है वो ही कहीं देखे नहीं जाते हैं. इस तरह के माहौल में पले बच्चों के लिए माँ-बाप का आस पास नहीं होना एक "न्यू नार्मल" बन जाता है और घर पर जब माँ-बाप नहीं होते हैं तो वक्त काटने के लिए वो फोन, वीडियो गेम या किसी अन्य हॉबी का सहारा लेना शुरू कर देते हैं. बच्चे इस क्रम में एकाकीपन को एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में देखने लगते हैं और भीड़ या दोस्तों की टोली में खुद को जोड़ नहीं पाते और आगे चल कर यह भीड़ जो कभी प्रतिस्पर्धा बन जाती है, कभी सामाजिक प्राणी की जरूरत बन जाती है तो कभी सबसे बड़ी हक्रीकृत बन जाती है तो बच्चों में हीन भावना घर करने लगती है. शुरू में सबको यह सामान्य लगता है लेकिन जब बच्चा हर बात पर माँ-बाप से अपनी बात न कहकर छिपाने लगे, झूठ बोलने लगे, किसी गलत आदत या संगति का शिकार होने लगे तो बात चिंताजनक प्रतीत होने लगती है. माँ-बाप के होते हुए बिना माँ-बाप के सप्ताह के 5 से 6 दिन लगातार 12 से 15 घंटे किसी और के साथ काटना ही बच्चों को माँ-बाप से अलग करने लगता है. काम के बोझ के कारण माँ-बाप दोनों के लिए पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाना कठिन होने लगता है. आपस में तनाव बढ़ने लगते हैं और स्थिति अलग होने तक आ पहुँचती है और इन सब में इनके आक्रोश और दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है बच्चों को. बच्चे दूसरे बच्चों को घूमते देखते हैं, कुछ नया करते देखते हैं तो उन में भी वो सब अपने माँ-बाप के साथ करने की इच्छा जागृत होती है लेकिन समय की कमी, अरुचि, काम के तनाव की वजह से पर्याप्त समाधान नहीं पाकर बच्चे स्वयं के माँ-बाप को आँकना शुरू करते हैं, उन्हें कमतर समझने लगते हैं और उनके प्रति आदर भाव भी कम कर देते हैं जो एक परिवार के रूप में सबसे बड़ी हार मानी जा सकती है. ऐसे पैरेंट्स मानते हैं कि अभी कमा लेते हैं और बाद में सब इच्छाएँ पूरी कर लेंगे लेकिन वो बाद कभी नहीं आता. समय बदलने के साथ इच्छाएँ बदल जाती है और पिछली इच्छा की जगह कोई नई इच्छा उत्पन्न हो जाती है और उनको पूरा करने की तमाम मापदंड भी बदल जाते हैं. उदाहरण के तौर पर आज से 20 साल पहले कश्मीर देखने की इच्छा और अब कश्मीर देखने की इच्छा में ढेरों फर्क है. आज कश्मीर में 20 साल पहले जैसे बर्फ नहीं पड़ती, आज कश्मीर एयरपोर्ट पर क्लियरेंस के लिए 2 घंटे लाइन में खड़े रहना पड़ता है, डल झील तब इतनी गन्दी और सिकुड़ी नहीं हुआ करती थी. बच्चों की इच्छाएँ बारिश की बूँद की तरह होती हैं यदि उनको समय रहते सही मिट्टी मिले तो नया पौधा उग

सकता है और उन्हें यँ ही छोड़ दिया जाए तो धूप निकलते ही भाप बन कर कहीं उड़ जाएँगे और पीछे बच जाएगा- शून्य.

समाज में जो पहले से ही किसी और पर आश्रित है उन्हें और आश्रित नहीं आज़ाद बनाने की कवायद होनी चाहिए. माँ-बाप का अपने बच्चों के लिए कमाना कहीं से गलत नहीं है लेकिन जिसके लिए कमा रहे हैं उसी के लिए समय न निकाल पाना, उनसे बात ना कर पाना, उनके साथ खेल न पाना, उनकी तकलीफों और जरूरतों को ना समझ पाना बेहद गलत है. अगर दो व्यक्तियों की कमाई अपने ही बच्चे के चेहरे पर मुस्कान न ला सके तो कमाई में कोई कमी तो जरूर है. पैसे कमाने से ज्यादा जरूरी है बच्चे कमाना और इस में सिर्फ एक ही चीज़ का "इन्वेस्टमेंट" है - समय का. बच्चों के समय को अपना समय दीजिए, वरना यह समय निकल गया तो कोई समय इसे वापस नहीं ला सकता.

अब करो तैयारी जीत की

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



सोते हुए जन अब जाग जा,
तुम छोड़ दो राहें प्रीत की.
आ गई है परीक्षा की घड़ी,
अब करो तैयारी जीत की.

याद कर पिछले जीवन को,
गरीबी में जागे हो कई रात.
भूख से हो जाते थे बेहाल,
सामने आ रही बीती बात.

पिता के हाथों के छाले देख,
देख मां की चेहरे की झाईयाँ.
बिलखते थे घर में भाई-बहन,
याद करता था प्रभु साईयाँ.

तू जाग भोर के सूर्य से पहले,
पुस्तक तुम्हें दे रहा आवाज़.
आज ही से शुरू शिक्षा ग्रहण,
जीत की कर दो नव आगाज़.

योग, ध्यान और तन्मयता से,
सुकर्म करो कर्मवीर अध्येता.
संचित होगा ज्ञान का सागर,
तेरा भाग्य बनाएगा विजेता.

माता-पिता हर घर की शान है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



माता-पिता हर घर की शान है,
उनके बिना सब बेकार है.
माता पिता से समाज में नाम है,
हमारे लिए वह इंसान नहीं ईश्वर अल्लाह है.

माता-पिता से ही मेरी पहचान है,
दुनिया में बस यह दोनों ही महान है.
नहीं चाहिए मुझे कुछ यह मेरे सब कुछ है
मैं उनसे वह मुझसे बहुत खुश हैं.

जानवर से बदतर है जिसने किया,
माता-पिता का अपमान है.
किस्मत वाले हैं जिनके ऊपर,
अभी माता-पिता दृष्टि मान है.

सारे तीरथ बार बार के तुल्य,
माता पिता की सेवा एक बार है.
माता-पिता में ही गुरु समाया है,
हजारों पुण्य फल माता-पिता सेवा में समाया है.

माता पिता मेरे ईश्वर अल्लाह है,
यही जमीन मेरी और आसमान हैं.
वह खुदा मेरे और भगवान हैं,
माता पिता के चरणों में सारा जहान है.

ईश्वर अल्लाह से विनती मेरी है,
माता पिता के साथ स्थिर रखना मेरे पल.
समय का चक्र घूमता है पर कर दो अचल,
माता पिता के चरणों में रखना ना भटकूं आज ना कल.

हरेली तिहार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



बड़े बिहनिया सूरज जागे, काम काज जम्मो सकलागे.
खेत-खार मनखे ला भागे, परब हरेली संगी आगे.
नाँगर-बक्खर रापा गैती, धोये माँजे झटकुन चैती.
रगड़-रगड़ बइला नउहाये, चंदन- बंदन माथ सजाये.
रदरद-रदरद बरसे पानी, लइका लोग करय मनमानी.
भरे लबालब नदिया-तरिया, परे रिहिस जी जेहर परिया.
दाई चीला मीठ बनाये, गुड़ के चीला भोग लगाये.
गोल बनाये भइया लोंदी, देखत राहय बइठे कोंदी.
फूल दूध अउ लोंदी गोला, धर के जाये झटकुन भोला.
माई लोगिन सब सकलाये, नाग देव ला दूध पियाये.
हे भगवन रक्षा तैं करबे, दुख पीरा ला सब के हरबे.
खेत-खार मा डोलय पाना, तब मनखे ला मिलही दाना.
रच-रच, रच-रच चढ़हे गेड़ी, टांग-टांग के राखय एड़ी.
खो-खो फुगड़ी दौड़ लगाये, लइका लोगन सब सकलाये.
खोंचय भोंदू निमुआ डारा, धर के झोला घूमय पारा.
कन्द-मूल ला घर-घर बांटे, बीमारी ला ओहर काटे.

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से प्राकृतिक मौसम का असामान्य पैटर्न अति, जैव विविधता को नुकसान, वन्यजीवों के आवास का विनाश, अनेक जीवों की प्रजातियों की विलुप्ति, भूस्खलन, तूफान, जंगलों में आग, ज्वालामुखी जैसी अनेकों घटनाएं होती दिख रही हैं। जिसका मुख्य कारण पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का मानव द्वारा अति दोहन है। विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई 2022 के उपलक्ष्य में हम चर्चा करेंगे।

आज समय आ गया है कि हर मानव को तत्काल इसके संरक्षण रूपी यज्ञ में अपने सहयोग रूपी आहुति देनी होगी क्योंकि यह सिर्फ पर्व या उत्सव मनाने, भाषण देने, वार्तालाप करने से नहीं होगा बल्कि हमें इसे अपने आचरण में उतारना होगा। वास्तविक प्रकृति प्रेम तभी होगा जब पर्यावरण का संरक्षण होगा आइए, एक संकल्प लें कि अपनी ओर से पर्यावरण को संरक्षित करें। न केवल नए पौधे लगाएँ बल्कि पुराने पेड़ों के संरक्षण का भी प्रयास करें। जलस्रोतों को संरक्षित करने में आगे आएँ। विदेशों में सड़क के दोनों ओर हरियाली नजर आती है लेकिन अपने देश में सड़क के दोनों ओर पॉलीथिन उड़ती नजर आ जाएगी। सड़क पर दौड़ती कार के शीशे से चिप्स के रैपर, पॉलीथिन फेंकने वाले लोग भी हम में से ही हैं। वन्यजीवों के प्रति भी हमारे मन में उदासीनता का भाव है। चिड़ियाँ पानी के बगैर तड़प रही हैं। पेड़ लगाने के साथ-साथ पारिस्थितिक तंत्र को सुरक्षित रखने के लिए आगे आएँ। घर के बाहर चिड़ियों के लिए पानी रखें। यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि गोवंश पानी के लिए तड़प रहे हैं, अगर हम उन्हें पानी पिला लें तो यह भी पर्यावरण के प्रति हमारा योगदान होगा।

राष्ट्रीय आर्द्रभूमि (वेटलैंड) संरक्षण कार्यक्रम, नगर वाहन उद्यान योजना, प्रोजेक्ट टाइगर स्वच्छ भारत अभियान, मगरमच्छ संरक्षण परियोजना, यूएनडीपी समुद्री कछुआ परियोजना, प्रोजेक्ट हाथी, मत्स्य पालन अधिनियम 1897, भारतीय वन अधिनियम 1927 खनन और खनिज विकास विनियमन

अधिनियम 1957 पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम 1960, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972, जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1974, वन संरक्षण अधिनियम 1980, वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1981, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986

जैविक विविधता अधिनियम 2002, आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन नियम 2010 इत्यादि बनें हैं।

पृथ्वी ने हमें पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, भोजन आदि जैसी जीने के लिए बुनियादी सुविधाएँ प्रदान की हैं, इसलिए हमें प्रकृति को स्वच्छ और स्वस्थ रखना चाहिए। औद्योगिक विकास और कई अन्य कारक भी प्रकृति की बिगड़ती स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। हम जो भी करते हैं, वह दुनिया को प्रभावित करता है, क्योंकि दुनिया एक है और एक साथ जुड़ी हुई है, इसलिए जरूरी है पर्यावरण संरक्षण: प्रकृति का संरक्षण बहुत आवश्यक है। यहाँ तक कि वैज्ञानिकों ने भी हमें निकट भविष्य में बड़े पैमाने पर विलुप्ति को लेकर चेतावनी दी है। प्रकृति के बारे में कई शोधों से पता चला है कि संसाधन बर्बाद हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान में वृद्धि हो रही है। तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है और मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे जान का खतरा है। हम प्राकृतिक संसाधनों के साथ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ऐसे में दिन प्रतिदिन बिगड़ते पर्यावरण को लेकर चुनौती यह है कि सतत विकास को प्राप्त करने के साथ-साथ प्रकृति को कैसे संरक्षित किया जाए।

गिफोर्ड पिंचोट के अनुसार, संरक्षण का अर्थ मानव संसाधन की स्थायी भलाई के लिए पृथ्वी और उसके संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग से हैं। पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों में हवा, खनिज, पौधे, मिट्टी, पानी और वन्यजीव शामिल हैं। संरक्षण इन संसाधनों की देखभाल और सुरक्षा है ताकि इन्हें आने वाली पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

इस दिन का उद्देश्य विश्व को स्वस्थ रखने के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा करना है। साथ ही पौधों और जानवरों को बचाना, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं। प्रकृति के विभिन्न घटकों जैसे वनस्पतियों और जीवों, ऊर्जा संसाधनों, मिट्टी के पानी और हवा को बरकरार रखना है। बात अगर हम प्रकृति के संरक्षण के महत्व की करें तो, प्रकृति हमें हमारी दैनिक जरूरतों के लिए सभी आवश्यक चीजें प्रदान करती है। अधिक जनसंख्या और मानवीय लापरवाही के कारण हम अपने संसाधनों का अत्यधिक दोहन करने लगे। अगर ऐसा ही चलता रहा तो हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए कोई संसाधन नहीं बचेगा संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता है पारिस्थितिक संतुलन का समर्थन करके जीवन का समर्थन करना यह सुनिश्चित करने के लिए कि आने वाली पीढ़ियाँ संसाधनों तक पहुँच सकें, जैव विविधता के संरक्षण के लिए मानव जाति के जीवित रहने को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी हैं। वर्ष 2022 की थीम, केवल एक पृथ्वी है। इस मुहिम का नारा है प्रकृति के साथ सद्भावना में रहना। 50 साल बाद एक बार फिर 'केवल पृथ्वी' का नारा जो कि 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन में सबसे पहले दिया गया था, उसे आज फिर अपनाया गया है

बात अगर हम विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस के इतिहास की करें, पिछली शताब्दी के दौरान मानवीय गतिविधियों का प्राकृतिक वनस्पति और अन्य संसाधनों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। तेज़ी से बढ़ते औद्योगीकरण की तलाश और लगातार बढ़ती आबादी के लिए जगह बनाने के लिए वनों के आवरण को काटने से जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय प्रभाव पैदा हुए हैं। अफसोस की बात है कि यह दुनिया भर में प्रकृति संरक्षण के लिए इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर जैसे संगठन महत्वपूर्ण हैं लेकिन उसके बावजूद भी हम प्रकृति को संरक्षित करने में सफल नहीं हो पाए हैं।

हिंदी का स्वरूप व स्थान

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



जिस देश में हम पल बढ़कर बड़े हुए हैं, उस माटी के प्रति हमारा लगाव और प्रेम होना स्वाभाविक है. देश की वन संपदा, जीव जंतु, नदी, नाले, झरने, पहाड़, पशु पक्षी आदि से हमारा आत्मीय संबंध अपने आप ही स्थापित हो जाता है. सोचिए कि यदि देश की इन चीजों से हमारा इतना लगाव है तो देश की भाषा जिस के बिना हम मूक ही कहलाएँगे, से हमारा क्या संबंध होगा? किसी भी देश की भाषा उस देश के निवासियों के अंतर्मन और मस्तिष्क के भावों को आधार प्रदान करती है. भाषा के माध्यम से ही हम अपने भावों को दूसरों तक प्रेषित करते हैं और उन्हें अपने विचार समझा सकते हैं. भाषा के प्रयोग किए बिना कोई अंदाज नहीं लगा सकता कि हम कहना क्या चाहते हैं. संकेतों और हाव-भाव को समझना इतना आसान नहीं होता जितना बोल कर अपने आप को व्यक्त करना. हर बात हाव भाव और संकेतों के माध्यम से नहीं समझाई जा सकती.

हम सभी भारतवासी हैं और इस बात पर हमें गर्व है. भारत में अनेक बोलियाँ और भाषाएँ बोली जाती हैं. विविधता में एकता का प्रतीक है हमारा भारत. भारत में अनेक राज्य हैं और प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट पहचान है, अलग बोली, अलग भाषा है; किंतु इतनी विविधता के बाद भी हम सभी भारतवासी एक हैं और एक दूसरे की भाषा सहजता और आसानी से समझ सकते हैं.

भारत में चाहे जितनी भी भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हों, किंतु हिंदी का अपना विशिष्ट स्थान है. हिंदी भारत देश के भाल की बिंदी है अर्थात् यह शिरोधार्य है. अपने राष्ट्र की भाषा का सम्मान करना अपनी माता का सम्मान करने के बराबर है. जिस प्रकार हम अपने माता-पिता और पूर्वजों का आदर करते हैं उसी प्रकार हमारे हृदय में अपनी भाषा के प्रति भी सम्मान होना चाहिए और यह सम्मान किसी को दिखाने के लिए नहीं, अपितु महसूस करने के लिए होना चाहिए, सच्चे दिल से होना चाहिए.

निसंदेह, हिंदी बोलते समय प्रत्येक भारतवासी को गर्व का अनुभव होता है. जब विदेशों में भी लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं और हिंदी बोलते समय खुद को सम्मानित महसूस करते हैं, तो यह देखकर खुशी और गर्व से हमारा सीना चौड़ा हो जाता है. जरा सोचिए, हिंदी भाषी न होने के बावजूद भी विदेशों में हिंदी के प्रति क्रेज किस प्रकार बढ़ता जा रहा है, विदेश में रहने वाले लोग हिंदी बोल कर खुद को सम्मानित महसूस करते हैं. जब हिंदीभाषी न होने के बावजूद दुनिया के अनेक देश हिंदी के प्रति अपने हृदय में यह आदर और प्रेम रख सकते हैं तो हम तो हैं ही हिंदीभाषी, हमारे लिए तो हिंदी हमारी माता के समान है और अपनी माता के सम्मान को बरकरार रखना हम सबका परम दायित्व बनता है. अपने इस दायित्व को निभाने में हमें किसी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी चाहिए और पूरी ईमानदारी और गर्व के साथ इस जिम्मेदारी को निभाना चाहिए.

निसंदेह हमारे राष्ट्र में हिंदी का सम्मान किया जाता है और हिंदी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए हम हिंदी का प्रयोग करते हैं और खुद को गौरवान्वित भी महसूस करते हैं, किंतु कहा जाता है कि अपवाद तो हर जगह पाए जाते हैं. हमारी हिंदी भी इन अपवादों से खुद को बचा नहीं पाई है. कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे देश के लाखों लोग हिंदी भाषा बोलने में शर्म का अनुभव करते हैं व्यक्तिगत अपवादों को छोड़ भी दें तो भी अनेक प्रकार के सरकारी और गैर सरकारी दोनों ही प्रकार के शिक्षण संस्थानों और कार्यालयों में हिंदी प्रयोग को क्लिष्ट समझा जाता है और इसके स्थान पर विदेशी भाषाओं के प्रयोग को सहज समझकर प्रयोग किया जाता है. यह स्थिति अति दुखद है.

विदेशी भाषाएँ सीखना कदापि गलत नहीं, अपितु यह तो अच्छी बात है कि हम दूसरी भाषाओं को सीखने में रुचि दिखा रहे हैं और अपने सामान्य ज्ञान में निरंतर वृद्धि भी कर रहे हैं जो आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी. किंतु विदेशी भाषाओं को सीखकर अपने ही देश में उनका वर्चस्व स्थापित करने की अनुमति देना सरासर गलत है. अपनी भाषा के स्थान पर विदेशी भाषाओं को प्रयोग करना भी गलत है. अपनी भाषा के साथ-साथ विदेशी भाषाओं का प्रयोग स्वीकार्य हो सकता है. किंतु, विदेशी भाषाओं से अपनी भाषा को रिप्लेस करना स्वीकार्य नहीं है.

वर्तमान में अनेक कार्यालयों, संस्थानों और कंपनियों में हिंदी का न के बराबर प्रयोग किया जाता है. हिंदी के स्थान पर विदेशी भाषा का प्रयोग करने में ही वहाँ गर्व का अनुभव किया जाता है. हिंदी बोलने वाले कर्मचारियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है, ऐसा करना न केवल अनैतिकता की श्रेणी में आता है अपितु अपने राष्ट्र के सम्मान पर भी यह प्रहार है. भारत के असंख्य लोग हिंदी बोलने में शर्म का अनुभव करते हैं क्योंकि उनके अनुसार विदेशी भाषाओं के सामने हिंदी फीकी लगती है और हिंदी बोलने पर उनका अपमान होता है. इस प्रकार की सोच बेहद निंदनीय है, शर्मनाक है. निज भाषा के प्रति इस प्रकार की घटिया सोच या निम्न स्तर की मानसिकता ही हिंदी के पतन का मुख्य कारण बनती जा रही है. हिंदी के उत्थान की जिम्मेदारी हम सभी पर है. विदेशों में जिस भाषा को इतना प्यार और सम्मान दिया जा

रहा है उस भाषा की अपने ही घर में, अपने ही देश में इस प्रकार दुखद स्थिति देखकर मन आहत होता है। क्यों लोग यह भूल जाते हैं कि हमारी अपनी भाषा ही हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। विदेशी भाषाओं को सीखना सिखाना उस स्थिति में स्वीकार किया जा सकता है जब हम अपनी भाषाओं को प्रमुखता देकर अपनाएँ और जिस प्रकार विदेशी लोग अपनी भाषा के प्रति गौरव महसूस करते हैं, उसी प्रकार हम भी अपनी भाषा के गौरव को बनाए रखने की दिशा में हर संभव प्रयास करें। देश के बाहर इसके सम्मान को और भी ऊँचा उठाने के लिए हमें सार्थक प्रयत्न करने चाहिए।

हिंदी हमारा गौरव है, हमारा सम्मान है, हमारा अभिमान है, यह बात हमें कभी नहीं भूलनी चाहिए।

कुछ लोगों की निम्न मानसिकता के चलते हम हिंदी को बिसरा नहीं सकते। हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है इसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि विदेशों में आजकल हिंदी भाषी लोगों को अत्यधिक सम्मान और आदर की दृष्टि से देखा जाता है। भारत की ही तरह वहाँ भी हिंदी साहित्य सीखने की ललक लोगों में देखी जाती है। जिस प्रकार हमारे देश में हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, वहाँ भी इसी प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करने का चलन चल पड़ा है। भारत की संस्कृति को विदेशी उत्साह से अपना रहे हैं और सराह रहे हैं। निस्संदेह हिंदी के प्रति पूरे विश्व का प्रेम हिंदी को एक ऐसे स्तर पर लेकर जाएगा जहाँ हिंदी न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में अपना परचम लहराएगी। वह दिन दूर नहीं जब हिंदी न केवल भारत, अपितु समूचे विश्व के लिए गौरव का विषय बनेगी।

इस बात को हम नकार नहीं सकते कि वर्तमान में हिंदी की दशा शोचनीय है, किंतु हम सब मिलकर अपने सामूहिक प्रयासों से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांति लेकर आएँगे और हिंदी को इसका वास्तविक अधिकार और स्थान दिला कर रहेंगे। हिंदी हमारी आत्मा में बसती है। किसी ने सही ही कहा है कि - आप चाहे दुनिया की जितनी भी भाषाएँ क्यों न सीख लें किंतु दुख, तकलीफ और यहाँ तक की सपनों की दुनिया में भी आप अपनी मातृभाषा में ही संवाद करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम हिंदीभाषी, हिंदी के सम्मान पर अब कोई आँच नहीं आने देंगे, हम इसका गौरव बढ़ाएँगे और कहीं भी इसका अपमान नहीं होने देंगे। हम हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे क्योंकि हिंदी है तो हम हैं, हिंदी है तो हमारा राष्ट्र है। अपने राष्ट्र के अस्तित्व को संरक्षित करने अपनी संस्कृति को अगली पीढ़ियों तक हस्तांतरित करने हेतु हमें अपनी भाषा को स्नेह पूर्वक संरक्षित करना होगा और इसके प्रयोग में गर्व महसूस करना होगा। यदि हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति को बनाए रखना है तो हमें हिंदी को हर हाल में उसकी जगह दिलानी होगी।

हिंदी भाषा के प्रति अपने मन के उद्गार में निम्न पंक्तियों में अपने पाठकों के समक्ष रखना चाहती हूँ:

मातृभाषा का नाम है हिंदी
देश का अपने सम्मान है हिंदी

है ये सब भाषाओं से न्यारी
हर हिंदुस्तानी का अभिमान है हिंदी
कश्मीर का सौंदर्य है हिंदी
पंजाब का बांकपन है हिंदी
है राजस्थान की संस्कृति निराली
हरियाणा का अपनापन है हिंदी
सभ्यता का हम पर एहसान है हिंदी
कण कण में विद्यमान है हिंदी
भारतवर्ष को करती ये अलंकृत
विदेशों में भी शोभायमान है हिंदी
ऋतुओं का आगमन है हिंदी
त्योहारों का मनाना है हिंदी
नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाती
जीने का जीवन नाम है हिंदी
देश का गुणगान है हिंदी
हर जन का स्वाभिमान है हिंदी
बड़ी से बड़ी कठिनाई को
पल भर में बनाती ये आसान है हिंदी
भारत का दूजा नाम है हिंदी
सबकी आन बान और शान है हिंदी
जोड़े रखती सबको संग अपने
अनेकता में एकता का नाम है हिंदी
नस नस में विराजमान है हिंदी
दिलों में दैदीप्यमान है हिंदी
भीड़ से हटकर बनाई है जिसने
एक अलग पहचान है हिंदी

समाधान प्रकृति में हैं

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



प्रकृति में कई प्रकार की प्रजातियाँ एक पारिस्थितिकी तंत्र में कार्य करती हैं. प्रत्येक जीव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ-साथ पर्यावरण के अन्य जीवों के लिए भी कुछ उपयोगी योगदान देता है. विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस हर साल 28 जुलाई को मनाया जाता है ताकि यह पहचाना जा सके कि एक स्वस्थ पर्यावरण, एक स्थिर और उत्पादक समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए नींव है.

प्रजातियाँ ऊर्जा का भंडारण और उपयोग करती हैं, कार्बनिक पदार्थों का उत्पादन और विघटन करती हैं, पूरे पारिस्थितिकी तंत्र में पानी और पोषक तत्वों के चक्र का हिस्सा हैं, वातावरण में गैसों को ठीक करती हैं और जलवायु को विनियमित करने में भी मदद करती हैं. इस प्रकार, वे मिट्टी के निर्माण, प्रदूषण को कम करने, भूमि, जल और वायु संसाधनों की सुरक्षा में मदद करती हैं. जैव विविधता के ये कार्य पारिस्थितिक तंत्र के कार्यों और स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं.

विभिन्न पौधे, जानवर और सूक्ष्मजीव जो जैव विविधता का निर्माण करते हैं, हमें अनाज, मछली आदि जैसे खाद्य पदार्थ प्रदान करते हैं, हमारे कपड़ों के लिए फाइबर जैसे कपास, ऊन आदि, जीवित रहने के लिए ईंधन लकड़ी के साथ-साथ नीम जैसे दवा उत्पाद भी प्रदान करते हैं. जैव विविधता स्थानीय और साथ ही वैश्विक जलवायु को नियंत्रित करती है, ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों के वैश्विक स्तर का प्रबंधन करती है, मीठे पानी की गुणवत्ता बनाए रखती है, कार्बन सिंक आदि के रूप में कार्य करके कार्बन को अवशोषित करती है. इस प्रकार जैव विविधता जीवन को नियंत्रित करती है.

जैव विविधता परागण, पोषक तत्वों के चक्रण के साथ-साथ पुनर्चक्रण, ग्रीनहाउस गैस को कम करने में मदद करती है. जैव विविधता हमें सौंदर्य सुख प्रदान करती है. समृद्ध जैविक विविधता पर्यटन को प्रोत्साहित करती है. कई समुदायों और संस्कृतियों ने जैविक रूप से विविध वातावरण द्वारा प्रदान किए गए परिवेश और संसाधनों के साथ सह-विकसित किया है. इसलिए, यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक

भूमिका भी निभाता है. जैव विविधता द्वारा प्रदान की जाने वाली महत्वपूर्ण सेवाएँ हैं: मनोरंजन और विश्राम, पर्यटन, विशेष रूप से पारिस्थितिकी पर्यटन, कला, डिजाइन और प्रेरणा आध्यात्मिक अनुभव.

जैव विविधता खाद्य जाल को बनाए रखने में मदद करती है. इसलिए, प्रत्येक प्रजाति के जीवित रहने की संभावना अधिक होती है. इसके परिणामस्वरूप अधिक स्थिर खाद्य श्रृंखलाएँ और खाद्य जाल बनते हैं. जैव विविधता वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा और निगरानी में मदद करती है. जैव विविधता, इस प्रकार, जीवन के कामकाज और भूमिका को समझने में मदद करती है जो प्रत्येक प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने में भूमिका निभाती है जिसका एक हिस्सा हम मनुष्य भी हैं.

विशेष रूप से, प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र का फसल भूमि में परिवर्तन, रेल और सड़क मार्ग जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का विकास, शहरीकरण और खनन गतिविधियों में वृद्धि से जीवों के निवास स्थान का नुकसान और विखंडन भूमि उपयोग के परिवर्तन के माध्यम से हुआ है. लिविंग प्लैनेट की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 40 वर्षों में लगभग 50% उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय वन और 45% समशीतोष्ण घास के मैदानों को मानव उपयोग के लिए परिवर्तित कर दिया गया है. कुछ नुकसान के अलावा, प्रदूषण से कई आवासों का क्षरण भी कई प्रजातियों के अस्तित्व को खतरे में डालता है.

अधिक शिकार या प्रजातियों का अवैध शिकार, पौधों के उत्पादों की अधिकता और अधिक कटाई से जैव विविधता में तेजी से गिरावट आ सकती है. मानव के बदलते उपभोग पैटर्न को अक्सर प्राकृतिक संसाधनों के इस सतत दोहन के प्रमुख कारण के रूप में उद्धृत किया जाता है. कई प्रजातियाँ जो पिछली 5 शताब्दियों में विलुप्त हो गईं, जैसे स्टेल्स की समुद्री गाय, यात्री कबूतर, मनुष्यों द्वारा अति-शोषण के अधीन थीं. इसी तरह प्लास्टिक प्रदूषण से जानवरों की मौत होती है. साथ ही, उद्योगों और वाहनों से वायु प्रदूषण के कारण शहरी क्षेत्रों में कई पक्षी प्रजातियों की मृत्यु हुई है.

वन्य जीवन, पौधे और पशु संसाधनों और क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों के पारंपरिक जीवन के संरक्षण के लिए संरक्षित भूमि के बड़े क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यान व वन्य जीव अभ्यारण्य हो सकते हैं. भारत के आदिवासियों ने वनों की जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आदिवासियों ने पवित्र उपवनों में वनस्पतियों और जीवों का संरक्षण किया है. अन्यथा, ये वनस्पति और जीव प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र से गायब हो गए होते. सरकार को क्षेत्र में अपनी एजेंसियों और इन वनों पर निर्भर लोगों के बीच विश्वास पैदा करने का प्रयास करना चाहिए, उन्हें देश में हर किसी की तरह समान नागरिक माना जाना चाहिए.

आज की वैश्वीकृत दुनिया में वन्य जीवन और प्रकृति के संरक्षण ने अधिक महत्व ग्रहण कर लिया है. दूसरों के जीवन की देखभाल और प्रकृति के लिए सहानुभूति हमें मानसिक रूप से हमारी प्रकृति के साथ जोड़ सकती है जो हमें उपभोग के लालच से छुटकारा दिला सकती है जिसने हमारे पर्यावरण को

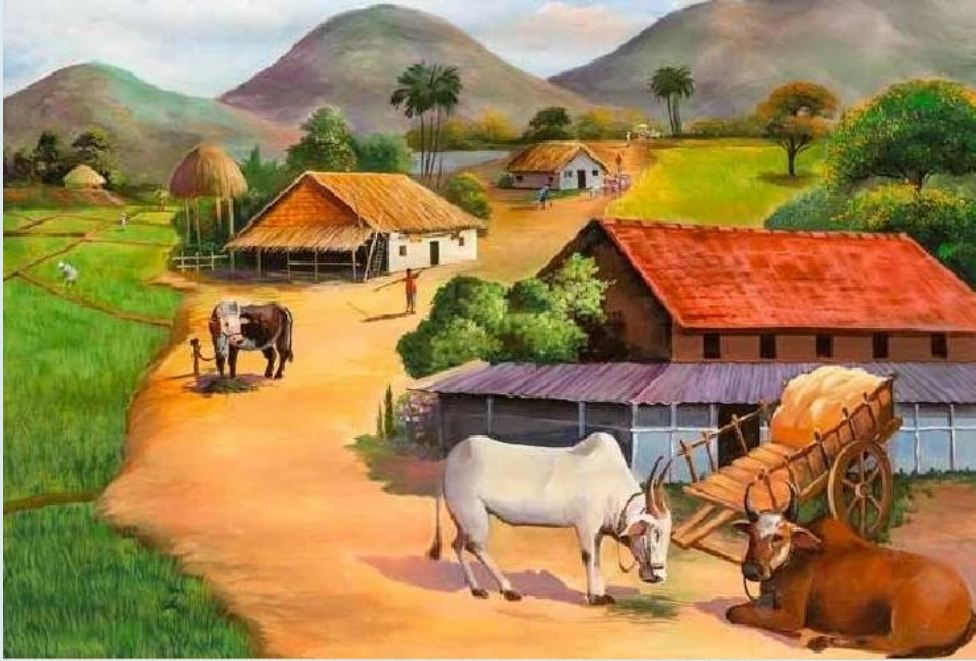
नष्ट कर दिया है. विकसित राष्ट्र इस बात से अवगत हैं कि उनका विकास प्रकृति या अन्य विकासशील देशों की कीमत पर नहीं हो सकता है. संरक्षण पर सार्वजनिक करुणा को बढ़ावा देने से इन प्रयासों में मजबूत तालमेल हो सकता है.

पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों में हवा, पानी, मिट्टी, खनिज, ईंधन, पौधे और जानवर शामिल हैं. इन संसाधनों की देखभाल करना और इनका सीमित उपयोग करना ही प्रकृति का संरक्षण है ताकि सभी जीवित चीजें भविष्य में उनके द्वारा लाभान्वित हो सकें. प्राकृतिक, संसाधन और पर्यावरण हमारे जीवन और अस्तित्व का आधार हैं. प्रकृति है तो जीवन है, जीवन है तो मानव है, मानव है तो मानवता है. प्रकृति संरक्षण सबसे बड़ा पुण्य का काम है. हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमारा संबंध ब्रह्मांड के उस सबसे अनोखे ग्रह से है जिस पर जीवन है.

लेकिन हमारी जीवनशैली के कारण केवल मानव ही नहीं बल्कि सभी जीवों के अस्तित्व पर गंभीर संकट खड़ा हो गया है. हम ये भी कह सकते हैं कि हमारे इस सबसे अनोखे ग्रह पर जीवन के अस्तित्व का खतरा पैदा हो गया. विश्व प्रकृति दिवस पर आइये हम मिलकर संकल्प लें कि प्रकृति संरक्षण ही हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी. लेकिन ये कानून की बाध्यता से संभव नहीं है ये हमारे और आपके सामूहिक प्रयास से ही संभव हो सकेगा.

गांव

रचनाकार- सौम्या वर्मा



गांव है मेरा प्यारा- प्यारा,
सभी गांव से है ये निराला.
सभी खेतों में लहराता धान.
खुश होते हैं सभी किसान.
सभी किसान मेहनत करते,
खून -पसीने एक कर देते.
खेत में है फसल लहराती.
यह दृश्य सभी को भाती.
यहां है कई किसम के पेड़.
आम, जामुन, इमली और बेर.
जब तीज -त्यौहार है आते.
सभी मिलकर खुशी मनाते.
सभी बच्चे स्कूल हैं जाते.
और सभी ज्ञान है पाते.
यहां के शिक्षक हैं बड़े ज्ञानी.
सदा बोलते मीठी वाणी.
जब हम पुस्तक को हैं पढ़ते.

नई-नई हम बातें सीखते.
यहां के घर है भले ही कच्चे.
लेकिन सभी है दिल के अच्छे.
मिलकर सब हम काम है करते.
एक दूजे की मदद है करते.
फसलों का ढेर है सारा,
गांव है मेरा प्यारा -प्यारा.
सभी गांव से हैं ये निराला,
कितना सुंदर कितना प्यारा.
सबसे सुंदर गांव हमारा.

मां

रचनाकार- सौम्या वर्मा



मां ये हमारी जग से निराली.
मेरी मां है कितनी प्यारी.
सुबह से उठकर काम है करती.
झाड़ू, पोछा, बर्तन करती.
मां समय पे भोजन कराती,
और हमें प्यार है करती.
कितने कष्ट वह है उठाती,
और अच्छी बातें हैं सिखाती.
मां है ममता की मूरत.
और करुणा की है सूरत.
मां का तुम आदर करो.
और उनकी सेवा करो.
पिताजी है मेरे सहारे.
वो भी हैं सबसे प्यारे.
पिता हमारे लिए काम है करते.

और जरूरतों को पूरा करते.
मेरा है एक प्यारा भाई,
सबसे प्यारा मेरा भाई,
सबसे प्यारी दादी मां,
मेरी अच्छी दादी मां,
सबसे प्यारे मेरे चाचा,
सबसे अच्छे मेरे चाचा.
मेरे सभी परिवार के जन,
सभी का अच्छा है मन.
परिवार ही है सबसे बड़ा धन.

जीवन युद्ध

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



इतना आसान नहीं यहां जीवन जीना,
हर घड़ी घुट-घुट कर मरना पड़ता है.
कभी अपने लिए कभी अपनों के लिए,
कुरुक्षेत्र मन मैदान में लड़ना पड़ता है.

भटक गया हूं विकराल कंटक वन में,
कई विचित्र आवाज़ सुनाई दे रही मुझे.
डर से कांप रहा है रोम-रोम, बदन अंग,
प्रार्थना कर चीखता पुकार रहा हूं तुझे.

घनी अंधेरी रात में घिर गया मृत्यु बादल,
पल-पल दे रहा कोई बिजली के झटके.
पीट रहा था बारिश की बूंदे बनकर कोड़े,
तेज हवाएं उड़ते हुए जमीन पर पटके.

पेड़ों में दिखा प्रेत छाया सफेद कंकाल,
कई अस्त्रों और शस्त्रों को धारण किए.
वार से घायल खून से लथपथ दम तोड़ा,
शिक्षाविद् शामिल अंतिम यात्रा के लिए.

स्वयं बनकर सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी अर्जुन,
कर्म संशय में घिरा रहता हूं रात-दिन.
कृष्ण बन दो कोई मुझे गीता उपदेश,
कर्तव्यों का बोध हो मैं हो गया खिन्न.

उज्ज्वल भारत उज्ज्वल भविष्य की गाथा की एक कड़ी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत जैसे प्राकृतिक संसाधन संपन्न देश में बड़े बुजुर्गों की कहावतें पत्थर की लकीर साबित होने में कोई कोर कसर नहीं छोड़तीं, बड़े बुजुर्गों ने कहा है कि सपने देखो तो ही साकार करने में प्रयास करोगे, सकारात्मक सोचोगे तो परिणाम उच्च गुणवत्ता पूर्वक पाओगे और सटीक रणनीतिक विज्ञान बनाओगे तो प्रयास करने में रुचि होगी और असफल होते होते जरूर सफल होकर मंजिल तक पहुँचकर नेतृत्व का परचम लहराओगे, बिल्कुल सटीक.

कुछ वर्षों से सटीक रणनीतियों, रणनीतिक विज्ञान पर काम हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप अधिक सफलताएँ कायम हो रही हैं. हाल ही में रामसर अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्र भूमियों में 5 और भारतीय आर्द्र भूमि को मान्यता मिल गई है और भारत में अंतरराष्ट्रीय आर्द्रभूमियाँ बढ़कर 54 हो गई है, जो भारत के लिए गर्व की बात है.

पानी में स्थित मौसमी या स्थायी पारिस्थितिक तंत्र जिनमें दलदल, नदियाँ, झीलें, डेल्टा, बाढ़ के मैदान चावल के खेत, समुद्री क्षेत्र, तालाब और जलाशय आदि शामिल होते हैं आर्द्रभूमि कहलाते हैं. यह जल एवं स्थल के मध्य का संक्रमण क्षेत्र होता है जैव विविधता की दृष्टि से आर्द्रभूमि एक समृद्ध क्षेत्र होता है जिसका संरक्षण अति आवश्यक है.

साथियों आर्द्रभूमि क्षेत्र पृथ्वी पर सबसे उत्पादक पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है जो मानव समाज के लिए कई महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करता है और मानव के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे सिंचाई के लिए पानी, मत्स्य पालन, पानी की आपूर्ति और जैव विविधता का रखरखाव आदि. इसके साथ ही यह क्षेत्र पानी को अवशोषित करके बाढ़ के प्रभाव को भी नियंत्रित करता है एवं पानी के प्रवाह की गति को भी कम करता है.

स्थलाकृतिक भिन्नता के आधार भारत में आर्द्रभूमि को 4 वर्गों में वर्गीकृत किया गया है

- (1) हिमालयी आर्द्रभूमि
- (2) गंगा का मैदानी आर्द्रभूमि
- (3) रेगिस्तानी आर्द्रभूमि
- (4) तटीय आर्द्रभूमि.

रामसर ईरान का एक शहर है जहां 2 फरवरी 1971 को आर्द्रभूमि के संरक्षण और उनके प्रबंधन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे इसी संधि या समझौते को रामसर समझौता के नाम से जाना जाता है इस संधि का उद्देश्य संपूर्ण विश्व के सभी महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि स्थलों की सुरक्षा करना है यह समझौता 21 दिसंबर 1975 से प्रभाव में आया.

भारत ने अंतरराष्ट्रीय महत्व के पाँच नए आर्द्रभूमि स्थल नामित किए हैं, जिसमें तमिलनाडु में तीन आर्द्रभूमि स्थल (करीकिली पक्षी अभयारण्य, पल्लिकरनई मार्श रिजर्व फॉरेस्ट और पिचवरम मैंग्रोव), मिजोरम में एक (पाला आर्द्रभूमि) और मध्य प्रदेश में एक आर्द्रभूमि स्थल (साख्य सागर) शामिल हैं. इस प्रकार, देश में रामसर स्थलों की कुल संख्या 49 से बढ़कर 54 हो गयी है.

किसी भी स्थल के रामसर साइट घोषित होने के बहुत फायदे हैं क्योंकि अगर किसी भी क्षेत्र को रामसर साइट के रूप में मान्यता दी जाती है तो उस क्षेत्र का रखरखाव करने, उसकी आधारभूत संरचना के विकास, प्रकृति संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ के द्वारा वित्त पोषण किया जाता है.

भारत की रामसर आर्द्रभूमि 11,000 वर्ग किमी में फैली हुई है, देश में कुल आर्द्रभूमि क्षेत्र का लगभग 10 फ़ीसदी, 18 राज्यों में हैं. किसी अन्य दक्षिण एशियाई देश में उतने स्थल नहीं हैं, हालांकि इसका भारत की भौगोलिक चौड़ाई और उष्णकटिबंधीय विविधता से बहुत कुछ लेना-देना है. यूनाइटेड किंगडम (175) और मैक्सिको (142), भारत से छोटे देशों में अधिकतम रामसर स्थल हैं जबकि बोलीविया कन्वेंशन संरक्षण के तहत 148,000 वर्ग किमी के साथ सबसे बड़े क्षेत्र में फैला है. रामसर साइट नामित होने के कारण अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय धन को आमंत्रित नहीं किया जाता है, लेकिन राज्यों और केंद्र को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भूमि के इन इलाकों को संरक्षित किया जाए और मानव निर्मित अतिक्रमण से बचाया जाए. इस लेबल को प्राप्त करने से स्थानीय पर्यटन क्षमता और इसकी अंतरराष्ट्रीय दृश्यता में भी मदद मिलती है. 1981 तक, भारत में 41 रामसर स्थल थे, हालांकि पिछले दशक में नई साइटों को नामित करने में (13) सबसे तेज वृद्धि देखी गई है.

रामसर साइट होने के लिए, इसे 1961 के रामसर कन्वेंशन द्वारा परिभाषित नौ मानदंडों में से कम से कम एक को पूरा करना होगा, जैसे कि कमजोर, लुप्तप्राय या गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों या संकटग्रस्त पारिस्थितिक समुदायों का समर्थन करना या, यदि यह नियमित रूप से 20, हजार या अधिक जलपक्षियों

का समर्थन करता है. या, मछलियों के लिए भोजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, स्पॉनिंग ग्राउंड, नर्सरी और/या प्रवास पथ जिस पर मछली का स्टॉक निर्भर है.

आर्द्रभूमि के संरक्षण और प्रबंधन के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2012-13 में राष्ट्रीय आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम शुरू किया था इसके तहत भारत में आर्द्रभूमि के संरक्षण और प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए. हालांकि राष्ट्रीय आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम भारत में 1987 से ही राष्ट्रीय आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम पूरे देश में आर्द्रभूमि संरक्षण की गतिविधियों को समर्थन दे रहा है. इस कार्यक्रम के तहत आर्द्रभूमि क्षेत्रों को चिह्नित कर संरक्षण एवं प्रबंधन के लिये केंद्र सरकार, राज्यों एवं संघशासित प्रदेशों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है.

इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश में आर्द्रभूमि के क्षय को रोकते हुए इसका बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग सुनिश्चित कर स्थानीय समुदाय को लाभान्वित करने के साथ ही संपूर्ण रूप से जैव विविधता का संरक्षण करना है. कार्यक्रम के तहत निम्न पहल की गई हैं आर्द्रभूमि के संरक्षण और प्रबंधन के लिये देश में नीति प्रारूप तैयार करना. चिह्नित की गई आर्द्रभूमि के संरक्षण के प्रयास को वित्तीय सहायता देना. लागू कार्यक्रमों का नियंत्रण. भारतीय आर्द्रभूमि पर अनुसंधान कार्यक्रम, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने आर्द्रभूमि (संरक्षण एवं प्रबंधन) नियम, 2010 को अधिसूचित किया है जो आर्द्रभूमियों को संरक्षण प्रदान करता है. इसके तहत आर्द्रभूमि को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों, जैसे- औद्योगीकरण, निर्माण, अशोधित कचरे की डंपिंग आदि को चिह्नित किया गया और आर्द्रभूमि क्षेत्रों में इन गतिविधियों वि का निषेध कर दिया गया. केंद्रीय आर्द्रभूमि नियामक प्राधिकरण का गठन नियमों के सही ढंग से क्रियान्वयन के लिये हुआ है. इसमें आवश्यक सरकारी प्रतिनिधियों के अतिरिक्त आर्द्रभूमि संबंधी विशेषज्ञ भी शामिल किये गए हैं.

जड़ सूत्र

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया



आज ज्यादा ही गहमा गहमी थी. दुकानें सज चुकी थीं. रंग-बिरंगे फीते, फुंदरे, चूड़ियाँ, मेहंदी सब दुकानें स्थानीय हाट में सज चुकी थी. “नन्ही” के पाँवों में जैसे आज पंख लगे थे. लाल चट्ट पीले जेब वाले फ्राँक की जेब में हाथ डाले वह पहाड़ की ढलान से तेजी से उतर रही थी. उसे बाजार देखने की इतनी उत्सुकता थी. मानो पूरा दृश्य ही आँखों में आँज लेना चाहती थी. पहाड़ी से नीचे उतरते वक्त उसने उस "किशोर पेड़" की ओर देखा और कहा कि हम जल्दी ही लौट आयेंगे.

अनाथ नन्ही पहाड़ी पर स्थित मंदिर में ही पली थी. कोई छोड़ गया था उसे! उसका “न तो आगे नाथ न पीछे पगहिया”. उसे रिश्ते नातों की परिभाषा ही नहीं मालूम. जब कोई त्यौहार आता तो बड़ी उत्सुकता से सबको निहारा करती. बच्चियों के हाथों से सुंदर नेलपालिश, कलाइयों में सजी प्लास्टिक की चूड़ियाँ, चट्ट लाल रिबन उसे दुनिया के सबसे महंगे ऐश्वर्य लगते थे.

उसका मित्र, रिश्ते, नाते, भगवान सब वही एक पेड़ ही था. जिसकी गोद में घंटों बैठकर पहाड़ी से नीचे की बस्ती को वह ताका करती थी. पहाड़ी पर स्थित मंदिर में आने जाने वालों को देखा करती थी. अभिभावकों के साथ आने वाले नन्हे बच्चों को वह अपलक निहारती. अगर कोई बच्चा मुस्कराया तो वह दो गुने ब्याज वाली मुस्कराहट से मूलधन वापिस करती. उसे बड़ा आश्चर्य होता कि ये बच्चे अपनी माँ के आँचल या पिता की ऊँगलियाँ क्यों पकड़े रहते हैं? उसने तो अकेले चढ़ना, उतरना, लुढ़कना, गिरना फिर संभलना सीखा. नन्हीं चंपई रंग, सूरज मुखी से बाल, कंचो सी आँखें. कभी कभी

तो फ्राक की अधूरी चेन से उसकी पीठ भी भीग जाती थी. पेड़ की जड़ों में बैठ बतिया रही थी. चिंता मत करो अबकी नेलपालिश मिलेगी तो तुम्हारे पैरों (जड़ों) में भी लगा देंगे.

नन्ही को थक कर सोना हो तो पेड़ की छाँव, उदास हुई तो पेड़ की गोद, छुपा-छुपाई खेलना हो तो पेड़ की ओट, दूर नीचे तक ताकना हो तो पेड़ की शाखायें, पैर में आलता लगाना हो तो जड़ों का रस. और न जाने क्या क्या वह एक अकेला पेड़ 'नन्ही' की कितनी ख्वाहिशों को पूरा करता था और उसके अधूरे, अधपके सपनों का गवाह भी वही था.

आज नन्ही फूली नहीं समा रही थी. मंदिर के चढ़ावे में से उसे नेलपालिश भी मंदिर के पुजारी ने दी थी. रिबन को उसने जैसे-तैसे अपनी चोटी में गूँथ लिया और धड़धड़ाते हुए जा पहुँची पेड़ के पास. उदास मत हो हम तुम्हारे लिये भी कुछ लाये हैं. फिर उसने जमीन में उभरी बेतरतीब जड़ों में थोड़ा थोड़ा नेलपालिश लगा दिया. अचानक तेज हवा से सारे पत्ते बातें करने लगे. उन्हे भी यह श्रृंगार भा गया.

आज नन्ही के मन में बेहद उथल पुथल थी. भगवान की थाली में राखियाँ चढ़ाई जा रही थीं. उसकी मति ने इतना तो जान ही लिया था कि यह भाई को बाँधी जाती है. बदले में उपहार मिलता है. रंग बिरंगी राखियाँ, बेलबूटे फूंदरे वाली चकमक राखियाँ अहा. पुजारी जी ने उसे एक राखी उसके बाल मन का मान रखने के लिये दे दी थी. यही राखी नन्ही की परेशानी का कारण थी. वह बाँधे तो किसे? अगर बाँध भी दे तो बदले में उसके नन्हे मन को उपहार की भी लालसा थी.

धीरे धीरे दोपहर हो चली. शाम होने वाली है, न जाने कब नन्ही के कदम उसी पेड़ की ओर मुड़ चले. नन्ही सी जान, अर्ध विकसित मति ने न जाने क्या सोचकर पेड़ की जड़ में राखी बाँध दी. "प्रकृति ने कोई भी चीज राईट एंगल से नहीं बनाई है. उसने सभी अवयवों को पनपने और फलने फूलने का मौका दिया तभी से जड़ें भी बिंदास उगीं थीं."

अचानक हवाओं से पत्तों से सरसराहट व डालियों के लचकने की आवाज आई मानो उस पेड़ को भी किसी सूत्र या कहिये उसी 'जड़ सूत्र' का इंतजार था. बदले में उपहार स्वरूप वह नन्ही से कह रहा था मैं आजीवन तुम्हारी रक्षा करूँगा. भला ऐसा कहीं नेह का बंधन किसी ने देखा होगा. संवादहीन संप्रेषण पेड़ व नन्ही के बीच हो चुका या गवाह थी- जड़ सूत्र.

अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सृष्टि ने मानव को अनमोल बौद्धिक क्षमता का धनी बनाया. फिर मानव ने अपनी बौद्धिक क्षमता को खूब निखारा और इस हद तक पहुँच गया कि अपने सृजनकर्ता को ही विज्ञान के रूप में चुनौती देने पर उतारू हो गया है. परंतु मानव का अगर हम दूसरा पक्ष देखें तो उसने अपने सृजन से ही अनमोल रिश्ते नातों की श्रृंखला बनाई है. जैसे जन्म देने वाले माता-पिता, भाई-बहन, चाचा चाची, नाना-नानी, सहित अनेक रिश्ते की डोर बनाई है, परंतु इन सबसे हटकर एक अन्य महत्वपूर्ण रिश्ता बनाया जिसे मित्र, दोस्त, नाम से पुकारा जाता है. यह रिश्ता बहुत प्यारा होता है, जिसका मूल्य समय आने पर पता चलता है. उपरोक्त रिश्ता नातेदारी से भी महत्वपूर्ण ज्ञात होता है, जब विपत्तियों में उसका साथ मिलता है. जिसका उदाहरण हम अभी दो वर्ष पूर्व से देख रहे हैं कि कोविड-19 जैसी गंभीर महामारी में इस दोस्त रूपी अनमोल रिश्ते ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जबकि रिश्तेदारों के भी पीछे हटने की नौबत आन पड़ी थी.

जीवन में मित्र का होना बहुत जरूरी है. वह मित्र ही होता है जिसके साथ हम बहुत कुछ बाँट सकते हैं. जो हमारे कई राजों का राजदार होता है. वो मित्र एक पिता हो सकता है, पत्नी हो सकती है, कुदरत हो सकती है. कोई भी हमारा मित्र हो सकता है बस जरूरत है तो उसे दिल से अपनाने की. जीवन में सभी को एक सच्चे दोस्त की जरूरत पड़ती है जिसके साथ वह सुख दुःख बाँट सके. मित्रता एक ऐसा खूबसूरत रिश्ता है जिसे मनुष्य स्वयं बनाता है. बुरे समय में सच्चा मित्र हमें सही उपाय बताता है, जिसकी वजह से हम मुसीबत से निकल पाते हैं. सच्चा मित्र हमें गलत राह पर चलने से रोकता है और सही सलाह देता है.

मित्रता अनमोल रत्न के समान होती है. जीवन में सच्चा मित्र मिलना सौभाग्य से कम नहीं होता है. वह मनुष्य के सुख को बढ़ा देता है और उसके दुःख को बाँट लेता है. सच्चा मित्र मुश्किल घड़ी में अपने दोस्त का साथ देता है. सच्चा मित्र हो तो जिन्दगी के मुश्किल भरे पल भी सरल हो जाते हैं. भगवान्

श्रीकृष्ण और सुदामा की दोस्ती की मिसाल सभी देते हैं। उनकी मित्रता का उदाहरण आज भी दिया जाता है। मित्रता में कोई भेदभाव नहीं होता है। कौन कितना अमीर है, कौन कितना गरीब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। सच्चा मित्र रोशनी की भाँति अपने मित्र को सही राह दिखाता है। सच्चे मित्र का साथ ऐसा होता है जैसे अँधेरे में रोशनी और मुश्किल हालातों में हौसला।

मुश्किल हालातों में सच्चा मित्र हमेशा साथ देता है और अपने मित्र को संभालता है। जीवन की मुश्किलों को सरल एक सच्चा मित्र बना सकता है। वह अपने मित्र का हमेशा भला चाहता और उसकी परवाह करता है। सच्चे मित्र की कद्र हमेशा करनी चाहिए। एक सच्चा मित्र जीवन में मानसिक संतुष्टि लाता है। वह हमारी खामियों को नज़र अंदाज़ करके हम जैसे हैं वैसे ही हमें अपनाता है। सच्चा मित्र सही मायनों में अनमोल रत्न और कीमती संपत्ति की भाँति होते हैं। संपत्ति और धन को वापस पाया जा सकता है, लेकिन सच्चे मित्र की मित्रता खोने से वह वापस नहीं आती है।

वर्ष 2022 में अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस की थीम दोस्ती के माध्यम से मानवीय भावना साझा करना पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को दोस्ती को बढ़ावा देने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गतिविधियों को आयोजित करने के लिए सरकारों और सामुदायिक समूहों को प्रोत्साहित करके शांति, एकता, सहयोग और खुशी के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए चुना है। हालांकि भारत में फ्रेंडशिप डे अगस्त के पहले रविवार को मनाया जाता है, इस साल भारत में फ्रेंडशिप डे 7 अगस्त को मनाया गया।

इंटरनेशनल फ्रेंडशिप डे एक पहल है, जिसके बाद यूनेस्को द्वारा शांति की संस्कृति को परिभाषित करने वाले प्रस्ताव का अनुसरण किया जाता है। दुनिया भर में खुशी और एकता का संदेश फैलाने के लिए एक आदर्श समाधान के तौर पर यह दिवस अस्तित्व में आया। इस दिन लोग अपने लॉन्ग डिस्टेंस फ्रेंड्स के साथ मिलकर हैंग आउट पार्टी या फिर शॉर्ट ट्रिप की योजना बनाकर इस दिन को सेलिब्रेट करते हैं, ऐसा करके लोग अपनी दोस्ती के रिश्ते को मजबूत और इस दिवस को यादगार बनाने की कोशिश करते हैं।

बात अगर हम संस्कृत के श्लोकों में मित्रता के बखान की करें तो,

(1) चन्दनं शीतलं लोके, चन्दनादपि चन्द्रमाः।

चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः।

इस दुनिया में चन्दन को सबसे अधिक शीतल माना जाता है पर चन्द्रमा चन्दन से भी शीतल होता है लेकिन एक अच्छा मित्र चन्द्रमा और चन्दन दोनों से शीतल होता है।

(2) न सख्यमजरं लोके हृदि तिष्ठति कस्यचित्।

हमेशा किसी भी मनुष्य के हृदय में मित्रता नहीं बनी रहती है. मित्रता या तो समय के साथ कम हो जाती है या क्रोध के कारण समाप्त हो जाती है. न दरिद्रो वसुमतो नाविद्वान् विदुषः सखा.

विश्व मैत्री दिवस का विचार पहली बार 1958 में पराग्वे में डॉ. रेमन आर्टेमियो ब्राचो द्वारा सुझाया गया था. इससे विश्व मैत्री फाउंडेशन का गठन हुआ. इस फाउंडेशन के प्रयासों के कारण, संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने 30 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस के रूप में मान्यता दी. संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राष्ट्र इस दिन को स्थानीय रीति-रिवाजों और संस्कृति के अनुसार मनाते हैं. 1998 में, विन्नेदूह को संयुक्त राष्ट्र में एक कार्यक्रम में मैत्री के वैश्विक राजदूत के रूप में नामित किया गया था.

इंटरनेशनल फ्रेंडशिप डे के जश्न को साल 2011 में शुरू किया गया था, जब संयुक्त राष्ट्र ने लोगों के बीच एकता और विश्वास के सबसे प्रसिद्ध रूप यानी दोस्ती और उसके महत्व को मजबूत बनाने के लिए एक कदम आगे बढ़ाया था. आधिकारिक निकाय चाहता था कि लोग गरीबी, दरिद्रता प्रदूषण, बेरोजगारी, भूख और बीमारी से ग्रसित दुनिया के समस्याग्रस्त परिदृश्य के बीच इन संबंधों व सुंदर बंधनों का जश्न मनाएं. फ्रेंडशिप डे दुनिया भर में दयालुता और एकजुटता के साथ चिह्नित करने का एक उत्सव है, जो लंबे समय तक जीवित रहने और पनपने के लिए बेहतर जगह बनाता है. अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस एक संयुक्त राष्ट्र (यूएन) दिवस है जो उस भूमिका को बढ़ावा देता है जो दोस्ती कई संस्कृतियों में शांति को बढ़ावा देने में निभाती है. किसी ने खूब कहा है,

एक चिंगारी आग से कम नहीं होती,
सादगी श्रृंगार से कम नहीं होती,
ये तो सिर्फ सोच का फर्क है,
वरना दोस्ती भी प्यार से कम नहीं होती.

बेटी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मुझे गर्व है बेटी पर.
बनेगी सेना में अफसर.

जाती है सैनिक स्कूल
करेगी सपनों को पूरा,
जमकर मजा चखाएगी
कभी शत्रु ने यदि घूरा,

दे रक्षा अकादमी परीक्षा
पा जाएगी शुभ अवसर.

ज्ञान और व्यक्तित्व भरोसे
योग्य - सफल कहलाएगी,
जीतेगी हर एक लड़ाई
दुष्टों को दहलाएगी,

सोच पुरानी बदलेगी वह
देश बनेगा, अपना घर.

खुल जाएँगे दूर गगन के
जहाँ उड़ेगी पंख पसार,
तेज और ऊँची उड़ान से
नए हर्ष को मिले प्रसार,

बचकर सामाजिक दबाव से
बनेगी पूर्ण सशक्त - निडर.

संकल्पों की दिव्य मूर्ति है
बेटी है कुटुंब की शान,
सेना में भर्ती होकर वह
बढ़ा सकेगी निज अभिमान,

बेटी, बेटा से क्या कम है
न करना दोनों में अंतर.
मुझे गर्व है बेटी पर.

माँ की सीख

रचनाकार- संगीता पाठक

नीले समंदर में बहुत सारी मछलियां झुंड के झुंड में तैरती रहती थीं। ढेर सारी मछलियों के झुंड को देखकर बड़ी मछलियाँ उनसे दूर रहती थीं।



एक छोटी सी मछली का नाम निम्मी था। निम्मी की माँ उसे बहुत प्यार करती थी। वह उसे बहुत समझाती थी कि "बेटा ! तुम हमारे साथ तैरती हो तो किसी भी मछली में तुम्हें चोट पहुँचाने की हिम्मत नहीं होगी। तुम तैरते समय इसी बात का ध्यान रखना कि झुंड से कदापि अलग नहीं होना" लेकिन निम्मी सबसे छोटी और शरारती मछली थी।

वह अपनी माँ की बात बिल्कुल नहीं मानती थी। जब सारी मछलियां तैरती तो निम्मी धीरे से अलग होकर अकेले तैरने लगती थी। एक दिन की बात है निम्मी झुंड से निकलकर अकेले तैरने लगी। पीछे से एक शिकारी मछली मुँह खोल कर उसे खाने के लिए पीछा करने लगी। निम्मी भयभीत होने लगी। वह जोर से चिल्लाई "मां! बचाओ! मां बचाओ।" निम्मी की मां झुंड के साथ पलटी और शिकारी मछली पर आक्रमण कर दी। शिकारी मछली लहलुहान होकर वहाँ से भाग गयी।

निम्मी की माँ उसे समझाने लगी "बेटा ! तुमने मेरी बात क्यों नहीं मानी एकता में शक्ति होती है। तुम्हें अकेली देखकर वह शिकारी मछली तुमको खाना चाहती थी। हम सबकी ताकत को देखकर वह लहलुहान होकर भाग गयी।"

निम्मी धीमे स्वर में बोली "माँ ! मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी, तुम्हारी बात न मानने से मेरा जीवन संकट में पड़ गया था, अब मैं हमेशा झुंड के साथ तैरा करूँगी। माँ तुम मुझे माफ कर दो।"

इस घटना के बाद निम्मी शरारत करना छोड़ दी। अब वह हमेशा अपनी माँ के बाजू में तैरने लगी है। वह एकता की शक्ति को समझ गई है।

चल चौसर खेले गौरी

रचनाकार- सोमेश देवांगन



चल खेले गौरी आज हम चौसर,
तुम्हें जीतने का दे रहा हूं अवसर.
तीन भुवन सह लोक के स्वामी,
जग जीतने वाले प्रभू अंतर्यामी.

गौरी बोली सुन ओ मेरे भोलेनाथ,
खेलेंगे चौसर अपने अपने हाथ.
भुवन में लग गया चौसर का दांव,
सूर्य देव छिपकर बैठे करते छांव.

प्रथम दांव भोले ने डमरू लगाया,
हारे सबकुछ त्रिशूल भी गवाया.
बिंदु हार के नाग भी उतारन लागे,
ये सब देखत नंदी जी वहां से भागे.

मातु गौरी हाथों अपने चौसर फेके,
अवघड़ बाबा मुस्का के सब देखे.
गौरी बोली सब हार गए क्या स्वामी,
हो गये कंगाल मेरे तो अवघड़ दानी.

गौरी बचा हुआ है मेरा तो ये कैलाश,
लगा दांव जीतने की बस यही आस.
कैलाश गंवा कर बोले मेरे भोलेनाथ,
पकड़कर बैठा चौसर वो खाली हाथ.

लालच की आज देखो हुई बड़ी हार,
अहम पर हुआ है देखो बड़ा प्रहार.

उड़ते तोते

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



आसमान में उड़ते तोते,
टें..टें..टें...टें करते.
बहती हुई हवा में,
मधुर संगीत वे भरते.

हरा रंग है उनके,
नुकीली चोंच लाल.
एक साथ उड़ कर वे,
आ बैठे सब डाल.

नभ धरा तरुवर,
उनके हैं ये वादी.
दल में ही रहकर,
पसंद उन्हें आजादी.

आओ ताली बजाएं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत के हजारों वर्षों के इतिहास का अगर हम अध्ययन करें तो हमें हर सामायिक अंतर में हमें अनमोल गाथाएं महसूस करने को मिलेगी, कि क्यों भारत को सोने की चिड़िया का दर्जा दिया जाता था, क्यों हजारों हमारे पूर्वजों, बड़े बुजुर्गों की अनमोल संस्कृति सभ्यता वैश्विक स्तरपर सटीक लुभावने, आकर्षित करने वाली हैं जिसपर बुरी नजरें अंग्रेजों की पड़ी और इस सोने की चिड़िया को गुलाम बनाकर अनमोल संसाधनों का दोहन किया. वैसे तो गाथाओं का कोई अंत नहीं परंतु आज हम भारत की ताली गाथा पर चर्चा इस आर्टिकल के माध्यम से करेंगे जिसके उद्धृत फायदे हैं, मानवीय ऊर्जा और स्पंदन को उठाती है. जो परंपरा पुरातन काल से ही चली आ रही है शायद ऋषि-मुनियों को पता था कि लोगों के पास व्यायाम का भी समय नहीं बचेगा इसलिए ताली संस्कृति शुरू की आओ ताली बजाएं.

बात अगर हम ताली को परिभाषित करने की करें तो, ताली उस ध्वनि को कहते हैं जो दो सपाट सतहों के आपस में टकराने से उत्पन्न होती है, जैसे मनुष्यों या जानवरों के अंगों में, मनुष्य अपने हाथ की हथेलियों द्वारा ताली बजाते हैं, प्रायः प्रशंसा या अनुमोदन (देखें सराहना) की अभिव्यक्ति में निरंतर घनघनाहट साथ, लेकिन कभी-कभी ताली लय के साथ भी बजायी जाती है जिससे कि वह संगीत और नृत्य के स्वरों से मेल करे. सील उन कुछ जंतुओं में से हैं जो ताली बजा सकते हैं.

बात अगर हम ताली बजाने के वैज्ञानिक दृष्टिकोण की करें तो, ताली बजाना एक व्यायाम ही है, ताली बजाने से हमारे शरीर में खिंचवा होता है, शरीर की मांसपेशियां एक्टिव हो जाती है. जोर जोर से ताली बजाने से कुछ ही देर में एहसास होगा कि आपको पसीना आना शुरू हो गया और पूरे शरीर में एक उत्तेजना पैदा हो गई है. बस यही है व्यायाम. हमारी हथेलियों में शरीर के अन्य अंगों की नसों के बिंदु

होते हैं, जिन्हें एक्यूप्रेशर बिन्दु कहते हैं. ताली बजाने से इन बिंदुओं पर जोर पड़ता है और संबंधित अंगों में रक्त संचार बढ़ता है, जिससे वे बेहतर काम करने लगते हैं. एक्यूप्रेशर पद्धति में ताली बजाना सबसे ज्यादा लाभदायक माना गया है. ताली बजाने की परंपरा पुरातन काल से चली आ रही है. आज मानवीय जीव पास है व्यायामका भी समय नहीं है इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मंदिरों में ताली बजाने की परंपरा शुरू की ताकि कुछ देर ही सही पर हम व्यायाम कर सकें.

बात अगर हम ताली बजाने को निराशा से उबारने की थेरेपी की करें तो, यह निराशा की स्थिति से उबरने के लिए असरदार थेरेपी है. कोई व्यक्ति पाचन की समस्या से गुजर रहा हो तो उसे क्लैपिंग थेरेपी अपनानी चाहिए. हृदय और फेफड़ों से जुड़ी समस्याओं, अस्थमा के इलाज में यह थेरेपी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह गर्दन के दर्द से लेकर पीठ और जोड़ों के दर्द में भी आराम पहुंचाती है. बच्चे अगर इस थेरेपी को अपनाएं तो इससे उनकी काम करने की क्षमता और बौद्धिक विकास होता है. इससे दिमाग तेज होने में मदद मिलती है.

बात अगर हम ताली बजाने के मौकों की करें तो, खुशी का मौका का हो, किसी की तारीफ करनी हो, कोई जीत का विषय हो या किसी को प्रोत्साहन देना हो, इसके लिए लोग ताली बजाते हैं. ताली बजाना भले ही खुशी जाहिर करने का एक तरीका हो, लेकिन यह तरीका सेहत के लिए भी बड़े काम का है. रोजाना कुछ मिनट के लिए ताली बजाने से कई तरह से स्वास्थ्य को बेहतर करने में मदद मिलती है. इसे क्लैपिंग थेरेपी भी कह सकते हैं. यह थेरेपी हजारों सालों से चलती आ रही है. भारत में भजन, कीर्तन, मंत्रोपचार और आरती के समय ताली बजाने की प्रथा है. इससे मिलने वाले शारीरिक लाभ भी कम नहीं हैं. इसका वैज्ञानिक कारण भी है, क्योंकि विज्ञान के मुताबिक मानव शरीर के हाथों में 29 दबाव केन्द्र यानी एक्यूप्रेशर पॉइन्ट्स होते हैं.

बात अगर हम ताली बजाने के प्रेशर प्वाइंट रूपी फायदों की करें तो, (1) ताली बजाने से दिल और फेफड़ों से जुड़ी हुई अस्थमा जैसी समस्याओं में मदद मिलती है (2) पीठ, गर्दन और जोड़ों के दर्द से आराम मिलता है. (3) ताली बजाकर गठिया रोग से भी बचा जा सकता है. (4) लो ब्लड प्रेशर के मरीज भी इस थेरेपी की मदद ले सकते हैं. (5) पाचनतंत्र की समस्याओं में भी क्लैपिंग थेरेपी का इस्तेमाल फायदेमंद साबित होता है. इस तेल से वेट लॉस में होगा फायदा! (6) क्लैपिंग थेरेपी से बच्चों की कार्यक्षमता का विकास होता है और उन्हें पढ़ाई में भी सुधार होता है. जो बच्चे रोजाना ताली बजाते हैं उन्हें लिखने में भी कम परेशानी होती है और उनसे स्पेलिंग से जुड़ी गलतियां भी कम होती हैं. (7) ताली बजाने से बच्चों का दिमाग तेज होता है. (8) शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और बीमारियों से बचने के लिए भी क्लैपिंग करनी चाहिए. (9) रोजाना आधे घंटे ताली बजाने से मधुमेह, गठिया उच्च रक्तचाप, डिप्रेशन, पुराने सिरदर्द, जुकाम, अनिद्रा, बालों का झड़ना और आंख की समस्याओं से पीड़ित लोगों को मदद मिलती है. (10) घर और ऑफिस में हमेशा एयर कंडीशन में रहने

वाले लोग जिन्हें बिल्कुल पसीना नहीं निकलता उन्हें क्लैपिंग थेरेपी का अभ्यास करना चाहिए. क्योंकि यह शरीर में रक्त के प्रवाह को सुचारु बनाकर उसे पूरी तरह से शुद्ध करता है.

बात अगर हम ताली बजाने के अन्य गाथाओं की करें तो, संगीत के विद्यार्थी भिन्न-भिन्न स्वरों के महत्व को समझने में सहायता के लिए और नयी रचनाओं की लय से सामंजस्य बैठाने के लिए प्रायः लिखी हुई धुन की लय को ताली द्वारा बजाते हैं. 60 सेकेण्ड में सबसे अधिक तालियां बजाने का विश्व रिकॉर्ड, 806 तालियों का है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के टिम ऐह्लस्ट्रॉम के पास है. पूरी तरह ताली द्वारा निष्पादित शास्त्रीय कृतियां, शास्त्रीय कृतियां जिनमें ताली बजाना शामिल है. कोरोना वायरस के संक्रमण के फैलाव को रोकने के लिए जनता कर्फ्यू के दिन शाम को ठीक 5 बजे लोगों ने घरों से निकलकर ताली बजाकर जनता की सेवा में लगे लोगों का अभिनंदन किया, जैसे ही घड़ी की सूई ने 5 बजने का इशारा किया, लोग अपने घरों की छतों, बालकनी खिड़की और छज्जों पर जमा होकर ताली बजाने लगे. पीएम की अपील पर देशवासियों की एकजुटता देखकर उन्होंने सभी लोगों को धन्यवाद भी दिया है.

बात अगर हम ताली द्वारा सकारात्मकता माहौल लाने की करें तो, कई संस्कृतियों में, ताली बजाना उत्सव, पावती, प्रशंसा, प्रोत्साहन और मान्यता के लिए एक प्रतीक और इशारा माना जाता है. पूजा के समय भी, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भगवान के भजन गाने का अभ्यास करते हैं, और इसके साथ हाथों से ताली भी बजाते हैं. इससे एक सकारात्मक वातावरण बन जाता है जो किसी की ऊर्जा और स्पंदन को ऊपर उठाती है. चाहे खेल खेलने की बात हो या प्रदर्शन देखने की, ताली का इस्तेमाल सकारात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाने के लिए किया जाता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आओ ताली बजाएं ताली बजाने के उद्धृत फायदे हैं. ताली मानवीय ऊर्जा और स्पंदन को उठाती है. ताली बजाने की परंपरा पुरातन काल से चली आ रही है शायद ऋषि-मुनियों को यह पता था कि लोगों के पास व्यायाम का समय नहीं बचेगा.

बादल और बच्चे

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



सावन का आठवाँ दिन था. सुबह की स्वर्णिम धूप बड़ी रमणीय थी. दोपहर होते तक वातावरण उमस हो गया. शाम तक नीलगगन में बदली छा गयी. अंधेरी रात और अधिक घनी होने लग गयी. मध्य रात को तेज हवा चलने लगी. आकाश में छाए बादलों के टुकड़े हिलने-डुलने लगे. न चाहते हुए भी उन्हें इधर-उधर होना पड़ा. अब तो बस तीन टुकड़े ही रह गये. दो बड़े और एक बहुत ही छोटा टुकड़ा. फिर तीनों टुकड़े भी उड़ने की तैयारी कर रहे थे, तभी छोटे टुकड़े बादल ने कहा- "पापा जी ! मैं यहाँ अकेला नहीं रहूँगा. मैं भी जाऊँगा आप दोनों के साथ."

"नहीं बेटा ! तुम अभी बहुत छोटे हो. हवा भी तेज चल रही है. पता नहीं, हमारा कहाँ जाना होगा. तुम यहीं इधर-उधर होकर अपना समय बिताओ." पापा बादल ने अपने बेटे छोटकू बादल को समझाया.

"नहीं जी, हम अपने बेटे को यहाँ अकेले नहीं छोड़ेंगे. आजकल हवा बहुत मनचली हो गयी है. उसका कोई ठिकाना नहीं है. इसे कब और कहाँ उड़ा कर ले जाय." इससे अच्छा हम इसे अपने साथ ले चलते हैं." मम्मी बादल बोली.

आखिर छोटकू बादल का मम्मी-पापा के साथ जाना तय हो ही गया. तीनों बादल रातभर आकाश में उड़ते रहे. जंगल, झाड़ी, नदी, पहाड़-पर्वत से होकर एक गाँव में पहुँचे; तब तक सुबह भी हो गयी. गाँव वाले अपने-अपने काम में व्यस्त थे. तभी अचानक बादलों की नजर मैदान में खेल रहे बच्चों पर पड़ी. बच्चे उन्हें बड़े प्यारे लगे. जरा रुके; और उन्हें खेलते हुए देखने लगे. फिर वहाँ से उनकी चलने की तैयारी हो ही रही थी कि छोटकू बादल बोला- "पापा जी ! मम्मी जी ! मैं यहीं रुक जाऊँ क्या ? इनके साथ मेरा खेलने का मन कर रहा है. इन्हें मैं अपना मित्र बना लूँ ?"

"तुम भी न...!" पापा बादल ने मुस्कुराते हुए कहा.

"ठीक है बेटा. पर इन बच्चों के पास मत जाना. वे डिस्टर्ब होंगे. यहीं से तुम उन्हें देखते रहना; और यहीं आसपास ही रहना. यहाँ से कहीं और दूसरी जगह बिल्कुल नहीं जाना." मम्मी बादल छोटकू के पास जाकर बोली. फिर मम्मी-पापा दोनों वहाँ से चले गये.

शोरगुल करते हुए बच्चे अपने में बड़े मस्त थे. उन्हें किसी से कोई मतलब नहीं था. मैदान के चारों ओर हरियाली थी. नीला आकाश बड़ा सुंदर लग रहा था. खेलते हुए बच्चों को देख छोटकू बादल का उनसे मिलने का मन कर रहा था. पर उसे अपने मम्मी-पापा की हिदायत याद थी. आखिर बच्चा बच्चा ही होता है. मन सच्चा भी होता है; और कच्चा भी. अब उससे नहीं रहा गया. उसने आवाज लगायी- "मित्रों !"

बच्चों ने एक अपरिचित आवाज सुनी. वे इधर-उधर देखने लगे. तभी अचानक उनकी नजर ऊपर आकाश की ओर गयी. उन्हें एक छोटा सा बादल दिखाई दिया. फिर एक ने पूछा- "कौन...?"

"मैं छोटकू बादल हूँ." ऊपर से आवाज आयी.

"छोटकू बादल ! कौन छोटकू बादल ?" बच्चों को आश्चर्य हुआ.

"तुम सभी जैसा मैं भी एक बादल बच्चा हूँ." छोटकू बादल बोला.

"तो तुम क्या चाहते हो हमसे ?" बच्चे बोले.

"मैं तुम सब से दोस्ती करना चाहता हूँ. मुझे भी अपना दोस्त बना लो. मैं तुम सब के साथ खेलना चाहता हूँ. छोटकू बादल ने अपनी मन की बात कही.

"यह कैसे हो सकता है ?" बच्चों का अचम्भित स्वर निकला.

"हो सकता है मेरे मित्रों. देखो... ना गर्मी भी बढ़ रही है. तुम सब तक मेरे पहुँचने से वातावरण में नमी आयेगी. हल्की सी बारिश होगी. और फिर बारिश में भीगते हुए खेलने में बड़ा मजा आएगा." छोटकू बादल के मन में बड़ा उतावलापन था.

"बारिश होगी तुम्हारे आने से; हम सबको बहुत मजा आएगा. वो कैसे भाई ?" कुछ समय तक बच्चे खामोश रहे. आपसी सलाह-मशविरा हुआ; और फिर सबने हामी भर दी.

छोटकू बादल के धरती पर आते ही बच्चे खुशी से झूम उठे. खूब नाचे-कूदे. खूब किलकारी गूँजी. देखते ही देखते शाम होने लग गयी. वे अपने-अपने घर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तभी छोटकू बादल ने उनसे कहा-"मित्रों ! कल और आना."

"ठीक है. पर अब तुम क्या करोगे ? कहाँ जाओगे ?" दो-तीन बच्चों ने पूछा.

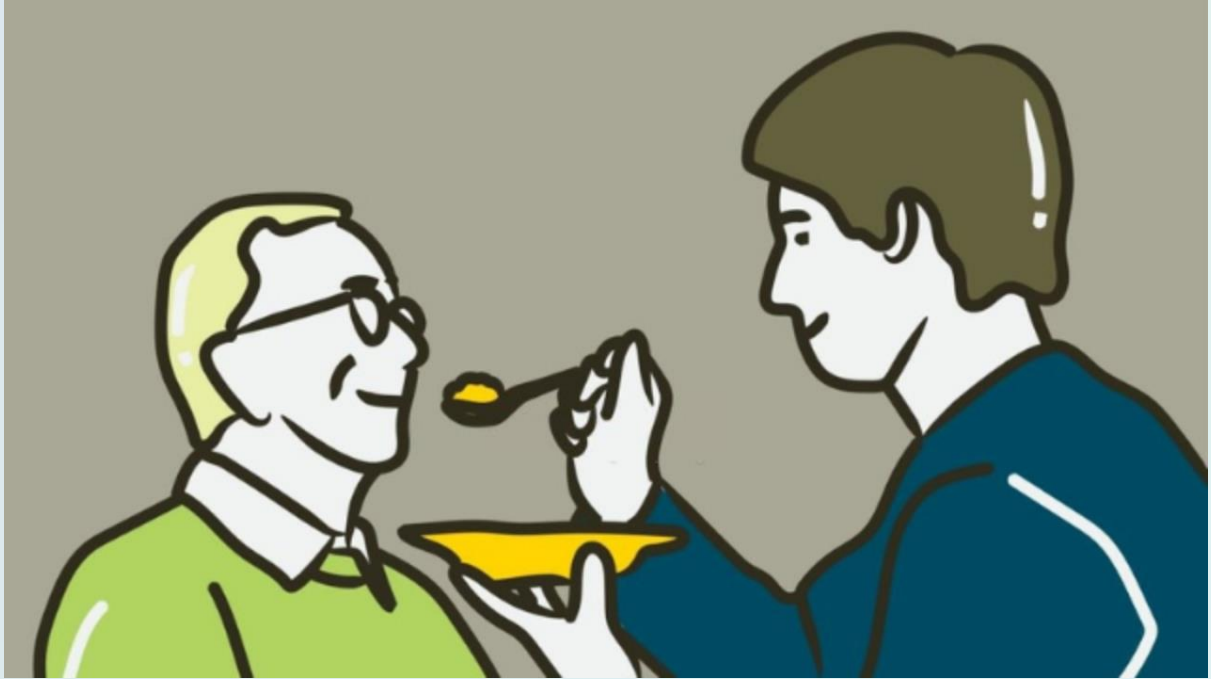
"देखो मित्रों, वातावरण में फिर ऊष्णता आ रही है. मैं अब वाष्प बनकर ऊपर जाऊँगा. मेरा अपने जल रूप से वाष्प बनना ही वाष्पीकरण है." कहते ही छोटकू बादल का पानी से वाष्प बनना शुरू हुआ.

"अच्छा मित्र ! अब हम लोग भी चलते हैं. सी यू अगैन टुमॉरो. बॉय." कहते हुए बच्चे घर लौट गये.

इस तरह दूसरे दिन से रोज बच्चों और छोटकू बादल का मिलना-जुलना और खेलना-कूदना चलने लगा. छोटकू बादल और बच्चों की मित्रता प्रगाढ़ होती गयी. बच्चे बढ़ने लगे. छोटकू बादल का आकार भी बढ़ने लगा. छोटकू बादल को वहाँ से जाना उचित नहीं लगा. आसपास का क्षेत्र उसका निवास-स्थल हो गया. पूरे क्षेत्र में अच्छी बारिश होने लगी. खूब पेड़-पौधे उगने लगे. मिट्टी का कटाव बंद होने लगा. बारिश का पानी पर्याप्त मात्रा में जगह-जगह एकत्रित होने लगा; जिससे भूमि का जलस्तर बढ़ने लग गया. नदी-नाले, पोखर, कूप-सरोवर, जलपम्प सब लबालब होने लगे. लोगों को लगने लगा कि पेड़-पौधे अच्छी वर्षा होने में सहायक होते हैं. पानी और बारिश का महत्त्व लोग समझने लगे. जगह-जगह बांध बनवाये जाने लगे. वृक्षारोपण का काम युद्धस्तर पर होने लगा. अनावश्यक जलप्रवाह की रोकथाम की जाने लगी. कृषि उपज में वृद्धि होने लगी. पूरे अंचल में हरियाली व्याप्त होने लगी. सुख-समृद्धि बढ़ने लगी. लोगों का जीवन ही बदल गया.

बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीयता पहचान है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीयता पहचान है
बुजुर्ग हमारी आन बान शान है
बुजुर्गों की सेवा में ही सर्वाधिक पुण्य समाया है
हमने बुजुर्गों की सेवा कर परम सुख पाया है

अनुभवों और तजुर्बों की खान है
बुजुर्ग हमारी थिंक टैंक और शान है
परिवार का बड़प्पन और महान है
जो बुजुर्ग दिव्यांगों की सेवा करें वह महान है

दिव्यांगजन और राष्ट्रीय वायोश्री योजना के तहत
वरिष्ठ नागरिकों को सहायक सहायता उपकरण
वितरण सामाजिक अधिकारिता शिविरमें हुआ है
दिव्यांगजन और बुजुर्ग सशक्तिकरण हो रहा है

किसान

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस



उम्मीद भरे जीवन मे, मेरे देश के होते किसान.
खून पसीना बहाकर, उगाते सोनहा धान.
करते खेतो मे मेहनत, होता दिन -रात काम.
फल सब्जियाँ और अनाज, कृषि प्रधान देश का नाम.
निभाते किसान की भूमिका, होता श्रेष्ठ व्यक्ति.
है निर्भर खेती बाड़ी मे, समर्पित होता किसान की शक्ति.
भरता पेट लोगो का, करके फसल की रखवाली.
वजह जिससे फसल अच्छी, बनकर फसलों की माली.
बनता योजना किसानों की, रहता किसान कर्जदार.
उगाता -डूबता ऋण से, न होता योजना असरदार.
मिल जाता जरूर राहत, देता अनाज बाजार मे.
मिलता दाम न उचित, नाम रहता कर्जदार मे.
बाट जोहते किसान, मानसून के खेल मे.
गिर जाने से दाम फसल के, सारा करतब बह जाते तेल मे.
न उगाये फसल किसान, बढ़ जायेगी भुखमरी की तान.
चलता आशाओ की राह पर, होता धरती का भगवान.
समझे न कोई नीचा, दे देता है अपनी जान.
समझना भी गलत है, अन्नदाता का हो सम्मान.
मानसून के उम्मीद भरे किरण से, बीज सोने सा है डालता.
भरी उथल -पुथल राहो से, किसान सबका पेट पालता.

बरसात

रचनाकार- शीतल बैस



मौसम जैसे करवट लेती,
आता ये बरसात.
हरी भरी यह धरती सजती,
इंद्रधनुष रंग हो सात.

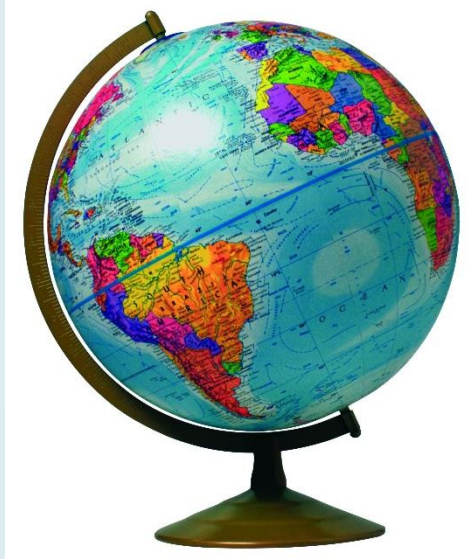
रिमझिम रिमझिम बूंदे पड़ती,
ले ले इनको हाथ.
कदमों से मैं छप -छप करती,
आओ खेले साथ.

सौंधी -सौंधी खुशबू आती,
महकें है हर गांव.
गली -गली जब धार है बहती,
बच्चे खेले नाव.

बीती बातें यादें बनती,
भूली बिसरी रात.
फिर पाने को वह पल तरसती,
बचपन की बरसात.

मम्मी तुम भूगोल बताओ

रचनाकार- आशीष मोहन



मम्मी तुम भूगोल बताओ,
धरती क्यों है गोल बताओ.

स्वच्छ आसमान मिला है
सूरज का प्रकाश खिला है
जगमग जगमग तारे चमकें
क्या है इनका मोल बताओ.

हवा चले है मध्यम-मध्यम
फूल खिले हैं सुंदर-सुंदर
जुगनू में प्रकाश कहाँ का
क्या है इनका झोल बताओ.

किचन में चौकी-बेलन गोल
इनसे बनती रोती गोल
दीदी कबसे धूम मचाए
बेलन वाला रोल बताओ.

रोज दिवाली मनाते पेड़

रचनाकार- आशीष मोहन



बारिश में खूब
नहाते पेड़
फाग होली में
गाते पेड़!
फूल खिले हैं
जगमग जैसे
रोज दीवाली
मनाते पेड़.

चतुर लोमड़ी और सियार

रचनाकार- आशीष मोहन



चतुर लोमड़ी और सियार,
करते थे आपस में प्यार.

सारे जंगल खबर उड़ी,
जंगल में पंचायत जुड़ी.

चूहा आकर फिर ये बोला,
राज सियार लोमड़ी का खोला.

सिंहासन में शेर जी बैठे,
बोले प्यार अजब है बेटे.

करने दो आपस में प्यार,
अच्छी है जंगल की बयार.

बेचारी चिड़िया

रचनाकार- आशीष मोहन



मेरे घर में चिड़िया एक
रहती थी सपनों को देख

उसके थे बच्चे चार
उड़ते थे पंख पसार

एक दिन पापा ने घर तोड़ा
उजड़ गया चिड़िया का भी घर

हटे कवेलू नई छत आई
चिड़िया बेचारी हो गई बेघर.

तितली रानी

रचनाकार- आशीष मोहन



तितली रानी कितनी खुश हो,
फूल-फूल का रस पीकर.

कभी फूल जो नहीं खिले तो,
फिर भी खुश हो दुःख सीकर.

जो मिल जाए उसमे खुश हो,
सदा दिखाया जी-जीकर.

कभी नहीं आतंक मचाया,
बगावत का मद्य पीकर.

तितली रानी कितनी खुश हो,
फूल - फूल का रस पीकर.

मैं हूँ अप टू डेट

रचनाकार- आशीष मोहन



कोट पहनकर चूहा बोला,
मैं हूँ अप टू डेट.

चुहिया बोली सुनो सुनो जी,
करो न हल्ला टेट.

शाम को जल्दी घर तुम आना,
खुले रहेंगे गेट.

आज रेस्टोरेंट चलेंगे,
फिर मत करना लेट.

देर शाम चूहा नहीं आया,
ऑफिस में था फंसम फसाया.

भूख ने सबको खूब सताया,
बच्चों ने उत्पात मचाया.

फिर चुहिया की बिटिया बोली,
चलो चलें हम लेकर जेट.

हद हो गई है इंतजार की,
मुझसे न अब होगा वैट.

पेड़ लगाएँ कई हजार

रचनाकार- आशीष मोहन



आओ करें बारिश से प्यार
पेड़ लगाएँ कई हजार
पेड़ इसे ललचाते हैं
बारिश को खींच लाते हैं
हैं पानी में रंग हजार.

आओ करें बारिश से प्यार
पेड़ लगाएँ कई हजार
पेड़ रोकते मृदा अपरदन
करते हैं धरती का वंदन
पेड़ों से जग में है बहार.

आओ करें बारिश से प्यार
पेड़ लगाएँ कई हजार
पेड़ हमें लकड़ी देते हैं
पेड़ हमें फल देते हैं
पेड़ से है पवनों की बयार.

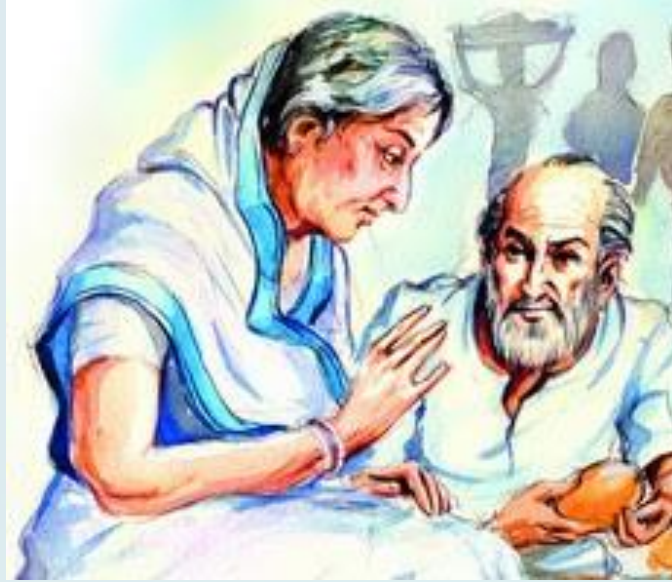
आओ करें बारिश से प्यार
पेड़ लगाएँ कई हजार

पेड़ पक्षियों का घर हैं
पेड़ छांव का हैं अंबार
पेड़ों से सबको है प्यार.

आओ करें बारिश से प्यार
पेड़ लगाएं कई हजार.

बुजुर्ग

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



बड़े बुजुर्गों और हमारी पिछली पीढ़ियों से अक्सर हम सतयुग और कलयुग का नाम सुनते आ रहे हैं जिसे समझने के लिए हमें भारतीय कवि गीतकार प्रदीप के भजन देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान कितना बदल गया इंसान और आज के इस इंसान को ये क्या हो गया इसका पुराना प्यार कहां पर खो गया, को सुनकर खासकर वर्तमान पीढ़ी के युवाओं को रेखांकित करना समय की मांग है. वैसे तो परिस्थितियों के अनुसार स्थितियां बदलती रहती है परंतु मेरा मानना है कि हमारे बड़े बुजुर्गों के प्रति सोच में बदलाव को सभी ने एक साथ मिलकर रोकना होगा क्योंकि हमारे बड़े बुजुर्ग कुल और वंश का एक प्रतिष्ठित और पूज्य व्यक्तित्व हैं. वह हमारी धरोहर हैं, इन्हें भौतिक सुख सुविधाओं से अधिक अपनों के साथ की जरूरत होती है. हमारे युवाओं को यह समझना होगा कि हमारे बड़े बुजुर्ग वह पेड़ है जो थोड़े कड़वे हो सकते हैं लेकिन इनके फल बहुत मीठे होते हैं, इसके दो कदम आगे इनकी छांव का कोई मुकाबला नहीं हो सकता.

बात अगर हम हमारे बड़े बुजुर्ग रूपी धरोहर को सुरक्षित रखने की करें तो हम सबको मिलकर इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने होंगे हमारी सोच को इनके प्रति सकारात्मक बनाए रखना होगा पाश्चात्य और नए जमाने की सोच को विराम देना होगा क्योंकि सांस्कृतिक श्लोकों में भी आया है, अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोंसेविनः चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम, अर्थात् जो बुजुर्ग वृद्धजनों विनम्र और नित्य अनुभवी लोगों की सेवा करते हैं उनकी चार चीजें हमेशा बढ़ती रहती हैं - आयु विद्या यश और बल ! पर अफसोस इस बात का है कि यह चारों चीजें सभी को चाहिए लेकिन, वृद्ध जनों बुजुर्गों अनुभवी सम्मानित लोगों की सेवा कोई नहीं करना चाहता है !

साथियों हाल ही में, बुजुर्गों के लिए कार्यरत स्वयंसेवी संस्था हेल्पएज इंडिया द्वारा 4.5 हजार लोगों पर किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार जो प्रमुख तथ्य सामने आए वे इस प्रकार हैं:-सर्वेक्षण के मुताबिक देश के 19 शहरों में बुजुर्गों की स्थिति सबसे ज्यादा चिंताजनक है. उनमें मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर प्रमुख हैं. बुजुर्गों को प्रश्रावली भरने को दी गई थी, उसमें लगभग 44 फ़ीसदी लोगों ने यह स्वीकारा कि सार्वजनिक स्थलों पर उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है.देश के 53 फ़ीसदी बुजुर्ग ऐसा मानते हैं कि समाज में उनके साथ भेदभाव किया जाता है.सार्वजनिक स्थलों पर किसी बात की जानकारी मांगने पर 64 फ़ीसदी लोग उनके साथ बुरे लहजे में बात करतेहैं सार्वजनिक स्थलों की लाइन में आगे खड़े होने पर 12 फ़ीसदी बुजुर्गों को आसपास मौजूद लोगों की उग्र प्रतिक्रिया देनी पड़ती है. सर्वेक्षण की रिपोर्ट के मुताबिक मेंटिनेंस एंड वेलफेयर ऑफ सीनियर सिटीजन एक्ट पर सही ढंग से अमल नहीं हो रहा.

बात अगर हम बड़े बुजुर्गों के महत्व की करें तो, इंसान सब कुछ भूल सकता है, लेकिन अपने पूर्वज नहीं. इनके बिना हमारा इतिहास बिल्कुल बेकार है और इतिहास बोध से कटे हुए समाज जड़ों से टूटे हुए पेड़ के समान होते हैं. जिस घर के अंदर बड़े बुजुर्गों का आदर और सम्मान नहीं किया जाता उस परिवार में सुख, समृद्धि, संतुष्टि और स्वाभिमान कभी नहीं आ सकता. बुजुर्ग हमारा स्वाभिमान होते हैं. बुजुर्ग हमारी धरोहर है. उन्हें सहेजने की जरूरत होती है. अगर हम परिवार में स्थाई रूप से सुख-शांति और समृद्धि पाना चाहते हैं, तो परिवार में बुजुर्गों का सम्मान अवश्य करें. हम सब कुछ बदल सकते हैं, लेकिन पूर्वज नहीं. हम उन्हें छोड़कर इतिहास बोध से कट जाते है. हमारे बड़े बुजुर्ग हमारे धरोहर है इन्हें सहेज कर रखना सम्मानीत करते रहना से हमें हर पल कुछ ना कुछ सीखने का मिलता है लंबी उम्र गुजार चुके इन बुजुर्गों के अनुभव का लाभ मिलता है यही नहीं किसी भी आपदा के समय किस प्रकार से धैर्य के साथ काम करना है उस दौरान हमें इनके अनुभवों का लाभ मिलता है.

बात अगर हम वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए ढलती उम्र में प्रवेश करने वाले सभी मनीषियों को अपने भविष्य की आर्थिक सुरक्षा के बारे में शुरू से ही तैयारी करनी चाहिए, ताकि रिटायरमेंट के बाद व्यक्ति अपनी जरूरतें खुद पूरी कर सके शुरू से ही अपने सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिए. ऐसे रिश्ते किसी इन्वेस्टमेंट की तरह होते हैं. जिनके लिए नियमित रूप से थोड़ा समय और पैसे खर्च करने की जरूरत होती है. यह बात हमेशा याद रखें कि वृद्धावस्था में पुराने दोस्त रिश्तेदार और पड़ोसी ही मददगार होते हैं. आजकल ज्यादातर परिवारों में एक या दो ही संताने होती है. अगर उन्हें कैरियर की वजह किसी दूसरे शहर या देश में शिफ्ट होना पड़े तो ऐसी स्थितिके लिए माता-पिता को पहले से ही मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए. बुजुर्गों को अपना सामाजिक दायरा विस्तृत करना चाहिए सबसे जरूरी बात यह है कि बुजुर्ग अपनी बढ़ती उम्र को बीमारी ना समझें और जहां तक संभव हो सामाजिक रूप से सक्रिय रहने की कोशिश करें. हां जब उनका शरीर थकने लगे तो ऐसी स्थिति में संतानों को भी यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि चाहे कितनी भी व्यस्तता क्यों ना हो. अंततः बुजुर्ग माता-पिता उन्हीं की जिम्मेदारी हैं. चाहे कितनी भी व्यस्तता हो कम से कम सुबह और रात को सोने से

पहले उनके साथ बातचीत के लिए 10-15 मिनट जरूर निकालें. लंच टाइम में अगर आप उनसे केवल इतना ही पूछ लें कि 'आपने खाना खाया या नहीं' ऐसी छोटी-छोटी बातों से भी उन्हें बहुत खुशी मिलती है.

हमें अपने बच्चों को शुरू से ही ग्रैंडपेरेंट्स का सम्मान करना सिखाएं. अगर दोनों पीढ़ियां एक-दूसरे की जरूरतों और भावनाओं का ख्याल रखना सीख जाएं तो इससे कई समस्याएं अपने आप दूर हो जाएंगी.

शिशु प्यारा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



नन्हा - मुन्ना मैं शिशु प्यारा,
अपना रुचिर बाल संसार.
नहीं चाहिए किसी से कुछ भी
चाहूँ केवल प्यार - दुलार.

खुश होकर मुस्काता हूँ,
हाथ और पाँव चलाता हूँ,
कभी-कभी मारूँ किलकारी
'सू - सू' करता बारी - बारी,

दादी गोदी मुझे खिलाती
चूम - चूम लेती पुचकार.

मीठे सपनों में खो जाऊँ,
कंधे लगकर चुप हो जाऊँ,
माँ करती है नित्य मसाज,
देती ध्यान, छोड़ सब काज,

जब चाहूँ रोऊँ - चिल्लाऊँ
रोना मेरा है अधिकार.

कभी-कभी अपना मुँह खोलूँ,
आ, आ, ओ, अं, ऊँ, ऊँ बोलूँ,
भाते हैं रंगीन खिलौने
भालू, शेर, कार, मृगछौने,

मुट्ठी और अँगूठा चूसूँ
पाता हूँ आनंद अपार.

दीदी मुझे खूब टहलाती
गाय का ताजा दूध पिलाती,
नल के नीचे नित्य नहाऊँ,
मैं अच्छा बच्चा कहलाऊँ

कोई बात नहीं चिंता की
बचपन है सुंदर उपहार.

बूंदों का त्योहार

रचनाकार- अशोक 'आनन'



काले - काले बादल आए,
गगरी भरकर पानी लाए,
किसान जिन्हें देख हर्षाएं;
झूम- झूमकर बच्चे नहाए.

झींगुर, सारस, शोर मचाएं.
मेंढक टर् - टर् राग सुनाएं.
सूरज दादा आंख चुराएं;
चंदा मामा मूर्ख बनाएं.

हम भी झूमें, नाचें, गाएं.
बूंदों का हम त्योहार मनाएं.
पहनाकर हम हरी चुनरिया,
आओ, धरा का रूप सजाएं.

ध्वज हमारा

रचनाकार- अशोक 'आनन'



हमें है प्यारा -
ध्वज हमारा.

तीन रंग हैं इसमें प्यारे.
रंगों में जो रंग हैं न्यारे.
देते हैं संदेश हमें जो;
वे जीवन - आदर्श हमारे.

नयनों का तारा -
ध्वज हमारा.

रंग केसरी त्याग सिखाता.
महिमा उसकी हमें बताता.
दूत शांति का है रंग सफ़ेद;
हमें जीवन - राहें दिखाता.

सबसे न्यारा -
ध्वज हमारा.

रंग हरा है हरियाली का.
है प्रतीक खुशहाली का.
चक्र प्रतीक नीला इसमें;
सत्य- धर्म रखवाली का.

स्वप्न सुनहरा -
ध्वज हमारा.

पतंग

रचनाकार- अशोक 'आनन '



नीली - पीली उड़े पतंग.
लाल, गुलाबी उड़े पतंग.

कभी गगन को जाए पतंग.
कभी धरा पर आए पतंग.

कभी डोर से कटे पतंग.
कभी हाथ से फटे पतंग.

कभी खूब रुलाए पतंग.
कभी खूब हंसाए पतंग.

कभी हाथ में आए पतंग.
कभी हाथ से जाए पतंग.

बिटिया

रचनाकार- अशोक 'आनन'



रोज़ सवेरे रिक्शा आती.
बिटिया जिसमें शाला जाती.

शाला में वह जाकर पढ़ती.
पढ़ - पढ़कर वह आगे बढ़ती.

जीवन उसका बहुत सुनहरा.
उससे रोशन देश हमारा.

वही देश की आज शान है.
कल का अपना देश महान है.

सावन

रचनाकार- कलेश्वर साहू



करिया- करिया बादर छाए,
सावन सब के मन ला भाए.

गड़गड़- गड़गड़ बादर गरजे,
झिमिर- झिमिर पानी बरसे.

नोनी- बाबू नाचय छम-छम,
बादर लउकत हावय झम-झम.

दिखय गजब के हरियाली,
छाये जिनगी मा खुशहाली.

करिया- करिया बादर छाए,
सावन सब के मन ल भाए.

एक मदारी आया है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



एक मादारी आया है
बंदर बंदरिया लाया है,
डमरु बजा बजा कर
भीड़ खूब जुटाया है,

बंदरिया बंदर के गले में
रस्सी बांधा है मदारी,
बंदर बंदरिया का खेल
खूब दिखा रहा है मदारी,

खेल दिखा कर मदारी ने
पैसा खूब पाया,
बंदर बंदरिया को ले कर
घर को अपने आया,

देखो मेरे नाना जी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बहुत ही भोले बहुत ही भाले
देखो मेरे नाना जी.
तन के उजले मन के सच्चे
देखो मेरे नाना जी.

आंखों पर चश्मा लगाते
देखो मेरे नाना जी.
धोती कुताँ रोज पहनते
देखो मेरे नाना जी.

अस्सी साल के बुढ़े हो गए
देखो मेरे नाना जी.
सर पर टोपी रोज लगाते
देखो मेरे नाना जी.

गुड़ लाई सत्तु भुजा खाते
देखो मेरे नाना जी.
गुड़ वाली जलेबी चाव से खाते
देखो मेरे नाना जी.

हम बच्चों को रोज कहानी
खूब सुनाते नाना जी.
कभी गुस्सा नहीं दिखाते
देखो मेरे नाना जी.

टाफी बिस्कुट आइसक्रीम दिलाते
देखो मेरे नाना जी.
जान की हर बात बताते
देखो मेरे नाना जी.

बढ़ा एक कदम और

रचनाकार- अशोक कुमार



तू चल अपनी राह में,
ढूँढ़ मत छाया ठौर.
भरोसा रख खुद पर,
बढ़ा एक कदम और.

चाहे पैरों में छाले पड़े,
मुंह सूख जाए प्यास से.
तुम्हें मिलेगी ही मंजिल,
तू चल इस विश्वास से.

मिलेंगे तुझको कई राही,
कुछ थके हारे बैठे हुए.
देखकर पंथ ना भटकना,
चलना, चलो कहते हुए.

कभी प्रेम जाल फैलेगा,
आएंगी विकट बाधाएं.
जब तुम्हारी हंसी उड़ेगी,
रखना हौसला, आशाएं.

जिस दिन प्राप्त होगा लक्ष्य,
तुम छोड़ोगे पैरों के निशान.
तुम्हारे ही पंथ में चलेंगे जन,
बनोगे विश्व विजेता महान.

विरह

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



तरसे नयना रात दिन, जगती मन में आस.
कितना तुम तड़पा रहे, सजना आओ पास.
सजना आओ पास, प्यार का मौसम आया.
हरियाली चहुँँओर, बूँँद बादल बरसाया.
लिखती हूँ सन्देश, नीर आँखों से बरसे.
देख रही हूँ राह, सजन बिन नयना तरसे.

बहती नदिया आज भी, करती कल कल शोर.
बैठ देखती नीर मैं, मारे नहीं हिलोर.
मारे नहीं हिलोर, स्वप्न लगते है सारे.
गुम होती मुस्कान, मिलन न होत हमारे.
टूट गयी है आस, अकेली मैं हूँ रहती.
जाती नदिया तीर, आज भी ऐसी बहती.

झर झर की आवाज से, होता हिय बेचैन.
जैसे बूँँदों की झड़ी, बरस रहे हैं नैन.

बरस रहे हैं नैन, नहीं ये शोर मचाती.
विरह चक्र भी घूम, सजन से ना मिलवाती.
पवन बहे चहुँओर, शोर होता है सर सर.
देखूँ जब तस्वीर, नीर झरता है झर झर.

विज्ञान बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव



1. मुखिया हूँ मैं सभी ग्रहों का,
लोग कहे मुझको इक तारा,
मेरे होने से जीवन संभव
रोशन करता मैं जग सारा.
2. जिसके आँगन में जीवन संभव
नीला ग्रह जिसको सब माने.
सूरज के आगे पीछे घूमें,
नाम बताओ तो हम माने.
3. बच्चो का हूँ प्यारा मामा,
लोग कहे मुझे चंदा मामा .
मेरे आँगन में पहले आया कौन?
बोलो बच्चों क्यों हो मौन?

4. मेरा कोई रंग नहीं है,
मेरी कोई गंध नहीं है,
मेरा कोई स्वाद नहीं है,
दो अक्षर का मेरा नाम
प्यास बुझाना मेरा काम.

उत्तर- 1. सूरज, 2. पृथ्वी, 3. नीलार्मस्ट्रोंग, 4. पानी

मन बहलाना

रचनाकार- महेन्द्र कुमार वर्मा



पढ़ना, लिखना
फिर अपनाना,
कैसा सुर है
कैसा गाना.

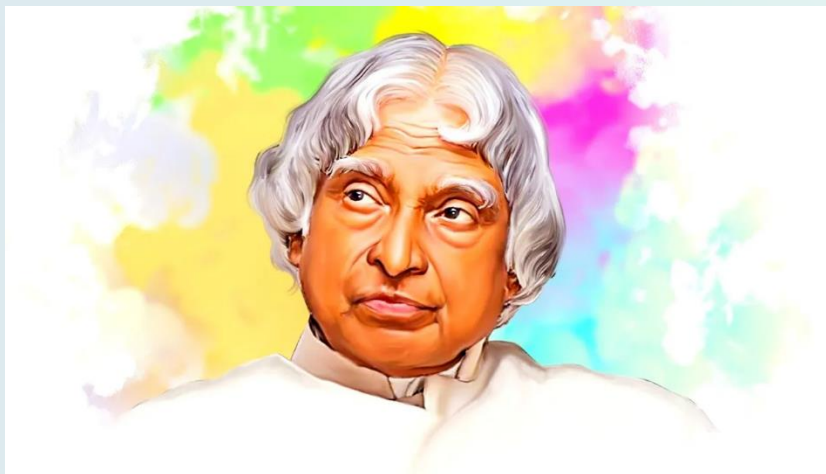
जीवन का ये
कठिन समय है,
इसमें धीरज
नहीं गंवाना.

बाग़-बाग़ में
फूल खिले हैं,
इन्हें देख के
खुश हो जाना.

अगड़म-बगड़म
गीत सुना के,
बच्चों सबका
मन बहलाना.

पीपुल्स प्रेजिडेंट -अब्दुल कलाम

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे



मिसाइल मैं भारत देश की शान,
युवाओं के प्रेरणाश्रोत अब्दुल कलाम,
देश के रहे चहेते इनके लक्ष्य महान.
जिनके कामों को दुनिया करती सलाम.

घर सागर किनारे, सपनें आकाश से आगे,
दिल, दिमाग और सोच सपनों से आगे.
सैद्धांतिक जीवन अंदाज निराले,
सरल व्यक्तित्व जिनकी पहचान.
पथ-प्रदर्शक है अग्नि की उड़ान.

भारत रत्न कलाम देश का हीरा,
गीता-कुरान में कभी न भेद किया,
हर धर्मों का करें सम्मान,
जिनकी साफगोई व्यवहार कुशलता उनकी पहचान,

परमाणु ऊर्जा से है उनका गहरा नाता,
अग्नि, पृथ्वी मिसाइल का श्रेय तुम्हीं को जाता.
सन 1998 में सफल पोखरण परमाणु परीक्षण,
महान वैज्ञानिक कलाम का भारत को अर्पण.

कठिन दौर में जो कभी न हार माना,
दृढ़ इच्छाशक्ति से लक्ष्य-भेद साधा,
गरीबी के खोह से बाहर निकल
सर्वोच्च पद पर जा पहुंचा,
ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में देश का मान बढ़ाया,
कलम की ताकत से कलाम बन गौरव पाया,

आलू और भटे

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव



आलू और भटे में सच में,
होती पक्की यारी.
इस कारण दोनों की अच्छी,
बनती है तरकारी.

पता नहीं कितने जन्मों से,
इनका होगा नाता.
जब मिलकर तरकारी बनती,
स्वाद बड़ा ही आता.

कभी- कभी तो नए मित्र भी,
इनको हैं मिल जाते.
इन मित्रों में लाल टमाटर,
धनियां गोभी आते.

हरे मटर के मौसम में तो,
खूब मजे हैं आते.
आलू भटा टमाटर गोभी,
मटर संग मुस्काते.

ज्ञान की बातें

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा



- भारत का राष्ट्रीय ध्वज - तिरंगा
- भारत का राष्ट्रीय गान - जन गण मन
- भारत का राष्ट्रीय गीत - वंदे मातरम
- भारत का राष्ट्रीय चिन्ह - अशोक स्तंभ
- भारत का राष्ट्रीय वाक्य - सत्यमेव जयते
 - भारत की राष्ट्रीयता - भारतीयता
 - भारत की राष्ट्रीय लिपि - देवनागरी
- भारत का राष्ट्रीय ध्वज गीत - हिंद देश का प्यारा झंडा
 - भारत का राष्ट्रीय नारा - सत्य मेव जयते
 - भारत का राष्ट्रीय पुरस्कार - भारत रत्न
 - भारत का राष्ट्रीय सूचना पत्र - श्वेत पत्र
 - भारत का राष्ट्रीय वृक्ष - बरगद
 - भारत की राष्ट्रीय मुद्रा - रुपया
 - भारत की राष्ट्रीय नदी - गंगा
 - भारत का राष्ट्रीय पक्षी - मोर
 - भारत का राष्ट्रीय पशु - बाघ
 - भारत का राष्ट्रीय फूल - कमल
 - भारत का राष्ट्रीय फल - आम
- भारत की राष्ट्रीय योजना - पंचवर्षीय योजना
 - भारत का राष्ट्रीय खेल - हॉकी
- भारत के राष्ट्रीय पर्व - गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिव

सरकारी स्कूल

रचनाकार- सुधारानी शर्मा



हमको स्कूल रोज बुलाता,
अच्छी बातें भी सिखलाता,
एक अच्छा इंसान बनाता.

तीज त्यौहार की भी मस्ती,
शिक्षा सुंदर अच्छी सच्ची,
सब बच्चों का मन बहलाता,
हमको स्कूल रोज बुलाता.

खेलकूद विज्ञान प्रयोग,
नैतिक शिक्षा का सदुपयोग,
बिना बस्ता भी बहलाता,
स्कूल हमको रोज बुलाता.

खेलकूद पढ़ाई शिक्षा,
भोजन मिलता गर्म और अच्छा,
पुस्तकें और ड्रेस दिलाता,

स्कूल हमको रोज बुलाता.

भोजन और पापड़ अचार,
मौसमी फल भी दो-चार,
चना मुरी का स्वाद है भाता,
हमको स्कूल रोज बुलाता.

बालवाडी

रचनाकार- सुधारानी शर्मा



नन्हें बच्चों की फुलवारी
मां, पापा की आंख के तारे
स्कूल आये नन्हें सितारे
फल ,फूल सब्जी पहचाने
चित्र, कहानी,कविता जाने
सुन्दर-सुन्दर प्यारे -प्यारे
मोहक मुस्कान से हमें निहारे
परी ,खिलौने,तितली की बातें
छोटे बच्चों को बहुत हैं भाते
बालवाडी रोज लगाना है
प्यारे बच्चों को पढ़ाना है
बालवाड़ी बालवाड़ी
नन्हें नन्हें की फुलवारी

रोटी

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा



गोल-गोल, फूली-फूली रोटी,
वो प्यारी-प्यारी रोटी, मीठी-मीठी रोटी
वो दादी अम्मा वाली रोटी
वो नानी वाली रोटी
वो चूल्हे वाली रोटी
याद आ गई वो रोटी
वो गोल-गोल फूली-फूली रोटी
कभी सरसों पालक, मक्की की रोटी
कभी गुड़ शक्कर बाजरे की रोटी
सब मिल बाँट खाते थे रोटी
गोल-गोल मीठी वाली रोटी
वो मेरे गांव वाली रोटी
वो प्यारी-प्यारी रोटी
वो मट्ठा संग थी रोटी
वो दाल संग थी रोटी
कभी चाय संग थी रोटी
वो गोल-गोल फूली-फूली रोटी.

कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े,
यह कामना हर मानवीय जीवन में रहे,
जीवन में किसी जीव को परेशान बुराई,
ना करने का मंत्र ज्ञान मस्तिष्क में रहे.

सभी जीवन में सुखी रहें,
दुनिया में कोई दुखी ना रहे,
सभी जीवन भर रोग मुक्त रहे,
मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहे.

दुनिया में सभी सुखी रहें,
जीवन भर सभी का मन शांत रहें,
दूसरों की परेशानी में मदद करें,
यह भाव हर मानवीय जीव में रहे.

सभी श्लोकों को पढ़कर जीवन में आनंद करें,
महापुरुषों के ग्रंथों को पढ़कर
सही रास्ते पर चलकर सभी में यह सोच भरे,
किसी की बुराई, न किसी को परेशान करें

भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें,
सभी जीवों का कल्याण का कार्य करते रहें,
किसी के दुखों का भागी कारण न बने,
सभी की भलाई निस्वार्थ करते रहें.

ज्ञानमणि

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



कोई बन सपेरा नचा रहा है मुझे ?
अपनी बीन के सुमधुर धुन पर.
लहराकर, झूमकर नाच रहा हूं,
जादुई आवाज को सुन-सुन कर.

मेरे चारों ओर फैलाया मंत्र जाल,
मुझे कोड़े से पीट रहा है प्रेत दूत.
तू ही रास्ता दिखाता है विश्व को,
निकालो मस्तक से जो है अब्दुत.

मेरे पास है दिव्यमान ज्ञानमणि,
जन-मन को करता है प्रकाशित.
छीनकर मुझसे ले जाएगा वंचक,
जिसे दिया था गुरुदेव कर्मातीत.

फिर क्या रह जाएगा जीवन में ?
इसे खोने के बाद तमस-ही-तमस.
बन अंधा टकराऊंगा शिलाओं पर,
सिर पटक करूंगा आत्म सर्वनाश.

कोई छीन नहीं सकता मेरी प्रतिभा ?
बदलूंगा अपना रूप, मैं हूँ इच्छाधारी.
कर्म करके प्रभु से मिला है वरदान,
जय आशीष दिया है भोले भंडारी.

भाई-बहन के अटूट रिश्ते के क्या है मायने

रचनाकार- प्रियंका सौरभ



भाई-बहन का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों में सबसे ऊपर है. हो भी न क्यों, भाई-बहन दुनिया के सच्चे मित्र और एक-दूसरे के मार्गदर्शक होते हैं. जब बहन शादी करके ससुराल चली जाती है और भाई नौकरी के लिए घर छोड़कर किसी दूसरे शहर चला जाता है तब महसूस होता है कि भाई-बहन का ये सर्वोत्तम रिश्ता कितना अनमोल है. सरहद पर खड़ा एक सैनिक भाई अपनी बहन को कितना याद करता है और बहनों की ऐसे वक्त क्या दशा होती है इसके लिए शब्द नहीं हैं. रंग-बिरंगे धागे से बंधा ये पवित्र बंधन सदियों पहले से हमारी संस्कृति से बहुत ही गहराई के साथ जुड़ा है. यह पर्व उस अनमोल प्रेम का, भावनाओं का बंधन है जो भाई को सिर्फ अपनी बहन की नहीं बल्कि दुनिया की हर लड़की की रक्षा करने हेतु वचनबद्ध करता है. भाई-बहन के आपसी अपनत्व, स्नेह और कर्तव्य बंधन से जुड़ा त्योहार भाई-बहन के रिश्ते में नवीन ऊर्जा और मजबूती का प्रवाह करता है. बहनें इस दिन बहुत ही उत्साह के साथ अपने भाई की कलाई में राखी बांधने के लिए आतुर रहती हैं. जहां यह त्योहार बहन के लिए भाई के प्रति स्नेह को दर्शाता है तो वहीं यह भाई को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है.

रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है. रक्षाबंधन के दिन बहनें भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं. राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है. वास्तव में ये त्योहार से रक्षा के साथ जुड़ा हुआ है, जो किसी की भी रक्षा करने को प्रतिबद्ध करता है. अगर इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ दुनिया की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही मायनों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा. इस पावन त्योहार का अपना एक अलग स्वर्णिम इतिहास है, लेकिन बदलते समय के साथ बाकी रिश्तों की तरह इसमें भी बहुत से बदलाव आए हैं. जैसे-जैसे आधुनिकता हमारे मूल्यों और रिश्तों

पर हावी होती जा रही है. संस्कृति में पतन के फलस्वरूप रिशतों में मजबूती और प्रेम की जगह दिखावे ने ले ली है. आज के बदलते समय में इस त्योहार पर भी आधुनिकता हावी होने लगी है, तब से आज तक यह परंपरा तो चली आ रही है लेकिन कहीं न कहीं हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं.

रंग-बिरंगे धागों में अब अपनत्व की भावना और प्रेम की गर्माहट कम होने लगी है. एक समय में जिस तरह के उसूल और संवेदना राखी को लेकर थी शायद अब उनमें अब रुपयों के नाम की दीमक लगने लगी है फलस्वरूप रिशतों में प्रेम की जगह पैसे लेने लगे हैं. ऐसे में संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की. क्योंकि राखी का ये अनमोल रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा भर नहीं है. लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है. बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता, अटूट रिश्ते कैसे बन पाएंगे. इतिहास में कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमें युद्ध के दौरान श्री कृष्ण की उंगली घायल हो गई थी, श्री कृष्ण की घायल उंगली को द्रौपदी ने अपनी साड़ी में से एक टुकड़ा बाँध दिया था, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट में द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था. रक्षा बंधन की कथाएं बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसी बहन का साया जब भी भाई को पुकारता था, तो दुनिया की हर ताकत से लड़ कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था.

कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली. रानी लड़ने में असमर्थ थी, अतः उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की. हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरुद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की. जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई. द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी. यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था. कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया. कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई. आज एक बार फिर भातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है. उसकी इज्जत एवं अस्मिता को बार-बार नोचा जा रहा है.

लड़कों से ज्यादा बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊँची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है. उसे नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे. इन विपरीत हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं. इसलिए मेरा मानना है कि राखी के इस परम पावन पर्व पर भाइयों को ईमानदारी से पुनः अपनी बहन ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की, कसम लेने की अहम जरूरत है. तभी ये राखी का पावन पर्व सार्थक बन पड़ेगा और

भाई-बहन का प्यार धरती पर शाश्वत रह पायेगा. यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्त्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फ़िल्में भी इससे अछूते नहीं हैं. रक्षाबन्धन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है.

लेकिन अब प्रेम रस में डूबें रंग-बिरंगे धागों की जगह चांदी और सोने की राखियों ने ली तो सामाजिक व्यवहार में कर्तव्यों को समझने के बजाय रिवाज को पूरा करने कि नौबत आई. प्रेम और सद्भावना की जगह दिखावे ने ले ली. तभी तो रक्षा-बंधन के दिन सुबह उठते ही हर किसी के स्टेटस पर बस रक्षाबंधन की तस्वीरें और वीडियो की भरमार होती है, अब बहनों की जगह ई-कॉमर्स साइट ऑनलाइन आर्डर लेकर राखी दिये गये पते पर पहुँचाती है. अगर हम सोशल मीडिया पर दिखावे की जगह असल जिंदगी में इन रिश्तों को प्रेमरूपी जल से सींचा जाए तो हमेशा परिवार में मजबूती बनी रहेगी. राखी के त्योहार का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारों और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है, लेकिन क्या सही मायनों में बहन की रक्षा हो पाती है? आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बेहद आवश्यक हो गया है.

राखी के दिन केवल अपनी बहन की रक्षा का संकल्प मात्र नहीं लेना चाहिए नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत के मान-सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए ताकि सही मायनों में राखी के दायित्वों का निर्वहन किया जा सके. रक्षाबंधन पर्व पर हमें देश व धर्म की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए.

स्नेह पर्व राखी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



राखी, पर्व स्नेह का लायी,
मन में मृदुता भरे मिठाई.

बहिन ने प्रेम से बाँधी राखी,
भाई की सज गई कलाई.

प्रिय भाई संपन्न सुखी हो,
दिया बहिन ने अमित बधाई.

बहिन की रक्षा में हो तत्पर,
भाई ने शुभ रीति निभायी.

स्वाभिमान से बहिन कह रही,
देसी राखी स्वयं बनायी.

बहिनों को ही राखी बाँधें,
जिनके नहीं सगा हो भाई.

पेड़ों को भी बाँधें राखी,
चहुँदिश हरीतिमा हो छायी.

राष्ट्रधर्म भी करें प्रदर्शित,
धागा एक महा सुखदायी.

राखी पर्व है याद दिलाता,
संबंधों में हो गहराई.

बढ़े चलो

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सोने की चिड़िया को सैकड़ों वर्षों के संग्राम के बाद आजाद कराने वाले उन महान वीर सपूतों, प्रख्यात और गुमनाम नायकों को पीढ़ी दर पीढ़ी हमेशा याद रखा जाएगा उनके सम्मान में हम वर्ष भर से आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं जो 15 अगस्त 2022 को पूर्ण होगा .परंतु इस दिन के लिए संपूर्ण भारत सहित विदेशों में भी अभूतपूर्व उत्साह हो रहा है. इस उत्साह का साक्षी बनने अनेक अनिवासी भारतीयों के भारत आने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता. नागरिकों में हर घर तिरंगा और बढ़ते चलो अभियानों से बहुत उत्साह है.परंतु विशेष रूप से ध्यान देना होगा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम की समग्र गाथा, गर्व की अभिव्यक्ति कर युवाओं में देशभक्ति की गहरी भावना पैदा करना समय की मांग है, क्योंकि आज के युवा हमारे देश का भविष्य हैं और बागडोर इन्हीं के हाथों में जाने वाला है. इसीलिए भविष्य की रूपरेखा की रणनीतिक परिकल्पना में युवाओं को उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छूने के लिए तैयार करने का समय आ गया है.

साथियों बात अगर हम बढ़े चलो अभियान की करें तो पीआईबी के अनुसार इसकी शुरुआत 5 अगस्त से हो गई. बढ़े चलो 5 से 11 अगस्त, 2022 तक हर दिन 10 शहरों में आयोजित किया जा रहा है. इन कार्यक्रमों का समापन 12 अगस्त, 2022 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में एक ग्रैंड फिनाले के साथ होगा. देश भर के युवाओं और लोगों को एक मंच पर जोड़ने और एक मंच पर लाने के लिए, बढ़े चलो की विशेषता फ्लैश डांस हैं, जहां नर्तक विशेष रूप से तैयार किए गए 'युवा गान' पर प्रस्तुति देंगे. संगीत और पैरों की थाप के साथ बनाए गए गान को विशेष रूप से लिखा गया और 'बढ़े चलो' की विषय वस्तु पर तैयार किया गया है. यह सभी को आगे आने और अपने घरों में तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करता है. आधुनिक और युवाओं को प्रेरणा देने वाले इस कार्यक्रम की विशेषता पूरे भारत के 75 शहरों में प्रमुख स्थानों पर होने वाला फ्लैश डांस होगा. इन फ्लैश डांस के माध्यम से मंत्रालय

का उद्देश्य मनोरंजक और उत्साही तरीके से अमृत महोत्सव के संदेश और भावना लोगों को फैलाना है। साथियों आजादी का अमृत महोत्सव' प्रगतिशील भारत के 75 साल पूरेहोने और इसके लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करने तथा उसका उत्सव मनाने की सरकार की एक पहल है। संस्कृति मंत्रालय भारत में कला और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने का कार्य करता है और 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तत्वावधान में इसने अनेक पहल की हैं। देश के युवाओं से जुड़ने और उनमें देशभक्ति की गहरी भावना पैदा करने के उद्देश्य से, संस्कृति मंत्रालय ने अमृत महोत्सव से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के लिए 'बढ़े चलो' नाम से युवाओं पर केन्द्रित प्रेरणात्मक कार्यक्रम करने का निर्णय लिया है। इस कार्यक्रम को देश के युवाओं को आगे आने और हमारे लोकतंत्र की सच्ची भावना को आत्मसात करने तथा भारत की आजादी के 75 साल पूरे जोश के साथ मनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

साथियों इस जन आंदोलन या जनभागीदारी पहल के माध्यम से संस्कृति मंत्रालय भी 'हर घर तिरंगा' आंदोलन को बढ़ावा देने और समर्थन करने का इरादा रखता है। इस आंदोलन की शुरुआत माननीय पीएम और गृह मंत्री द्वारा की गई है तथा यह हर भारतीय का आह्वान करता है कि वे 13-15 अगस्त, 2022 के बीच अपने घरों में तिरंगा फहराएं। बढ़े चलो निश्चित रूप से एक ओर सभी में देशभक्ति की आग को फिर से जगाने के लिए, हमें अपने घरों में तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, हमारे दिलों में राष्ट्रीय गौरव और हमारे सिर ऊंचे हैं।

साथियों बात अगर हम धारावाहिक स्वराज की करें तो पीआईबी के अनुसार, धारावाहिक 'स्वराज-भारत के स्वतंत्रता संग्राम की समग्र गाथा' का शुभारंभ किया गया है। 'स्वराज' के बारे में - स्वतंत्रता संग्राम की समग्र गाथा, जो स्वराज एक 75 एपिसोड्स का धारावाहिक है जिसे 4 के/एचडी गुणवत्ता में बनाया गया है और 14 अगस्त से हर रविवार, रात 9 से 10 बजे ये दूरदर्शन पर प्रसारित होगा। इसे अंग्रेजी के साथ नौ क्षेत्रीय भाषाओं में डब किया जा रहा है। ये धारावाहिक तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगाली और असमिया क्षेत्रीय भाषाओं में 20 अगस्त से प्रसारित होगा। 1498 में वास्को-डी-गामा के भारत आने से शुरू होकर ये सीरियल इस धरती के वीरों की एक समृद्ध गाथा प्रस्तुत करेगा। इसमें रानी अब्बक्का, बख्शी जगबन्धु, तिरोट सिंग, सिद्धू मुर्मू और कान्हू मुर्मू, शिवप्पा नायक, कान्होजी आंग्रे, रानी गाइदिनल्यू, तिलका मांझी जैसे कई गुमनाम नायक नायिकाओं से लेकर रानी लक्ष्मीबाई, महाराज शिवाजी, तात्या टोपे, मैडम भीकाजी कामा जैसे मशहूर स्वतंत्रता सेनानी शामिल हैं।

साथियों बात अगर हम कार्यक्रम स्वराज में केंद्रीय मंत्रियों के संबोधन की करें तो उन्होंने इस अवसर पर कहा कि दूरदर्शन और आकाशवाणी ने 550 से भी अधिक स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस की गाथाओं को पुनः जीवंत करने और इन गुमनाम नायकों से युवा पीढ़ी को परिचित कराने का अत्यंत सराहनीय कार्य किया है। केन्द्रीय गृह मंत्री ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के अर्थ की व्याख्या

की और कहा कि यह सिर्फ हमारे स्वतंत्रता संग्राम का उत्सव नहीं है, बल्कि आजादी के बाद से पिछले पचहत्तर वर्षों की उपलब्धियों, हमारे स्वतंत्रता संग्राम के प्रख्यात एवं गुमनाम नायकों के बलिदान को याद करने का उत्सव भी है. उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा मौका भी है जब हम भारत के भविष्य की रूपरेखा की कल्पना कर रहे हैं और भारत यहां से बस उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छूने जा रहा है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बढ़े चलो यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की समग्र गाथा, गर्व की अभिव्यक्ति कर युवाओं में देशभक्ति की गहरी भावना पैदा करना समय की मांग है आजादी के अमृत महोत्सव में बढ़ते चलो, धारावाहिक स्वराज्य, हर घर तिरंगा अभियानों का जबरदस्त उत्साह है पूरी दुनिया की नजरें भारत के उत्सवों पर लगी है जो देश के हर नागरिक के लिए गर्व और प्रतिष्ठा की बात है.

संपूर्ण रूप से अहिंसा वादी बने

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे

अहिंसा

जी, बहुत से घर में हम देखते हैं, जहां किसी का बहुत ज्यादा अपमान होता है, खास तौर पर एक औरत का, जब आप उसे बार-बार यह कहते हैं, तुम्हें कुछ नहीं आता, तुम्हें आता ही क्या है, तुम कुछ नहीं कर सकती, जब बहुत सारे अपशब्द को उपयोग में लाते हैं, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाते हैं या पराए लोगो से संबंध बनाते हैं.

मानसिक दर्द, अपमान, धोखा कभी भुलाया नहीं जा सकता, चाहे इंसान कितना ही आगे बढ़ जाए. याद रखिए, कभी-कभी आप जाने अनजाने में, अपने अभिमान में, अपने शौक को जीने में इतने मग्न हो जाते कि किसी को जिंदगी भर की पीड़ा दे जाते हैं और इसके बाद में दो-चार आंसू बहा देने से या माफी मांगने से वह पीड़ा कम नहीं होती और कुछ लोग तो अभिमान में इतने चूर होते हैं कि जब उनकी मृत्यु नजदीक होती है तब ही उन्हें समझ में आता है, की हमसे कोई गलती यह गुनाह भी हुआ.

स्वयं के साथ वक्त बिताए और जानिए ऐसे कौन-कौन से कर्म है जो हम किसी के साथ कर रहे हैं और हमें खुद के लिए मंजूर नहीं. जो हमें स्वयं के लिए मंजूर नहीं उसे आज से ही त्याग दीजिए, भूलिए मत पृथ्वी गोल है, कर्म अच्छे हो या बुरे दोबारा लौट के जरूर आते हैं.

आपको आज नहीं तो कल, इस बात का जरूर एहसास होता है, कि आपने किसी के साथ कितना गलत किया. खुदा की मर्जी, जो जिसके लायक है उसे वही मिलेगा, इसे सोच कर अपने गलत कर्मों से बचने की कोशिश ना करें.

अगर जाने-अनजाने में हमने किसी के साथ बुरा कर भी दिया, तो उनसे माफी मांगने के साथ-साथ, उनके साथ बहुत ज्यादा अच्छा करने की कोशिश कीजिए, कि शायद वो आपकी गलती को भूल जाएं, शायद उनके कुछ जख्म भर जाए.

आपको लगता है कि हमारी की गई गलती, किसी को दिया हुआ दर्द माफ हो सकता है, पर सोचिए अगर वह इंसान दुनिया के दिलों को जीत लेता है और सभी का पसंदीदा बन जाता है, कल को हर जगह या युगो युगो तक उसकी चर्चा होती है, तो भूलेगा नहीं की युगो युगो तक जिसने गलत कार्य

किया है, उसका दिल दुखाया है, उसे तकलीफ पहुंचाई है, ऐसे अत्याचारी को कोई भी माफ नहीं करेगा, सभी के मुख से उसके लिए अच्छा नहीं निकलेगा, तो सोचिए उसकी आत्मा को शांति कब मिलेगी. उदाहरण के तौर पर आज भी कंस, रावण , दुर्योधन, हिटलर और भी कहीं ऐसे उदाहरण है जिन्हें कोई आशीर्वाद के साथ याद नहीं करता, करता है तो बहुआ देते हुए.

हम में से कोई यह नहीं चाहता है, पर चाहने और प्रयत्न करने में बहुत फर्क है, कोई भी इंसान कमजोर नहीं, कोई भी व्यक्ति डरपोक नहीं, बस बात इतनी सी है, की कुछ लोग छोटी-छोटी बातों को बड़ी नहीं बनाना चाहते और इसी कारण उनके लिए बड़ी बड़ी बातें छोटी हो जाती है, अगर एक औरत यह नहीं चाहती की उसके मां-बाप को या बच्चों को तकलीफ हो तो वह आपकी हर बात को नजरअंदाज करती रहती है, इसका मतलब यह नहीं कि आप कुछ भी बोलते रहें, आप उसके साथ कुछ भी करते रहे, खुदा सब देख रहा है और वह कर्मों का हिसाब शत प्रतिशत रखता है, दिखावा करना बंद करें, अगरबत्ती लगाने या उस खुदा के गुणगान गाने से पहले कुछ गुणों को अपने अंदर भी लाएं.

किसी का हौसला तोड़ना, किसी के स्वाभिमान को चोट पहुंचाना, किसी को आगे बढ़ने से रोकना, रोज रोज ताने मारना, बेइज्जत करना, किसी को मानसिक पीड़ा देना, घुट घुट के जीने पर मजबूर कर देना, अपने पति या पत्नी के होते हुए किसी गैर के साथ संबंध बनाना, किसी की आत्मा और मन पर चोट पहुंचाना, किसी के चरित्र पर उंगली उठाना, किसी के आत्मविश्वास को तोड़कर चकनाचूर कर देना, किसी के अस्तित्व पर वार करना, किसी को नीचा दिखाना यह सब भी हिंसा है.

हिंसा करने वाला हो या सहने वाला हो दोनों के अंदर ही एक कसक सी रह जाती है, दोनों ही दर्द में होते हैं! इसीलिए आज से और अभी से हमें नजरअंदाज ना करते हुए , इन सारी बातों को समझें और जाने और अपने जीवन में उतारे.

चलो रहते हैं सब से प्रेम से, करते हैं पूरा विश्वास,
ना तोड़े अपनों का भरोसा, इतना हो हम में साहस,
क्यों करें स्वयं को और किसी को उदास,
बस इतनी-सी ही है इस माध्वी की दरखास्त!!

संयम मनुष्य का सर्वोत्तम चिकित्सक

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे

आजकल के समय में, सभी के अंदर धैर्य की बहुत कमी है, बहुत सी बार कर्मचारियों से गलती हो जाती है, पर उसे समझाने की जगह मालिक उस पर चिल्लाने लगता है, उसे डांटने लगता है. अब जब भी वह गलती करेगा उसे आपकी डांट याद आएगी, अगर यही बात हमने उन्हें समझदारी से

संयम

समझाही होती तो जब भी वह यह गलती करता तो जानता की इसके पीछे क्या नुकसान है. बचपन में भी बहुत से बच्चों को इस चीज से गुजरना होता है, कभी-कभी माता पिता और टीचर्स में धैर्य की कमी से उन्हें डांट पड़ती है यहां तक की मार भी पड़ती है. अब वह छोटा सा बच्चा जब जब वह गलती करेगा तो उसे उनकी डांट और मार ही याद आएगी. कितना अच्छा होता अगर उसके बड़े उसे प्यार से समझा दे और क्या सही है, क्या गलत है, सब में फर्क बताते, पर नहीं कभी-कभी बड़ों को यह लगता है, की शॉर्टकट रास्ता अपना लिया जाए, इस डांट फटकार से उस बच्चे पर क्या असर पड़ता है, उसका उन्हें अंदाजा भी नहीं, अब बड़े होते होते जब जब कोई और भी वह गलती करेगा तो वह बच्चा यही समझेगा की डांट ना और फटकारना इसका उपाय है क्योंकि उसने भी यही देखा, समझा, और सीखा. यहाँ तक की जब बड़ा हो जाएगा और कोई गलती करेगा तो खुद को सजा देगा इसीलिए आजकल बहुत से लोग कभी खुद को मारते हैं, चिल्लाते हैं, यहाँ तक की आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है वह सजा के पात्र हैं. अगर हम इंसान है तो हमें हर बात में इंसानियत रखनी चाहिए. हम अपने बच्चों पर किसी तरह का दबाव तो नहीं डाल रहे हैं.क्या हम उन्हें छोटी-छोटी बात पर हाथ तो नहीं उठा रहे हे!?क्या सबके सामने उनके बेज्जती तो नहीं कर रहे हो?

माता पिता और टीचर्स भगवान का रूप माने जाते हैं पर यह भी इंसानी व्यवहार नहीं है कि हम अपनों से छोटों पर यहां तक कि किसी पर भी हाथ उठाए और क्रोध करें या मजाक उड़ाए.

किसी की गरिमा को ठेस पहुंचाना, चाहे वह छोटा सा बच्चा ही क्यों ना हो, सरासर गलत है. यहां तक कि गिड़गिड़ा कर, रो

कर अपनी बात को मनवाना भी अधीरता है.

अक्सर एक वाक्य पूछा जाता है की अकल बड़ी या भैंस बड़ी? क्योंकि अगर इंसान दिमाग से और शांति से कोई बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़े तो वह लड़ाई बहुत आसानी से लड़ सकता है, अपने दिमाग के बल पर ना कि हाथ पैरों से, और यही तो फर्क है इंसान और जानवर में.

जानवर अपने बच्चों को बोलकर और समझदारी से अपनी बातों को समझा नहीं सकते हैं पर इंसान कर सकता है.

क्यों ना हमको ऊपर वाले ने माता पिता, टीचर, मालिक बनाया हो पर इन सभी रिश्तो को हम प्यार, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, और धैर्य के साथ निभा सकते हैं.

छोटी सी जिंदगी है, तो क्यों ना हम सभी से प्यार से, खुशी से, शिष्टाचार से, धैर्य से, सम्मान से, सत्कार से, अच्छाई से, समझदारी से पेश आए और सोचे, समझे कि अगर हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार चाहते, ठीक वैसा ही व्यवहार हमें किसी की गलती पर करना चाहिए. विशेष रूप से छोटे बच्चे, अच्छे व्यक्ति के साथ.

हाँ, अगर कोई अपराध करे तो, कानूनी कार्यवाही उन अपराधियों के खिलाफ की जाए पर हमें खुद को जीवन में शांति चाहिए, प्रसन्न मन चाहिए तो हमें खुद को और दूसरों को हर बात समझदारी और धैर्य से समझानि होगी.

पहले तो हम अपने आप को यह बात समझाएं की हर एक चीज का समाधान हो सकता है. किसी पर भी अपने या अपनों से बड़ों के फैसले को दूसरों पर ना थोपे.

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों की शादी जल्दबाजी में करा देते हैं क्योंकि उनके दादा-दादी या नाना-नानी की यह आखिरी इच्छा होती है, पर उन बच्चों के भविष्य का क्या? तो आप उन्हें प्यार और स्नेह देते हुए समझाएं.

बहुत से बच्चे शादी होते ही कुछ महीनों में अपने मां-बाप से अलग हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह कभी नहीं समझेंगे की उनकी बहू बेटे उनसे क्या चाहते हैं. पर वो यह भूल जाते हैं की जब से वह मां-बाप बने है, तो उनकी चाहत के लिए ही तो जी रहे हैं, क्यों ना हम भी उन्हें ठीक वैसे ही समझाएं जैसे वह हमें बचपन में समझाते थे, जब उन्होंने हमें बचपन में नहीं छोड़ा तो हम उनको उनके बुढ़ापे में अलग क्यों कर दे.

धैर्य से काम ले, हर बात पर जल्दबाजी, दुर्व्यवहार करना, अपशब्द का उपयोग करना बंद करें!

अगर किसी की गलती करने पर आप उस पर चिल्लाते हैं और अपशब्द बोलते हैं तो वह तो गुनाहगार है पर आप मानसिक रूप से बीमार है.

खुद को पहचाने कि हम उस शक्ति से बने हैं, हम में बहुत सारा, धैर्य, स्नेह, शिष्टाचार और इंसानियत है.

मैं अबोध बालक शिशु हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



मैं अबोध बालक शिशु हूँ,
माँ का गोद मेरा संसार है.
आंचल से है मिलती छाया,
माँ का दूध मेरा आधार है.

खुद कष्टों में रहके माँ मेरी,
मुझको खुशियाँ दे देती है.
खुद भूखी रखके माँ मेरी,
मुझको दूध पिला देती है.

माँ के बिना मुझे चैन नहीं,
मेरी माँ ममता का सागर है.
माँ के बिना जीवन है सुना,
उसी से बचपन उजागर है.

कर हौसला, कर हिम्मत

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



कर हौसला, कर हिम्मत, तुझमें
तेरा तो अभी इंसान बाकी है.
अभी तो संघर्ष शुरू हुआ है,
तेरा अभी इम्तिहान बाकी है.

न डरना कभी न झुकना कभी,
अभी तो सारा जहान बाकी है.
हौसला दिखा, और पर लगा
अभी तो तेरा अरमान बाकी है.

जो डर गया वो बिखर गया,
अभी तो स्वाभिमान बाकी है.
कब तक बेबस जिंदगी जीएगा,
अभी तो तेरा सम्मान बाकी है.

कब तलक सम्मान खोते रहोगे,
अभी तेरा अधिकार बाकी है.
यह तो अधिकार की लड़ाई है,
अभी तो तेरा हुंकार बाकी है.

कमर कसना होगा भिड़ना होगा,
अभी तो तेरा जोश बाकी है.
किसी के बहकावे में मत आना,
अभी तो तुझमें होश बाकी है.

मत हो परेशान, मत हो हलाकान,
अभी तो तेरी मंजिल बाकी है.
मत हार हौसला, मत हार हिम्मत,
अभी तो तेरा साहिल बाकी है.

स्वतंत्रता की समर वेदी पर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



स्वतंत्रता की समर वेदी पर,
जिसने अपना बलिदान दिया.
आओ श्रद्धा से शीश झुकाएं,
जिसने तन-मन को दान दिया.

आओ उन वीरों को याद करें,
जिसने हमें यह सम्मान दिया.
आओ उनका गौरव-गान करें,
जिसने मिट्टी का मान किया.

व्यर्थ न जाए उनका बलिदान,
जिसने हमें यह उपहार दिया.
आओ उनका गुणगान करें,
जिसने गुलामी से उद्धार किया.

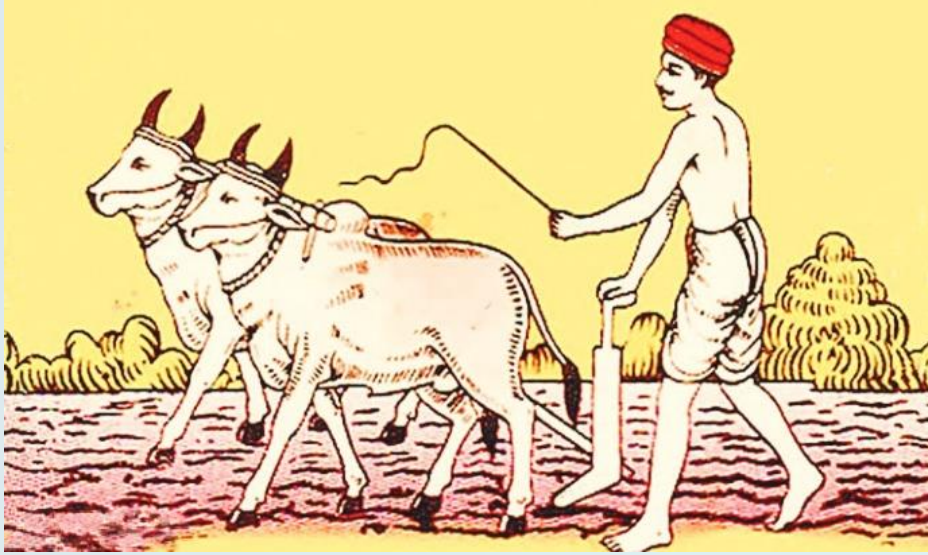
भूल से न हम भूलें देश प्रेम,
जिसने हमें यह मूल मंत्र दिया.
आओ उनको हम नमन करें,
जिसने हमें यह लोकतंत्र दिया.

घोर यातना कष्ट को न भुलाएँ,
जिसने हँसते हुए प्राप्त किया.
आओ हम भी तो अहसास करें,
जिसने खुशियाँ पर्याप्त दिया.

धर्म जाति को जिसने भुलाया,
मजहब के लिए स्वयं दान दिया.
आओ उन पर अभिमान करें,
जिसने आजादी का वरदान दिया.

किसान

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



मैं धरती का अन्नदाता हूँ
मैं धान फसल उगाता हूँ
मैं ही किसान कहलाता हूँ
मैं अपना धर्म निभाता हूँ

मैं माटी पुत्र कहलाता हूँ
मैं ही तो पसीना बहाता हूँ
मैं जग का ध्यान रखता हूँ
मैं सबको अन्न खिलाता हूँ

मैं स्वयं भूखा रह जाता हूँ
मैं धानी हरियाली लाता हूँ
मैं धरती का श्रृंगार करता हूँ
मैं ही फैसले लहलहाता हूँ

मैं पहिली भोर की किरण में,
मैं सबसे पहले जग जाता हूँ
मैं बैलों को साथ में ले जाकर,
मैं ही खेतों में हल चलाता हूँ

मैं धरती का मान बढ़ाता हूँ.
मैं श्रम की पूजा करता हूँ.
मैं पसीने से ऋण चुकाता हूँ.
मैं ही तेरा लाल कहाता हूँ.

रानी का रक्षाबंधन

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



सावन की चौदस तिथि. बाजार में काफी चहल-पहल. चारों तरफ खूब शोरगुल, दुकानों में खूब रौनकता. बड़े-बड़े लट्ठों को जगमगाया गया है, जिसकी इंद्रधनुषी रश्मियाँ आखों को सम्मोहित कर रही हैं. दुकानों में काफी भीड़ है. दरअसल रक्षाबंधन का पर्व जो आया है. लोग तरह-तरह की राखियाँ और मीठे-मीठे पकवान खरीद रहे हैं. दुकानों में-

"भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना.. "स्वर लहरियां गूंज रही थी. ठीक ऐसे समय में दस साल की एक लड़की रानी राखी दुकान के पास पहुंचती है, चूंकि भीड़ बहुत थी.

इधर-उधर ताकती है. तभी उसको एक दुकान में भीड़ कम दिखी.

और फिर फुदकते हुए झट से वहाँ पहुंच जाती है और फिर सारे राखियों को देखने के बाद उसकी नजर एक राखी में अटक जाती है, जिसमें लिखा हुआ था-"मेरे प्यारे भैया."

फूला न समाते हुए रानी राखी बड़े प्यार से हाथ में उठाती है और कहती है-"राखी वाले भैया यह राखी कितने की है?"

तब दुकान वाला कहता है-

"पूरे-पूरे बीस रुपया!"

इतना सुनते ही रानी के पैरों तले जमीन खिसक जाती है.चूंकि उसके पास तो मात्र बीस रुपया है और मिठाई भी तो खरीदनी है. फिर क्या था,वह चुपके से उस राखी को वहीं रख के दुखी हो उल्टे पांव घर आ जाती है.

घर पहुंचकर सुसक-सुसक कर रोने लगती है.उसके बाबा पास आकर पूछते हैं-"क्या हुआ बेटा क्यों रो रही ?"रानी कहती है-

"बाबा वो राखी....वो मिठाई".....

बाबा पुनः पूछते हैं-

तो क्या नहीं मिली ?

फिर रानी और जोर से रोना शुरू कर देती है. तब उसके बाबा उसको प्यार से वहाँ ले जाने के लिए कहते हैं, जहाँ पर दुकान थी. वहाँ जाकर उसके बाबा को समझ में आ गया और उसने बीस की राखी दस रुपए में देने के लिए दुकानदार से खूब गिड़गिड़ाया पर उसने साफ मना कर दिया.

तब तो रानी यह कहते हुए और जोर-जोर रोना शुरू कर दिया की आज वह अपने भाई को राखी नहीं बांध पाएगी.इतना सुनने के बाद भी दुकानदार को रंच मात्र भी दया नहीं आई. उल्टा नाराज होकर वहाँ से जाने के लिए कह दिया.तब उसके बाबा दुखी होकर कहते है- "ठीक है !ठीक है!चले जाते हैं! पर एक बात याद रखना किसी के आंसू बेबसी,और गरीबी का मजाक कभी मत उड़ाना.इसके आंसू में भाई का प्रेम है,यह मात्र राखी नहीं है. इसमें भाई बहन के अटूट प्रेम का बंधन है,जिसने आज तुमने तोड़ दिया. फिर वहाँ से रानी को समझाते हुए दुखी होकर चला आता है. इधर जैसे ही घर वापस आया उसके घर के सामने एक चमचमाती कार खड़ी दिखी.रानी के बाबा सहम गए और सोचने लगे आखिर उनके घर में यह कौन आ गए?

जैसे-तैसे डरते हुए घर में प्रवेश किया.

जो सज्जन बैठे थे उनको देखकर चौंक गए."सेठ जी !सेठ जी !कहते हुए उसके चरणों में गिर गए.सेठ जी आप हमारे गरीब खाने में ?आपने मुझे बुला लिया होता न मैं स्वयं आपकी सेवा में हाजिर हो जाता."

तब सेठ जी कहते हैं-

"अरे !नहीं-नहीं भाई !तुम तो मेरे घर रोज सेवा करने आते हो.आज रक्षाबंधन का पर्व है.इसलिए काम बंद है.आज मैं स्वयं तुम्हारे घर सेवा देने आ गया.तुम्हारे बच्चों के लिए कुछ सामान लाया हूं." और बाबा को थमा देते हैं.संकोच करते हुए थैली को बाबा लेते है. एक कोने में रानी गुमसुम उदास बैठी थी.

बाबा ने थैली को टटोल कर जैसे ही सामान को बाहर निकाला हथेली में जगमगाती हुई राखियाँ और मिठाइयाँ झाँकने लगी.

खुशी के मारे बाबा के मुँह से अचानक निकल गया—

"राखी !राखी !..... मिठाइयाँ !"

रानी ने जब यह सुना ,मुरझाया चेहरा फूलों की तरह खिल उठा और राखी ! राखी !कहते हुए —

बाबा से लिपट जाती है.यह देख सेठ जी भाव-विभोर हो जाते हैं.

बाबा अपने सेठ जी को बार-बार धन्यवाद दे रहे थे और रानी हाथों में राखी लेकर—"बहना ने भाई की कलाई पर" ...गाते हुए उछल रही थी.

उत्कृष्ट धातु

रचनाकार- कामिनी जोशी

Group	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
Period 1	1	2																He
Period 2																		
Period 3																		
Period 4																		
Period 5																		
Period 6																		
Period 7																		

आओ बच्चों तुम्हें दिखाऊँ मैं एक जादू,
जादू का नाम दें, देखो उत्कृष्ट धातु.
नाम इतना कठिन है कि हो जाता बुद्धि नष्ट,
याद कर-करके नाम होने लगता कष्ट.
सीधा-सा हम नाम दे-दे, ये है सबसे अच्छा.
आभूषण बनाने में इसका उपयोग होता बच्चा.
वायु, जल, अम्लीय पदार्थों से ये नहीं डरता,
अच्छे-अच्छे गहनों से हमें खुश करता.
विशेषता इसकी लंबे समय तक रहती है चमक,
जिससे मन में खरीदने की होती है ललक.

इस कविता के माध्यम से बच्चों को आसानी से उत्कृष्ट धातु के बारे में समझाया जा सकता है.

प्यारा सावन

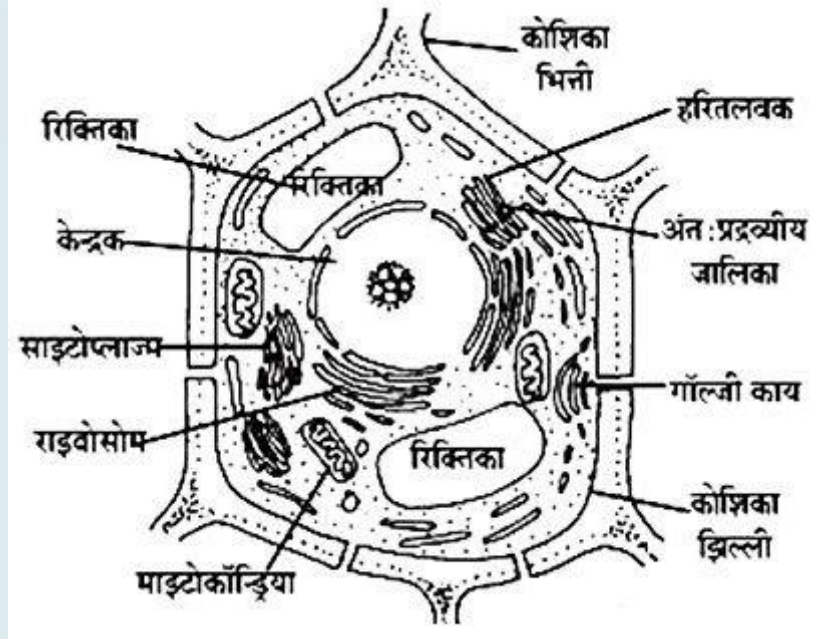
रचनाकार- कामिनी जोशी



आया रे प्यारा सावन,संग अपने लाया हरियाली.
पर्यावरण के सुंदर दृश्य, करना हमको रखवाली.
चारों तरफ है घनघोर अंधेरा,
बरसते पानी का मनोरम सवेरा.
इस मौसम में रखना है सावधानी,
किसी प्रकार से नहीं करना नादानी.
संचारी रोगों की महामारी
होती है कई बीमारी.
इस प्यारे मौसम को हमें, आनंद से गुजारना हैं.
ना हो कोई परेशानी, इस बात का ध्यान रखना है.

कोशिका

रचनाकार- कामिनी जोशी



हमारे शरीर की रचनात्मक इकाई
जो कोशिका कहलायी.

आकार इनका मधुमक्खी के छत्ते के समान,
वह दिखता है प्यारा ईंटों का मकान.

इनके बिना शरीर का कोई नहीं आधार,
हर कोई अधूरा है बच्चा स्वस्थ हो या बीमार.

कई प्रकार की होती है जीवों में इसकी आकृति,
चिपचिपा पदार्थ जीवद्रव्य इसमें तैरते रहती.

हमारे शरीर की रचनात्मक इकाई
जो कोशिका कहलायी.

अवंतिका

रचनाकार- संगीता पाठक



कंचनपुर में राजा अनंतदेव का शासन था.वे बहुत ही सनकी राजा थे.एक बार उन्होंने सैनिकों की बैठक रखी.

उन्हें आदेश दिया कि आप सभी वन प्रांत में जाकर बारहसिंघों के शीश काट कर लाओ. आपको पुरस्कृत भी किया जायेगा.

राजा के सैनिक वन क्षेत्र में चले गये.वहाँ विचरण करते हुये अनेक बारहसिंघों का शिकार करने लगे.उसी वन में ऋषि अर्णव का आश्रम था.उनका आश्रम अत्यंत सुंदर था.आश्रम में नाना प्रकार के पुष्प खिले हुये थे.पशु पक्षी निर्भय होकर विचरण कर रहे थे.हिरणों के बीच में चरते हुये दो बारहसिंघे बहुत सुंदर दिख रहे थे.उनकी त्वचा स्वर्ण के जैसी चमक रही थी.

राजा के दो सैनिक आश्रम के निकट पहुँचे.वे बारहसिंघों की सुंदरता पर मंत्र मुग्ध हो गये जैसे ही उन्होंने सरसंधान किया.एक दूसरा तीर उनके दोनों तीरों को काटते हुये बिजली की गति से निकल गया.सैनिकों ने देखा एक ऋषि कन्या वहाँ हाथ में धनुष लिये खड़ी थी.

ऋषि कन्या "-सैनिक! निरीह पशु की हत्या करते हुये तुम्हें किंचित भी लज्जा नहीं आती है."

सैनिक-" हमारे राजा का आदेश है कि जहाँ भी बारहसिंघ दिखे.हम उसका सिर काट कर उनके पास ले जायें."

ऋषि कन्या-"चलो मैं अवश्य ही राजा से मिलने राज दरबार में चलूंगी."

आश्रम की सेविकाओं के साथ वह राजा अनंतदेव से मिलने राज दरबार में पहुँची.

ऋषि कन्या -"प्रणाम महाराज!मैं आपसे एक निवेदन करने यहाँ उपस्थित हुई हूँ.हमारे आश्रम में दो बारहसिंघे स्वर्ण आभा मंडित अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं.वो दोनों बारह सिंघे उन्मुक्त विचरण कर रहे थे.मादा बारहसिंघ के ऊपर आपके सैनिक ने तीर चलाने का जघन्य अपराध किया है.इसकी जितनी भी निंदा की जाये वह कम होगी."

राजा अनंत देव-"हे बालिके !तुम कौन हो?"

ऋषि कन्या -"महाराज !मैं ऋषि अर्णव की सुपुत्री हूँ.मेरा नाम अवंतिका है."

राजा अनंत देव-" बालिके !तुमने हमारी आँखें खोल दी हैं.हमें ना जाने कितने निरपराध मूक पशुओं की हत्या का पाप लगता. हम तुम्हारे साहस की भूरी भूरी प्रशंसा करते हैं.हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं.तुम्हें पुरस्कार देना चाहते हैं."

अवंतिका -"राजन !यदि आप मुझे पुरस्कृत करना चाहते हैं तो वन प्रांत की रक्षा करना आपका परम कर्तव्य है.आप वनांचल में विचरण करने वाले पशुओं का अवश्य ही संरक्षण कीजिये."

राजा अनंत देव -"अवश्य ही हम संपूर्ण वनांचल में रक्षा करने हेतु सैनिकों को तैनात कर देंगे.हम आश्रम में जाकर वो दो बारहसिंघों की स्वर्ण आभा को देखना चाहते हैं."

अवंतिका -"अवश्य ही महाराज !आपके आगमन से हम सभी वनवासी अपने आपको कृतार्थ अनुभव करेंगे."

अवंतिका आश्रम की सहचरियों के साथ प्रस्थान करती है.

निरीह पशुओं के लिये उसके मन में कितनी संवेदनशीलता थी कि स्वयं राजा अनंत देव भी अभिभूत हो गये.

बंदर मामा हमें बताओ

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



बन्दर मामा हमें बताओ,
तुम जंगल छोड़ के आये क्यों?
घर के छत, मुँडेर में आकर,
तोड़ फोड़ मचाये क्यों?
किचन में भी घुस आए,
मेरे सारे फल को खाये क्यों?
गमले के सारे पौधों को,
तोड़े और बिखराये क्यों?
लगे भगाने तुमको तो,
गुस्से में दांत दिखाए क्यों?
चिल्लाकर तुम जोर जोर से,
भारी दहशत फैलाए क्यों?

बंदर मामा का ड्रामा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



बन्दर मामा-बन्दर मामा,
पहन के कुर्ता और पाजामा.
धरे हैं, सर पे टोपी लाल,
छड़ी हाथ में, करे कमाल.
भांति-भांति करतब दिखाता,
दर्शक को सब,खूब हंसाता.
कभी ये बन जाता है नारी,
लीला करता प्यारी प्यारी.
बॉस का जैसे आर्डर पाता,
करने लगता है, हर ड्रामा.
बन्दर मामा-बंदर मामा.

मेरे घर की दीवालघड़ी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



मेरे घर के दीवाल पर,
जो दीवाल घड़ी है,
वो उम्र में मुझसे,
बहुत बड़ी है.
ममता मयी सन्देश देकर,
मुझे रोज सुलाती है,
उसे मेरा फिक्र रहता है,
सुबह जल्दी उठाती है.
जी हाँ, उसके रहते, मुझे
न किसी काम में लेट होता है,
मेरे लिए न कभी भी बंद,
मेरे स्कूल का गेट होता है.
पूरा-पूरा उपयोग,
मेरे दिन का हर पल होता है,
उसके ही कारण मेरा हर काम
सहज व सफल होता है.
मेरी दिनचर्या में न
किसी प्रकार की हड़बड़ी है.
मेरे घर के दीवाल पर,
जो दीवाल घड़ी है.

बस मुस्कुराना सीख लो

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



जीवन मे मगन रहना है, तो
तुम मुस्कुराना सीख लो.
सन्तुष्ट सदा रहना है,
तो बांट के खाना सीख लो.
जीवन मे मगन रहना है, तो
तुम मुस्कुराना सीख लो.

झंझट से बचके जीना है,
तो झंझट को भुलाना सीख लो.
जीवन मे मगन रहना है, तो
तुम मुस्कुराना सीख लो.

तन्हाई से बच के रहना है,
तो सबसे हाथ मिलाना सीख लो.
जीवन मे मगन रहना है, तो
तुम मुस्कुराना सीख लो.

मंजिल हासिल करना है,
तो ठोस कदम बढ़ाना सीख लो.
जीवन मे मगन रहना है, तो
तुम मुस्कुराना सीख लो.

सावन आया, सावन आया

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



सावन आया,सावन आया,
अम्बर गगरी को छलकाया.
धम-धम,धम-धम बजे नगाड़े,
फुलझड़ि लगातार चलाया.
सावन आया,सावन आया,
अम्बर गगरी को छलकाया.

काले मेघ सघन बरसे जब,
मोर को वन में खूब नचाया.
सावन आया,सावन आया,
अम्बर गगरी को छलकाया.

तरित हुए जब ताल तलैया,
दादुर को भी गीत गवाया.
सावन आया,सावन आया,
अम्बर गगरी को छलकाया.

गली गांव की, बन गए नाले
बच्चों से कागज नाव चलवाया.
सावन आया,सावन आया,
अम्बर गगरी को छलकाया.

बैगलेश शनिवार

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय



हुआ शनिवार दिन बैगलेश,
आज नहीं हमको वीकनेश.
मिली छूट बस्तों से एक दिन,
अब नहीं कोई तन में बोझा.

ड्राईंग पेंटिंग खूब करेंगे,
पहला ईनाम हम जीतेंगे.
मम्मी पापा का हम सभी,
जग में रोशन नाम करेंगे.

लंगड़ी, फुगड़ी, पिठूल, खो-खो,
मिलजुल कर हम खेलें खेल.
चाहे कोई जीते या क़ोई हारे,
नहीं टूटेगा अब अपना मेल.

गुरुजनों के बताए मार्ग पर,
चलकर हम आर्दश बनेंगे.
ज्ञान की ज्योत जलाकर हम,
शिक्षा में नवसंचार करेंगे.

अमर रहेगा नाम

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

अमर

पल-पल का वो साथ हमारा,
इक दूजे सँग रहते थे.
छोटी-मोटी हर बातों को,
खुलकर दोनों कहते थे.
बीत रहा था वो लम्हा भी,
बड़ी हुई मैं छाया में.
जरा धूप ना आये मुझपे,
छुपा रखे थे काया में..

हँसते गाते साथ बिताये,
और चली लम्बी बातें.
बहुत समय है कहते कहते,
बीत गयी वो भी रातें.
फड़क रही थीं आँखें मेरी,
सपनों ने भी घेरा था.
नींद खुली जब झट से मेरी,
लगा किसी का डेरा था.

नहीं होठ मुस्कान जरा भी,
बहती आँसू की धारा.
छूट गया पल में ही सब कुछ,
टूट गया सपना सारा.
बादल गरजे बिजली चमके,
औचक ही बरसे पानी.
सुध-बुध खोये बैठे हम थे,
रूक गयी ये जिनगानी.

प्यार हमेशा करते रहना,
पूरा करना हर वादे.
बेटी बापू का रिश्ता है,
हर पल आयेगी यादें.
साथ हमारा बना रहेगा,
समा गये तुम माटी में.
अमर रहेगा नाम सदा ही,
साहित की परिपाटी में.

भारत छोड़ो आंदोलन

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत में पिछले एक वर्ष से जोश और उमंग के साथ शासन प्रशासन और निजी स्तर पर हर क्षेत्र में आजादी का 75 वां अमृत जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है. अभी सोने पर सुहागा, घर-घर तिरंगा, बड़े चलो सहित अनेक प्रेरणादायक कार्यक्रमों का आयोजन 15 अगस्त 2022 तक करने से हर भारतीय के हृदय में राष्ट्रहित देशभक्ति की भावना परवान चढ़ रही. यह अभियान जोश-खरोश के साथ चल रहा है, जो मेरा मानना है भारतीय इतिहास में कभी नहीं हुआ, ऐसा है मेरा भारत. इस अवसर पर मेरा सुझाव है कि भारत की स्वतंत्रता के लिए चलाए गए सभी आंदोलनों से हमें प्रेरणा लेकर वर्तमान में भारत विरोधी ताकतों, भ्रष्टाचारियों, अपराधियों, जनता का हक मारने वालों, अज्ञात स्रोतों से धन कमाने वालों, मानव तस्करी सभी प्रकार के अवैध नशे व्यापारियों सहित भारत के सोने की चिड़िया बनने में खलल डालने वालों के खिलाफ वैसे ही रणनीतिक रोडमैप से मुकाबला करने का संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि हम 8 अगस्त 2022 का भारत छोड़ो आंदोलन की 80 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं इसलिए इस आर्टिकल के माध्यम से हम अंग्रेजों के भारत छोड़ो आंदोलन, करो या मरो नारे और इन से प्रेरणा लेकर ना खाऊंगा ना खाने दूंगा और खाओगे तो जाओगे पर चर्चा करेंगे.

बात अगर हम 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन की करें तो, सन् 1857 के पश्चात देश की आजादी के लिए चलाए जाने वाले सभी आंदोलनों में सन् 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' सबसे विशाल और सबसे तीव्र आंदोलन साबित हुआ. जिसके कारण भारत में ब्रिटिश राज की नींव पूरी तरह से हिल गई थी. आंदोलन का ऐलान करते वक्त गांधी जी ने कहा था मैंने कांग्रेस को बाजी पर लगा दिया. यह जो लड़ाई छिड़ रही है वह एक सामूहिक लड़ाई है. सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन

भारत के इतिहास में अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता रहा. भारत छोड़ो आंदोलन द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को आरम्भ किया गया था, जिसका मकसद भारत मां को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराना था. ये आंदोलन देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की ओर से चलाया गया था. बापू ने इस आंदोलन की शुरुआत अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुंबई अधिवेशन से की थी. भारत छोड़ो आंदोलन दिवस: 'करो या मरो' का आह्वान 8 अगस्त 1942 को, महात्मा गांधी ने मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत करते हुए राष्ट्र को अपना भाषण दिया, जिसे अगस्त क्रांति मैदान भी कहा जाता है. महात्मा गांधी ने अपने भाषण में लोगों से राष्ट्र के लिए करो या मरो का आह्वान किया था. इसका मतलब था कि हम या तो भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराएंगे या राष्ट्र की रक्षा करते हुए मर जाएंगे, हम अब अंग्रेजों के गुलाम नहीं रहेंगे. भारत छोड़ो आंदोलन को अपने उद्देश्य में आशिक सफलता ही मिली थी लेकिन इस आंदोलन ने 1943 के अंत तक भारत को संगठित कर दिया. युद्ध के अंत में, ब्रिटिश सरकार ने संकेत दे दिया था कि सत्ता का हस्तांतरण कर उसे भारतीयों के हाथ में सौंप दिया जाएगा. इस समय गांधी जी ने आंदोलन को बंद कर दिया जिससे कांग्रेसी नेताओं सहित लगभग एक लाख राजनैतिक बंदियों को रिहा कर दिया गया. भारत छोड़ो आंदोलन को अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है. 8 अगस्त को क्विट इंडिया मूवमेंट डे 2022 का 80 वां वर्षगांठ मनाया गया. भारत की आजादी के कई आंदोलन चलाए गए, जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

लोग ब्रिटिश शासन के प्रतीकों के खिलाफ प्रदर्शन करने सड़कों पर निकल पड़े और उन्होंने सरकारी इमारतों पर कांग्रेस के झंडे फहराने शुरू कर दिये. लोगों ने गिरफ्तारियां देना और सामान्य सरकारी कामकाज में व्यवधान उत्पन्न करना शुरू कर दिया. विद्यार्थी और कामगार हड़ताल पर चले गये. बंगाल के किसानों ने करों में बढ़ोतरी के खिलाफ संघर्ष छेड़ दिया. सरकारी कर्मचारियों ने भी काम करना बंद कर दिया, यह एक ऐतिहासिक क्षण था. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ही डॉ. राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली जैसे नेता उभर कर सामने आये. भारत छोड़ो आंदोलन के परिणाम का फल ही है कि भारतीय नागरिक आज खुली हवा में सांस ले रहे हैं. भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था.

रक्षासूत्र

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



सुन मेरी प्यारी सहोदरा,
राखी बांधने आना तुम.
देखता रहूंगा राह तुम्हारी,
मुझे भूल ना जाना तुम.

खरीदना बाजार से राखी,
लाना लड्डू मीठी मिठाई.
लगाना भाल विजय तिलक,
पुकार रही है खाली कलाई.

भेंट करूंगा एक नया उपहार,
खुशी से झूम कर नाचोगी.
सुख-समृद्धि कि कामना करके,
रक्षासूत्र जीवन का बांधोगी.

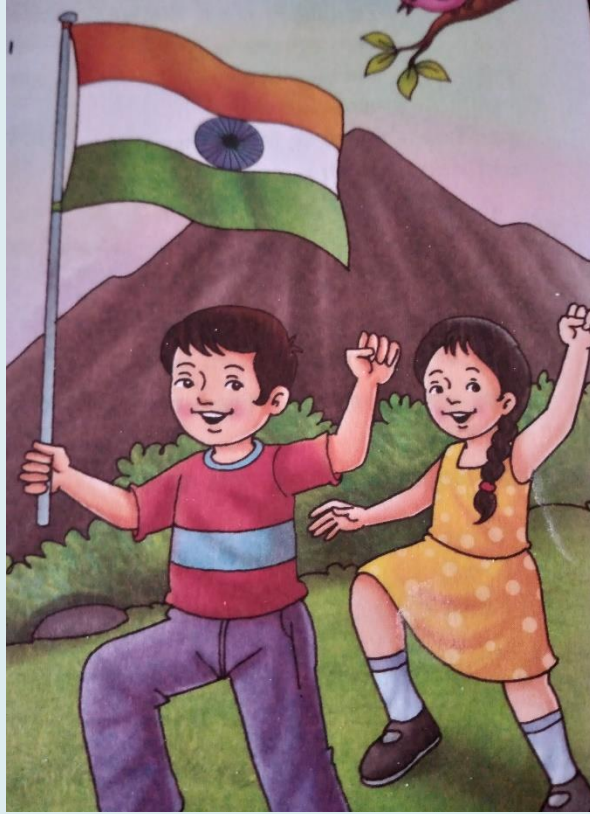
जब संकट में घिर जाओगी,
मेरा नाम लेकर देना आवाज.

कहना अभी मेरा भाई जिंदा है,
मेरे लिए लड़ेगा वो है जांबाज.

जब कोई मानव-अमानव बन,
दुःख और दर्द तुझे पहुंचाएगा.
उस दिन बनकर योद्धा रक्षक,
तेरा ये भाई दौड़ा चला आएगा.

आओ जय जय गान करें

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



आओ जय-जय गान करें,
भारत माता का ध्यान करें.
माँ भारती की अमिट निशानी,
तिरंगे का हम सम्मान करें.

जिस मिट्टी में जन्म लिए,
जहाँ खेलें-कूदे पले-बढ़े.
आओ हम सब यह जीवन
भारत माता के नाम करें.

मातृभूमि की रक्षा खातिर,
वार दिये अपना सबकुछ.
उन वीरों को हम याद करें,
उनके यश का गान करें.

सर्व हिताय सर्व सुखाय,
एकता की हम दें मिसाल.
भाई-भतीजा हम ना करें,
आपस में ना हम लड़े मरें.

सुखी परिवार

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



बरगद के जैसे दादा-दादी घर का आधार है
फलता फूलता जिससे सदा घर संसार है
जन्नत है घर इनसे, प्रकृति का ये उपहार है
वास्तव में इस जग में वही सुखी परिवार है
सारे रिश्ते नाते प्रेम और संस्कार सिखाते
अपने अनुभव से हमें यहाँ जीना सिखाते
मिलजुल कर रहना ही जिसका आधार है
वास्तव में इस जग में वही सुखी परिवार है.

फूफा-फूफी, काका-काकी और नाना -नानी
आधार शिला बन सिखाते हैं आँखों का पानी
इनके अभिसिंचन से बनता सफल संसार है
वास्तव में इस जग में वही सुखी परिवार है.

स्वाभिमान बढ़ेगा बच्चों में होगा सब अनुकूल
एक दूसरे का मान रखते ना हो कोई प्रतिकूल
रिश्तों की मर्यादा का बस यही तो आधार है
वास्तव में इस जग में वही सुखी परिवार है.

माता-पिता मिलकर गृहस्थी की गाड़ी चलाते है
परिवार की पोषण हेतु मिलकर कदम बढ़ाते हैं
समता, ममता, वात्सल्य का जँहा विस्तार है,
वास्तव में इस जग में वही सुखी परिवार है.

घर घर तिरंगा, हर घर तिरंगा

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



दुनिया के गुलशन में एक देश है रंग-बिरंगा
फहरेगा अब घर-घर तिरंगा, हर घर तिरंगा-2

कश्मीर से कन्या कुमारी, उत्तर से दक्षिण तक
सीमा की छोर तक, पूरब से लेकर पश्चिम तक.
समता और एकता की पहचान तिरंगा
फहरेगा अब घर घर तिरंगा हर घर तिरंगा.

तीन रंग से सजा हुआ भारत की आन है
लहर-लहर लहराता ये भारत की शान है.
देश के जन-गण-मन का अभिमान तिरंगा
फहरेगा अब घर-घर तिरंगा हर घर तिरंगा.

परिलक्षित होती है जिसमें कौमी एकता
दर्शन होती है जिसमें अनेकता में एकता.
भारत के रज कण का स्वाभिमान तिरंगा
फहरेगा अब घर-घर तिरंगा हर घर तिरंगा.

हिन्दू और मुस्लिम की, सिख और इसाई की
तीन रंग से सजा हुआ प्रतीक है तरुणाई की.
सरहद के हर जवान का है अरमान तिरंगा
फहरेगा अब घर-घर तिरंगा हर घर तिरंगा.

भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी देश है रंग-बिरंगा
सबको आपस में जोड़े समता का तिरंगा.
वसुधैवकुटुंबकम् के भाव का नाम तिरंगा
फहरेगा अब घर-घर तिरंगा हर घर तिरंगा.

सागर मे जितना पानी

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



सागर में जितना पानी इतना मेरी आँखों में,
लहरों की मौज जितना, मौज मेरी पाँखों में.

ऊँचे होंगे इरादे जितने, उतना ही उमंग आएगा,
कामयाबी का नशा दिन-दिन बढ़ता ही जाएगा.

बैठे बैठे सपने देखने से सफलता नहीं मिलती,
बस सपनों की उड़ान से आकाश नहीं मिलता.

सफलता के लिए, कठोर परिश्रम करना पड़ता है,
लक्ष्य साधने हेतु निरंतर अभ्यास करना पड़ता है.

परिश्रम का जग में कोई दूजा विकल्प नहीं होता,
मन में गर ठान लो झूठा कोई संकल्प नहीं होता.

जैसे-जैसे हम सफलता की ओर बढ़ते जाते हैं,
राह की अड़चनें भी तब कमजोर नजर आती हैं.

राह की मुश्किलों से कदम जिसके डगमगाएँगे,
सफलता का मीठा स्वाद फिर कैसे चख पाएँगे.

दृढ़ संकल्प के साथ जब लक्ष्य साधा जाता है,
तभी सफलता का मीठा फल हमें मिल पाता है.

रक्षाबंधन

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



प्रेम बसा इसमें रेशम की बस डोर नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

दो दिलों के पवित्र बंधन का यह रिश्ता,
अम्बर से उतरे जनम-जनम से ये रिश्ता.
इस जग में इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

संग पले और बढ़े स्नेह बराबर पाये जो,
लड़ते व झगड़ते प्रेम की धार बहाये जो.
सम है दोनों प्रेम में, कोई कमजोर नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

मिले सावन पूर्णिमा में सजल होते दो नैन
बांध रक्षा सूत्र इस दिन पाते हैं दोनों चैन.
रक्षाबंधन से बड़ा बंधन कोई और नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

भाई बहन के लाडप्यार की राखी है पहचान,
एक दूजे पर जान लुटा दे बस इतना अरमान.
ये अटूट बंधन है जिसमें गांठ का ठौर नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

एक पिता के साये दो संग-संग करे अठखेली,
बात बात में रूठे और माने हैं अजब पहेली.
रक्षाबंधन से बड़ा जग मे कोई त्यौहार नहीं,
ये स्नेह के धागे जिसका कोई छोर नहीं.

गुरुजी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



देके ज्ञान लइका मन ला, रद्दा नवा दिखाथे गुरुजी.
कक्षा मा बइठा के रोज, जीए के ढंग सिखाथे गुरुजी.
दुनिया मा का का होवत हे, एला तको बताथे गुरुजी.
पुस्तक कापी अउ कलम के, महत्ता ला बताथे गुरुजी.

भर देथे मन मा नवा आस, नइ होवन दे निराश गुरुजी.
दीया जइसन बरत रहिथे, बगराथे जग मा अंजोर गुरुजी.
पढ़थे लइका के मन ला सुख दुख मा रहिथे साथ गुरुजी.
देथे आशीष आघू बढे बर, मुड़ी मा रखथे हाथ गुरुजी.

दाई-ददा हा जनम देथे, जिनगी के कला सिखाथे गुरुजी.
भगवान बरोबर होथे ओहा, सच के रद्दा दिखाथे गुरुजी.
सादा जिनगी जीथे जिनगी भर, ज्ञान के भंडार गुरुजी.
भविष्य बनाथे लइका मन के, देथे मया दुलार गुरुजी.

तुम तो पढ़े लिखे हो

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सोचता हूँ क्यों पढ़ा मैं तानों को जब सुनता हूँ,
अनपढ़ रहता तो ठसके से कहता मैं तो अनपढ़ हूँ,
जिम्मेदारी जवाबदारी से बचता कहता मैं तो अनपढ़ हूँ,
समस्या बड़ी विचित्र है जिसका मैं पीड़ित हूँ.

व्यावहारिक शिक्षा जन्म से मिलती है,
इसके सब परिपक्व विशेषज्ञ शिक्षित हैं.
काम पड़े तो जवाबदारी से बचो,
शान से कहो मैं अनपढ़ तुम पढ़े-लिखे हो.

समस्या बड़ी विचित्र है जिसका मैं पीड़ित हूँ,
जो सब-कुछ समझते हैं उनसे मैं पीड़ित हूँ,
कहते हैं हम अनपढ़ हैं पढ़े लिखों को ताने देते हैं,
पढ़े लिखों को मिलते तानों से मैं पीड़ित हूँ.

काम बन गया तो अपने को होशियार कहते हैं,
बिगड़ गया तो कहते हैं मैं तो अनपढ़ हूँ.
तुम तो पढ़े-लिखे हो फिर क्या किए,
पढ़े लिखों के तानों से मैं पीड़ित हूँ.

विज्ञान हाइकु

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



ज्ञान विज्ञान
आविष्कार करता
नए तथ्यों का

दिव्य विज्ञान टीवी
शत शत नमन
ज्ञान की खान

ऋषि - मुनि थे
वैज्ञानिक - साधक
ज्ञानी मनीषी

सूर्य से हुई
कुल सृष्टि - रचना
वेद बताते

गणित सूत्र
शून्य गुणे अनंत
है अनिश्चित

पदार्थ संख्या
शून्य और ऊर्जा का
गुणनफल

विज्ञान मत
सृष्टि मिथ्या नहीं है
है स-उद्देश्य

निर्वात ही है
परमात्मा ईश्वर
चलाता सृष्टि

ऊर्जा है आत्मा
जो नष्ट नहीं होती
बदले रूप

उदित होगा
सूरज विज्ञान का
पूर्व दिशा से

विज्ञान देता
महती योगदान
हर क्षेत्र में

विज्ञान होता
प्रश्नचिह्न से परे
सत्य - दर्शक

पढ़ें - पढ़ाएँ
विज्ञान - प्रौद्योगिकी
हिंदी भाषा में

ज्ञान विज्ञान
हिंदी के माध्यम से
आगे बढ़ेगा

मानव धर्म
अध्यात्म - विज्ञान का
है समन्वय

तुम तो पढ़े लिखे हो

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



सृष्टि में अनमोल बौद्धिक ज्ञान का धनी मानवीय प्राणी को जन्म से ही परिवार, समाज, मानवीय संपर्कों से व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान मिलना शुरू हो जाता है. याने जैसे-जैसे मानुष बाल्य काल से बचपन और फिर युवा होता है, वैसे-वैसे व्यवहारिक ज्ञान शिक्षा के माध्यम से स्वतः संज्ञान से उसकी बौद्धिक क्षमता परिपक्व होती जाती है और फिर स्कूल-कॉलेज से लेकर अनेक डिग्रियों यानें किताबी ज्ञान पाकर सोने पर सुहागा की कहावत हम पूरी करते हैं. इस तरह हम देखते हैं कि, शिक्षा दो तरह की होती है. एक किताबी शिक्षा और दूसरी व्यवहारिक शिक्षा. अगर किताबी शिक्षा के साथ-साथ हमको व्यवहारिक शिक्षा का ज्ञान नहीं है तो हम शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित की श्रेणी में आयेंगे. और अगर हमको शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी है तो हम शिक्षित लोगो की श्रेणी में आयेंगे. हम आम तौर पर देखते हैं कि स्थिति बिगड़ती देख अच्छे-अच्छे व्यवहारिक ज्ञान वाले व्यक्ति भी किताबी ज्ञान वालों को कहते हैं तुम तो पढ़े लिखे हो, हम को क्या समझता है, हम तो अनपढ़ हैं. बस, इसी वाक्य में वे अपनी जवाबदारी से पीछा छुड़ाकर किताबी ज्ञान वालों के ऊपर डाल देते हैं और जब स्थिति अपने पक्ष में हो रही हो तो कहते हैं, देखो मैंने यह किया, फिर तुम्हारी पढ़ाई लिखाई किस काम की? इसीलिए स्थिति पक्ष में हो या विपक्ष में, दोनों स्थितियों में व्यवहारिक ज्ञान के धनी की ही जीत है. इस सामाजिक स्थिति पर व्यंग्य के रूप में हम इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे.

बात अगर हम किताबी ज्ञान की करें तो, परिभाषा के अनुसार जिसने किताबी ज्ञान अर्जित किया हो और स्कूल कॉलेज की परीक्षाओं को पास करके डिग्री हासिल की हो वो शिक्षित है, और जिसे अक्षर ज्ञान ना हो, वो किताबी अनपढ़. पर क्या शिक्षा का अर्थ सिर्फ केवल किताबी ज्ञान अर्जित करना ही है? एक शिक्षित इंसान के द्वारा फेंका हुआ कचरा, अगर सुबह एक किताबी अशिक्षित इंसान (सफाई

कर्मचारी) उठाता है, ऐसे में किसे शिक्षित कहना चाहिए सफाई कर्मचारी को या कचरा फेंकने वाले को? आजकल की शिक्षा ऐसे ही रटने की शिक्षा होती जा रही है. जहाँ मतलब समझ आए या ना आए, बस रट्टा मारों और पास हो जाओ.

शायद इसीलिये किताबी पढ़े-लिखे अनपढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही है. पिछले कुछ दशकों में शिक्षा का स्तर काफी बढ़ गया है पर, शिक्षा की वैल्यू खत्म होती जा रही है. ध्यान दे तो याद आता है जहाँ कुछ साल पहले ग्रेजुएशन ही काफी था, आज पोस्ट ग्रेजुएशन, क्या पीएचडी की भी कोई वैल्यू नहीं है. तकनीकी शिक्षा पर जोर है. तकनीकी शिक्षा गलत नहीं है पर सिर्फ तकनीकी शिक्षा से काम नहीं चलेगा.

बात अगर हम किताबी शिक्षित और किताबी अनपढ़ व्यक्तियों की करें तो, बहुत अंतर है. किताबी अनपढ़ आदमी केलकुलेटर चलाना नहीं जानता. सारा हिसाब-किताब उंगलियों से करना पड़ता है. पढ़ा-लिखा आदमी बिना केलकुलेटर के चार में से दो घटाने के लिए भी अपनी उंगली नहीं घिसता. किताबी अनपढ़ व्यक्ति के पास अपने अनुभव के अतिरिक्त कुछ नहीं होता जबकि पढ़ा-लिखा व्यक्ति औरों के अनुभव भी उपयोग में ले आता है. किताबी अनपढ़ व्यक्ति अधिक प्रैक्टिकल होता है. शिक्षित व्यक्ति इतना नहीं होता. कहीं बाहर जाने पर पढ़ा-लिखा व्यक्ति आसानी से पता ढूँढ़ लेता है, जबकि किताबी अनपढ़ को परेशानी होती है. एक युग था जब समाज में किताबी अनपढ़ बहुत थे तो उनका कामकाज भी उसी तरह चलता था. आज किताबी अनपढ़ व्यक्ति को हर तरह की परेशानी उठानी पड़ती है. उसे पढ़े-लिखे लोगों पर आश्रित रहना पड़ता है.

शिक्षित व्यक्ति किसी भी सुनी-सुनाई बातों पर जल्दी विश्वास नहीं करता है. जब तक वह उन्हें अपनी मन की कसौटी पर खरा नहीं उतार लेता. जबकि एक किताबी अनपढ़ व्यक्ति को कह दो कि तुम्हारा कान कौवा ले गया है तो वह अपने कान को नहीं देखेगा, बल्कि कौवे के पीछे भागना शुरू कर देगा. जबकि एक पढ़ा लिखा व्यक्ति पहले अपने शरीर के सभी अंगों को ठीक से चेक करेगा. फिर क्यूँ कहेगा? बस यही शिक्षित और किताबी अनपढ़ व्यक्ति में अंतर है. किताबी अनपढ़ लोगों पर व्यवहारिक ज्ञान होता है मगर अशिक्षित व्यक्ति वह होते हैं जो व्यवहारिक ज्ञान में भी पिछड़े होते हैं. कुछ अपवादों को छोड़कर शिक्षित में संस्कार और लोकाचार का अभाव मिलता है. दोनों शब्द पर्यायवाची है पर कह देते हैं यह किताबी अनपढ़ अंगूठा टेक है मगर वह संस्कारित हो सकता है. अशिक्षित के लिए कहा जाता है कि तुम तो पढ़-लिखकर अशिक्षित ही रहे. किताबी अनपढ़ को कुछ बातें में अनदेखा कर देते हैं या कहे वह अपनी कमजोरी छुपा जाते हैं, पर अशिक्षित से ऐसी आशा कम की जाती है. वह अपनी कमी नहीं छुपा पाते. कुछ विशेष अंतर नहीं है भावनात्मक अंतर ही लगता है. किताबी अनपढ़ की अपेक्षा अशिक्षित शब्द अधिक बुरा लगता है.

बात अगर हम संस्कारों और विचारधारा की करें तो व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान के परिपक्व व्यक्ति अपने कुल और माता-पिता के विचारधारा पर चलकर संस्कारों का परिचय देते हैं. वहीं किताबी ज्ञान

डिग्री लेने वाले कुछ अपवादों को छोड़कर संस्कारों और विचारधारा में साफ फर्क दिखा देने लगते हैं. अपने कुल और माता-पिता की विचारधारा पुरानी और ढकोसली लगने लगती है. रिश्ते-नातों में कमजोरी को बल मिलता है और विवाहित होने पर सिर्फ अपने परिवार की जवाबदारी तक सीमित हो जाते हैं. जबकि व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों में ऐसा नहीं है. परंतु यह हम जरूर कहेंगे के किताबी ज्ञान वालों से अधिक ज्ञान समझ रखने वाले व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों के दोनों हाथों में मलाई होती है, जिसे स्थिति अनुसार प्रयोग में करते हैं. स्थिति बिगड़ी तो तुम तो पढ़े लिखे हो, हम ठहरे अनपढ़, हमको क्या समझता है और परिस्थिति का हमारे तरफ झुकाव रहा तो, देखो तुम तो पढ़े लिखे हो, तुम्हारी पढ़ाई लिखाई किस काम की? हम तो अनपढ़ ही अच्छे है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो हमारे मानवीय गुणों को भी विकसित करे हमें संवेदनशील, सहनशील और व्यवहारिक के साथ-साथ देश और समाज के प्रतिजागरूक भी बनाएं. जैसे प्राचीन काल में गुरुकुल में होती थी. जहाँ ना सिर्फ पुस्तक ज्ञान सिखाते थे बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यवहारिक और शस्त्र ज्ञान भी शिक्षा के साथ-साथ ही सिखाया जाता था. अगर अच्छी किताबी शिक्षा या व्यवहारिक शिक्षा होने के बावजूद भी हम दकियानुसी सोच रखते हैं. अपने घर को साफ रखते हैं, पर सड़क पर कचरा करते हैं, दूसरो की पर्सनल लाईफ़ पर कमेंट करते हैं तो हमारे शिक्षित होने का क्या अर्थ है?

राखी का त्यौहार

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"



भाई बहन का प्यारा रिश्ता,
आया राखी का त्यौहार.
घर घर में खुशियाँ लाया,
देखो भाई बहन का प्यार.

रोली चंदन से थाल सजा,
आरती कर तिलक लगाया.
लड्डू पेड़ा बरफी देखो,
थाली भरकर बहना लाई.

रेशम की डोरी बाँध कर,
दुआ माँगती है बारम्बार.
प्रीत निभाती प्यारी बहना,
भाई देता है प्यारा उपहार.

सदियों से चला आ रहा,
रक्षाबंधन का यह पर्व.
भाई बहन का प्यार देख,
होता मात पिता को गर्व.

तिरंगा झंडा भारत की शान है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



तिरंगा झंडा मेरे देश भारत की शान है
यह मेरे देश की अपनी पहचान है.

मेरे देश की गरिमा विश्व में महान है
इस तिरंगे से ही हमारा स्वाभिमान है.

देश का प्रतीक तिरंगे पर अभिमान है
सदैव हम करते रहें इसका सम्मान है.

इस तिरंगे से हमेशा हमे होता ये भान है
इसकी गरिमा बनी रहे इसका सदा ध्यान है.

केशरिया रंग समर्पण और बलिदान है
सफेद रंग सुख शांति की पहचान है.

हरा रंग हरियाली से धरा की मुस्कान है
सदा फहरे यह तिरंगा ऊँचे आसमान है.

बाल पहेलियां (रक्षा बंधन के पावन पर्व पर)

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार



1. बहन की रक्षा करने का,
है कर्तव्य हमारा.
साथ बड़े हैं साथ पले
प्यार हमारा न्यारा.
2. तीन अक्षर का मेरा नाम,
देखो भूल न जाना.
शान बनूँ मैं हर भाई की
जब राखी पर होता आना.
3. बांध कर मुझको हर भाई,
सुंदर लगता है.
शपथ सुरक्षा की लेकर
आगे बढ़ता है.

4. भाई बहन का पर्व अनोखा,
सबको भाता है.
हंसी खुशी से इसे मनाओ,
संदेशा लाता है.

5. तीन अक्षर का मेरा नाम,
मुंह में आए पानी.
अंतिम अक्षर ई है मेरा
नाम बताओ रानी.

उत्तर- 1. भाई, 2. बहन, 3. राखी, 4. रक्षाबंधन, 5. मिठाई

तिरंगा

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"



तीन रंगों से सजा तिरंगा,
देश की शान बढ़ाता है.
रंग केसरिया, श्वेत, हरा
संदेश हमें दे जाता है.

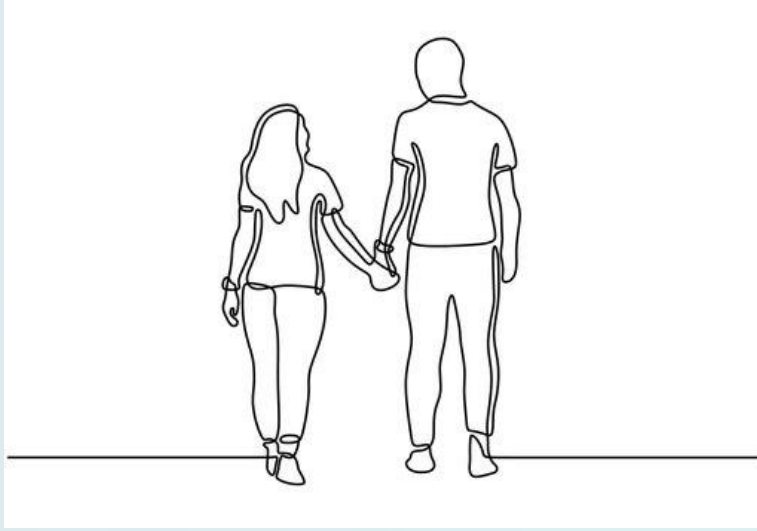
रंग केसरिया त्याग सिखाये,
श्वेत रंग शांति गुण गाये.
हरा रंग समृद्धि लाये,
सब मिल देश का मान बढ़ाये.

जब भी तिरंगा लहराये,
हर भारतवासी हर्षाये.
मन गर्व से भर जाये,
आँखों में चमक आ जाये.

तिरंगे का सम्मान करें,
नहीं कभी अपमान करें.
देश की आन बचाने को,
अपना सर्वस्व कुर्बान करें.

मेरे मनमीत

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



मेरे मनमीत हम दो दिल एक जान,
एक रंग में रंग कर चलते हम शान से,
खेलते रहते थे बचपन में कई खेल,
चर्चा गली-गली, जन-जन पहचान.

शिक्षा ग्रहण करने जाते पाठशाला,
ज्ञान अर्जित किए श्यामपट्ट काला,
दोनों सखा कार्य कुशल प्रतिभावान,
गुरु से सीखे जीवन जीने की कला.

यौवन काल चित्त रम गया प्रीत में,
नाच रहे थे झूम कर मधुर संगीत में,
लक्ष्य हेतु प्रयास करते थे उत्साहित,
भव्य सफलता खुशी मिली जीत में.

जिस दिन धिरेंगे वेदना के बादल,
शब्द बाणों से होगा हृदय घायल,
संकट में एक दूसरे का नाम पुकारेंगे,
उस दिन दोनों की आँखें होगी सजल.

देखकर दीन-हीन दशा हम आएँगे,
मझधार में डूबते को पार लगाएँगे,
तैयार रहेंगे हर चुनौती के लिए मित्र,
मैं तुम्हें, तुम मुझे, जनसमूह बचाएँगे.

मच्छरदानी और मच्छर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



एक घर में बहुत सारे मच्छर रहते थे. वह सब घर वालों का खून चूस कर बहुत मोटे तगड़े हो गए थे. सारे मच्छर रात भर लोगों का खून चूसते और सुबह होते ही इधर उधर छुप जाते. एक रोज घर के मालिक ने घर के सभी सदस्यों के लिए शहर से मच्छरदानी खरीद कर सबको दे दी. अब तो घर के सभी लोग अपने अपने कमरों में मच्छरदानी लगा कर सोने लगे. मच्छरदानी को देख कर सारे मच्छरों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा. उन्हें खून मिलना बन्द हो गया. वे भूख प्यास से तड़पने लगे.. एक रोज मच्छरों का सरदार सभी मच्छरों से बोला अब हमें मच्छरदानी में घुस कर लोगों का खून पीना चाहिए. यह सुन कर एक नवजवान मच्छर उठ कर बोला सरदार जी आप पागल तो नहीं हो गए हैं. हम छोटे छोटे छेदों से मच्छरदानी के अन्दर कैसे घुस पाएंगे. नव जवान मच्छर की बात सुन कर सारे मच्छर बोल पड़े यह नव जवान मच्छर ठीक कह रहा है. इतना सुनकर मच्छरों का सरदार बोला मैं हूं तो किसी को घबराने की जरूरत नहीं है. मैं रात में मच्छरदानी का एक कोना पकड़ कर उठा दिया करूंगा ताकी तुम सब आसानी से अन्दर घुस सको. हां हां हमारे सरदार जी ठीक कह रहे हैं. सारे मच्छर एक साथ बोल पड़े. फिर मच्छरों के सरदार ने कहा जब तुम सब का खून चूस कर पेट भर जाएगा तब मैं फिर आ कर मच्छरदानी उठा दूंगा ताकी तुम सब बाहर निकल सको. सरदार की बात सभी मच्छरों को जंच गई.

अगले दिन मच्छरों के सरदार ने सभी मच्छरों को मच्छरदानी उठा उठा कर घर के सभी सदस्यों की मच्छरदानी में घुसा दिया. मच्छरदानी के अन्दर पहुंच कर सारे मच्छर घर के लोगों का खून पीना शुरू कर दिया. मच्छरों के काट कर खून पीने से घर के सारे सदस्य जाग गए और मच्छरदानी में घुसे मच्छरों को देख कर हथेली से दबा दबा कर उन्हें मारने लगे. एक दूसरे को मरते देख कर सारे मच्छर बचाओ बचाओ चिल्लाने लगे. मच्छरों का सरदार भी मच्छरों को मरते देख कर अपनी जान लेकर वहां से भाग

खड़ा हुआ. इधर घर के सभी सदस्य मच्छरदानी में घुसे सभी मच्छरों को मार मार कर राहत की सांस ली. कुछ मच्छर जो बाहर रह गए थे वे अपने सरदार मच्छर को बुला कर कहने लगे आप की वजह से हमारे सारे साथी मारे गए. अब ऐसी गलती कभी मत कीजिएगा. वरना हम मच्छरों का विनाश हो जाएगा. मच्छरों के सरदार ने अपनी गलती की शेष बचे मच्छरों से माफी मांगी. उस दिन से मच्छर मच्छरदानी को अपना दुश्मन मानते आ रहे हैं.

मच्छर पर मुकदमा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बंटू मच्छर जब से फूलों के बाग में आ कर रहने लगा तभी से फूलों के बाग में रहने वाले सोनू गौरैया, टिंकू बुलबुल, श्यामू कोयल, रानी तितली, चन्दन भंवरा और चकमक टिड्डी, बंटू के काटने से परेशान रहने लगे. एक रोज रानी तितली फूलों का रस पीने में मस्त थी. तभी बंटू मच्छर उड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और रानी तितली के पंख पर बैठ कर जैसे ही रानी तितली को काटना चाहा वैसे ही रानी तितली उड़ कर बंटू मच्छर के गाल पर एक थप्पड़ मारती हुई बोली दुष्ट तेरी यह मजाल मुझे काटने चला है. मैं तुम्हें इस फूलों के बाग से निकलवा न दिया तो मेरा नाम नहीं. इतना कह कर रानी तितली ने बंटू मच्छर के गाल पर एक थप्पड़ और मार कर बोली जा भाग जा यहां से वर्ना मार कर तेरे हाथ पैर तोड़ डालूंगी. तभी वंहा पर चन्दन भंवरा आ गया. वह रानी और बंटू के बीच तू तू मैं मैं होते देख कर बोल पड़ा रानी बहन तुम इस दुष्ट के मुंह क्यों लग रही हो? जब से यह दुष्ट हमारे फूलों के बाग में आया है तभी से हम सब का जीना दुसवार कर दिया है. हमें तो इस पर मुकदमा कायम कर इसे कड़ी से कड़ी सजा दिलवानी चाहिए ताकी यह दोबारा इस फूलों के बाग में आने की हिम्मत न कर सके. हां चन्दन भाई तुम ठीक कहते हो. हम सब को मिल कर बंटू पर मुकदमा कायम कर देना चाहिए. रानी तितली ने भी चन्दन भौरा की बात का पूर्ण समर्थन किया. एक दिन रात में सोनू गौरैया और उसके दोनों बच्चो को बंटू मच्छर काट काट सारी रात उनका खून चुसता रहा. जिससे सोनू गौरैया और उसके बच्चे सारी रात सो न सके. अगले दिन सोनू गौरैया अपनी परेशानी ले कर टिंकू बुलबुल और श्याम कोयल के पास पहुंच कर अपनी सारी परेशानी बताई तो सभी बंटू को बुरा कहते हुए उसके खिलाफ हो गए. सभी बंटू पर मुकदमा करने और फूलों के बाग से निकलवाने पर एक जुट हो गए. उस दिन फूलों के बाग में रहने वाले सभी पंक्षी और सभी जीव बंटू मच्छर पर मुकदमा करने के लिए पिंकी मधु मक्खी के अदालत में हाजिर हुए. पिंकी मधु मक्खी ने बंटू मच्छर के खिलाफ मुकदमा कायम कर बंटू को गिरफ्तार करने का वारंट जारी कर दिया. उसी दिन पिंकी मधु मक्खी ने अपने सिपाही रामू चमगादड़ को बुला कर कहा कल तक तुम बंटू मच्छर

को पकड़ कर हमारी अदालत में हाजीर करो. पिंगी मधु मक्खी का हुक्म पाते ही रामू चमगादड़ बंटू की खोज में निकल पड़ा. उस रात बंटू श्याम कोयल के घर के सामने चक्कर लगाते पकड़ा गया, पहले तो बंटू ने रामू चमगादड़ से बोला तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं आज ही यह फूलों का बाग छोड़ कर कहीं दूर चला जाऊंगा. इतना सुन कर रामू चमगादड़ बंटू के गाल पर एक थप्पड़ मारते हुए बोला दुष्ट मैं तुम्हें ऐसे नहीं छोड़ सकता हूं, तुम्हें तो तेरे किए की सजा दिला कर ही रहूंगा. इतना कह कर रामू चमगादड़ बंटू को दोनों हाथों से पकड़ कर रात में ले जा कर कैद खाने में बन्द कर दिया. दूसरे दिन सुबह पिंगी मधु मक्खी की अदालत में सोनू टिकू श्यामू और रानी चन्दन चकमक मुकदमे का फैसला सुनने के लिए हाजीर हुए. बंटू को कैद खाने से निकाल कर अदालत के कटघरे में खड़ा किया गया. पिंगी ने बंटू से उसके काटने के बारे में सफाई देने को कहा तो बंटू ने कुछ कहने से पहले ही अपना सारा जुर्म स्वीकार कर सजा पाने को तैयार हो गया. पिंगी मधु मक्खी ने अपनी ओर से मुकदमे का फैसला सुनाती हुई बोली बंटू को उसके बुरे सलूक के लिए 10 थप्पड़ और फूलों के बाग से निकाल देने की सजा दी जाती है. याद रखना आज के बाद इस फूलों के बाग में आ गए तो जीवन भर के लिए कैद खाने में डाल दिए जाओगे. सजा पाने के बाद बंटू मच्छर वहां से निकल कर मानव बस्ती में आ कर रहने लगा. कहते हैं तभी से बंटू और उसका परिवार मानव बस्ती से निकलने का नाम नहीं लिया न किसी ने बंटू पर मुकदमा चलाने और सजा दिलाने की हिम्मत की.

विश्व में भारत आर्थिक विकास का इंजन है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



विश्व में भारत आर्थिक विकास का इंजन है,
जहाँ पारदर्शिता कारोबारी सुगमता का मेल है.
यहाँ वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता को,
प्राथमिकता देना अर्थव्यवस्था का खेल है.

दूरदर्शी कल्याणकारी नीतियों का मेल है,
जनसांख्यिकीय तंत्र को ताकत बनाना खेल है.
कड़ियों को सामंजस्य से जोड़ना मेल है,
सुगमता सामंजस्यता लाना यहाँ खेल है.

अर्थव्यवस्था को ताकतवर बनाकर,
दुनिया का विश्वास हासिल करना मेल है.
विकसित देश भारत के साथ व्यापारिक समझौते,
के लिए उत्सुक हैं जो मेहनत का खेल है.

मेढ़क को हुआ जुकाम

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



एक बहुत बड़ा तालाब था. उसमें सभी तरह के जल चर रहते थे. तालाब में सोनू नाम का एक मेढ़क अपनी पत्नी के साथ रहता था. मेढ़क से वीनू नाम की रोहू मछली से गहरी दोस्ती थी. एक रोज मेढ़क को जुकाम हो गया. जुकाम से मेढ़क परेशान हो गया. एक रोज रोहू मछली मेढ़क से मिलने उसके घर आई तो देखा मेढ़क चारपाई पर लेटा हुआ था. उसे बार बार खांसी आ रही थी. मेढ़क की हालत देख कर रोहू मछली बोल पड़ी अरे तुम्हें तो जुकाम हो गया है. कोई दवा खाई या नहीं? रोहू बहन मुझे क्या पता दवा कहां मिलती है. ठीक है मैं बताती हूं. इस तालाब के उतर छोर पर डाक्टर ओम् कछुआ का अस्पताल है. वहां तुम्हें हर मर्ज की दवा मिल जाएगी. रोहू बहन मेरा पुरा शरीर दुख रहा है मैं चल फिर नहीं सकता हूं. वहां कैसे जा पाउंगा. तो चिन्ता की कौन सी बात है तुम मेरे पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें डाक्टर ओम् कछुआ के अस्पताल पर लिए चलती हूं. मेढ़क रोहू मछली के पीठ पर बैठ कर अस्पताल जा पहुंचा. डाक्टर ओम् कछुआ मेढ़क का अच्छे से चेकअप कर के कुछ दवाईयां और पीने के लिए एक शीशी सीरप दे कर बोला इसे पांच दिन तक सुबह और रात में खाना. पांच दिन में पुरी तरह जुकाम ठीक हो जाएगी. मेढ़क दवा ले कर घर चला आया पांच दिन बाद मेढ़क भला चंगा हो गया. और पहले की तरह तालाब में घुमने फिरने लगा.

हरेली

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न "सुलेखा"



आज सुबह से गाँव में चहलपहल थी। बच्चे बड़े जल्दी उठ गए थे। कोई कांवर लेकर, तो कोई झौहा (टोकरी) सिर पर रखे तालाब दर्रा (मुरूम) लेने जा रहे थे। कुछ गैती से खनन का काम कर रहे थे। हल और कृषि औजारों को घिस घिसकर साफ सुथरा किया जा रहा था। लोग मवेशियों को नहला धुलाकर चकाचक कर रहे थे क्योंकि आज हरेली तिहार है। सावन के अमावस्या के दिन हरेली का त्यौहार मनाया जाता है। किसान जब अपने खेतों में फसल बुवाई का कार्य पूरा कर लेते हैं, चारो तरफ हरा-भरा और मनभावन लगने लगता है तब किसान खुश होकर हरेली का त्यौहार मनाते हैं। सभी किसान, मजदूर अपने औजारों की और मवेशियों की पूजा करते हैं। घरों में पकवान बनाये जाते हैं, गौशाले में विशेष पूजा किया जाता है। खैरा कुकरा या करकराती कुकरी (मुर्गे- मुर्गियों) की बलि दी जाती है। लोग अपनी थकान मिटाने और खुशियाँ व्यक्त करने के लिए मदिरापान भी खूब करते हैं। बाजे -गाजे के साथ गीत गोविन्द और नाच गाने का भी आयोजन होता है।

आज पूरा गाँव खुशियों से सराबोर था। प्रकृति भी रिमझिम फुहार के साथ अपने आशीर्वाद की झड़ी लगा रही थी। भलीदाई पानी से भरी बाल्टी लेकर अपने घर की तरफ जा रही थी। तभी उनके पैर अचानक फिसल जाते हैं और वह धड़ाम से गिर पड़ती है। सारे गाँव उत्सव में डूबा हुआ था। भलीदाई का सुध लेता तो लेता कौन? उनकी तो कोई संतान भी नहीं है। गाँव के लोग ही उनकी यथासंभव मदद कर देते थे।

भोलाराम उसी मुहल्ले का रहने वाला एक गरीब किसान है। वह अपने बीवी और तीन बच्चों के साथ रहता है। भोलाराम और उनके बच्चे आज सुबह ज़रा जल्दी ही जाग गए थे। भोलाराम कांवर उठाकर मुरूम (लाने) तालाब चला जाता है और उनके बच्चे भी हाथों में छोटी-छोटी टोकरी लिए पिता के

पीछे-पीछे चल रहे हैं. मुरूम से भोलाराम की पत्नी ने एक सुंदर सा चबूतरा बनाया। फिर हल और सारे औजारों को धोकर उसी चबूतरे में रख दिया. दरअसल गाँव में हरेली त्यौहार के दिन खेती के औजारों की इसी तरह से पूजा किया जाता है. भोलाराम की पत्नी ने चावल आटे के घोल से औजारों पर हाथा लगाई, रोली से टीका लगाया और आरती उतारी. नारियल और चीला भी चढ़ाया. भोलाराम की पत्नी ने अपने आंचल में बांधे हुए सौ रुपये के नोट निकालते हुए भोलाराम से कहा- अजी सुनिए ! किराने की दुकान से बेसन के पैकेट और एक लीटर तेल भी लेते आना. बच्चों को आज बेसन के लड्डू और पकवान खाने का बड़ा मन हो रहा है. महीनों से बच्चों ने कुछ अच्छी चीजें नहीं खाई हैं। भोलाराम पैसे लेकर दुकान चला जाता है. भोलाराम ने देखा कि रास्ते में भलीदाई गिरी पड़ी है। वह उठने का प्रयास कर रही है लेकिन उठ नहीं पा रही है. भोलाराम दौड़कर भलीदाई को उठाता है और कंधे पर सहारा देकर उसे घर पहुँचाता है. भलीदाई के पैरों में चोट लगी थी। उसने डाक्टर साहब को बुलाया. डाक्टर ने भलीदाई का ईलाज किया और एक पर्ची में दवाई का नाम लिखकर लाने के लिए कहा. भोलाराम उन्हीं पैसों से दवाई लेकर आया और भलीदाई को खिलाया, भलीदाई का दर्द दूर हो जाता है और वह ठीक हो जाती है. भलीदाई ने भोलाराम को खूब आशीर्वाद दिया. इतने में काफ़ी समय व्यतीत हो जाता है और रात हो जाती है।

इधर भोलाराम के बच्चे पिता की राह देखते- देखते सो जाते हैं. घर आने पर भोलाराम ने सारी बातें पत्नी को बताई। पत्नी ने भोलाराम से कहा- कोई बात नहीं, पकवान तो कभी भी खाया जा सकता है लेकिन आज आपने एक बेसहारा बुजुर्ग की मदद करके उनके होठों पर मुस्कान खिलाया है। यही हमारे लिए हरेली का सबसे बड़ा त्यौहार है और वे बच्चों के सिर पर हाथ फेरते हुए सो जाते हैं

भाई-बहन का पवित्र त्यौहार - राखी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



रक्षाबंधन भाई-बहनों का एक पवित्र त्यौहार है। इसे श्रावण मास के पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन का सबको बेसब्री से इंतजार रहता है। बचपन में भाई-बहन कितना भी लड़ते-झगड़ते हो, लेकिन रक्षाबंधन के दिन सब भूल जाते हैं।

राखी क्या है :

राखी केवल रेशम का एक धागा ही नहीं है; अपितु यह एक ऐसी डोर है जिसे बाँधने के बाद भाई-बहन का सम्बंध जन्म-जन्मांतर तक बँध जाता है। इसलिए अगर कोई लड़की किसी लड़के को भाई बनाकर राखी बाँधती है, तो उसे जीवन भर निभाना पड़ता है।

राखी मनाने की परम्परा :

पुराणों के अनुसार माना जाता है कि जब भगवान श्रीहरि विष्णु जी ने राजा बलि से दान में तीन पग धरती लेकर तीनों लोक पर अधिकार कर लिया, तो बलि ने भगवान श्रीहरि विष्णु जी से अपने महल में रहने का आग्रह किया। भगवान श्रीहरि विष्णु जी इस आग्रह को मान गये। भगवान विष्णु जी की पत्नी माता लक्ष्मी को भगवान श्रीहरि विष्णु जी और बलि की मित्रता अच्छी नहीं लगी। अतः उन्होंने भगवान विष्णु जी के साथ बैकुण्ठ जाने का निश्चय किया। इसके बाद माँ लक्ष्मी ने बलि को रक्षा का धागा बाँध कर भाई बना लिया। इस पर बलि ने लक्ष्मी से मनचाहा उपहार माँगने के लिए कहा। इस पर माँ लक्ष्मी

ने राजा बलि से कहा कि वह भगवान विष्णु को इस वचन से मुक्त करें कि भगवान विष्णु उसके महल में रहेंगे. बलि ने यह बात मान ली, और साथ ही माँ लक्ष्मी को अपनी बहन के रूप में भी स्वीकार किया. तब से लेकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है.

आधुनिक राखियाँ :

आजकल बाजारों में एक से बढ़कर एक राखियाँ देखने को मिलती हैं. बहनें भी अपने भाइयों के लिए सुंदर व भाई के मनपसंद की राखियाँ खरीदती हैं. इससे भाई-बहन का प्यार सुदृढ़ होता है.

राखी भेजने की परंपरा :

जो भाई या बहन दूरस्थ जगहों में रहते हैं, तो बहन के द्वारा उन्हें राखी भेजने की परंपरा है. इस दिन पत्र के द्वारा शुभकामना संदेश भी भेजा जाता है. आजकल मोबाइल के जमाने में पत्र लिखना लगभग बंद हो गया है. लोग मोबाइल के द्वारा शुभकामना संदेश भेजते हैं . इस तरह रक्षाबंधन का त्यौहार भाई-बहन का एक पवित्र त्यौहार है जो सदियों से चला आ रहा है .

कैसे बांधते हैं राखियाँ :

रक्षाबंधन के दिन भाई-बहन सुबह से स्नान करके दोनों तैयार हो जाते हैं और फिर शुभ मुहूर्त में बहन थाली में रोली, कुमकुम, अक्षत, दीप आदि सजाकर अपने भाई की आरती करती हैं. उसके दाएँ हाथ की कलाई पर राखी बाँधती हैं. मिठाई भी खिलाती हैं .बदले में भाई कुछ उपहार स्वरूप बहन की पसंद की वस्तुएँ भेंट करते हैं.

रक्षा का वचन :

राखी बाँधने के बाद भाई के द्वारा बहन की रक्षा करने का वचन दिया जाता है और उसे वह निभाता भी है.

अपना काम आप करो

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी



किसी गांव में रामू नाम का एक व्यक्ति रहता था उसके पास दो भैंस और एक गाड़ी थी. वह गांव से सामान लादकर शहर ले जाता और शहर से लादकर गांव लाता.यही मजदूरी वह प्रतिदिन किया करता था इसे जो भी आमदनी होती उससे वह अपने परिवार और भैंसों का भरण-पोषण किया करता था.एक दिन की बात है बारिश हो रही थी.मार्ग कच्चा था और रात हो चुकी थी. अचानक गाड़ी के दोनों चक्के मिट्टी में धंस गए और भैंस भी धंस गए. इससे रामू बहुत ही परेशान हो गया और ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा. हे भगवान!मेरी मदद करो उसकी प्रार्थना सच्ची थी.एक देवता साधु का रूप धरकर वहां प्रकट हो गए रामू ने उन्हें देखकर प्रणाम किया उन्होंने कहा कि हिम्मत ना हारो एक पहिए को कंधा के सहारे आगे धकेलो तब चक्का मिट्टी से बाहर निकल जाएगी.रामू ने वैसा ही किया और थोड़े ही प्रयास से गाड़ी मिट्टी से बाहर निकल गई. उसने दाएं-बाएं देखा तो साधु बाबा कहीं दिखाई न दिए.वह ईश्वर के चमत्कार को समझ चुका था मन ही मन ईश्वर का गुणगान करता वह गाड़ी हाथ आगे बढ़ गया.

ईश्वर उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं,यह बात उसे समझ आ गई थी.

प्रायश्चित

रचनाकार- संगीता पाठक



अजय कक्षा पाँचवी का छात्र था. वह अत्यंत प्रतिभाशाली बालक था. उसकी कक्षा का सहपाठी सोनू उससे बहुत ईर्ष्या करता था. एक दिन कक्षा शिक्षिका छाया मैडम जब अपने कालखंड में कक्षा में प्रविष्ट हुई.

उनकी दृष्टि अजय पर पड़ी. वह बहुत रो रहा था. छाया मैम उसके कंधे पर हाथ रख कर बोली - "अजय क्या हुआ ? आप इतना क्यों रो रहे हो?"

अजय- "जी मैम, मेरी अंग्रेजी की कॉपी बैग से चोरी हो गयी. मेरे पास दूसरी कॉपी बनाने का अब समय नहीं बचा है. परीक्षा पास आ गयी है."

छाया मैम - "एक उपाय है. तुम देवांश की कॉपी घर ले जाओ बेटा."

छाया मैम सभी बच्चों को डाँटते हुये बोली- "बच्चों आप लोगों की कक्षा सबसे अनुशासित कक्षा मानी जाती है, किंतु जिसने भी चोरी जैसा घृणित पाप किया है, ये अच्छी बात नहीं है."

सभी बच्चे उनकी बात ध्यान पूर्वक सुन रहे थे. ऐसे समय में बच्चे मासूमियत से जवाब देते हैं.

अजय देवांश की कॉपी लेकर खुशी-खुशी घर जा रहा था. तभी रास्ते पर उसने लोगों की भीड़ देखी. वह साइकिल खड़ी करके उत्सुकतावश भीड़ के भीतर गया तो देखता है सोनू घायल अवस्था में बेहोश पड़ा है.

वह जोर से चिल्लाया.

सोनू...सोनू....

भीड़ में से एक आदमी बोला क्या तुम इसे जानते हो ?

अजय -"जी ये मेरी कक्षा में पढ़ता है."

आदमी-"इसके घर का फोन नं है बेटा?"

अजय सोनू के बैग से डेली डायरी निकाल कर उनको दे दिया.

घर में खबर मिलते ही सोनू के मम्मी पापा घबराकर वहाँ पहुँच गये.

एक सप्ताह वह अस्पताल में भरती रहा.पैर में चोट लगने से प्लास्टर चढ़ा था.

अजय सोनू से मिलने उसके घर भी गया.फोन से हाल चाल भी पूछता रहा.एक दिन अजय जब सोनू के घर पहुँचा.तब सोनू उसे देख कर रोने लगा.

अजय-"अब तो सोनू तुम्हारा प्लास्टर भी खुलने वाला है.तुम्हें तो खुश होना चाहिये.तुम रो रहे हो."

सोनू -"मैं अपने किये पर बहुत पछता रहा हूँ.तुम्हारी अंग्रेजी कॉपी मैंने चोरी की थी.उसे फाड़कर कचरे में फेंक दिया था.मैं बहुत बुरा हूँ इसलिये भगवान मुझे सजा दिये हैं."

अजय-"तुम्हारे आँसुओं में तुम्हारा पाप धुल गया है सोनू.अब तुम बहुत अच्छे बच्चे बन गये हो.मेरी ओर देखो

और मुस्कुरा दो."

सोनू मुस्कुराने लगा.अब दोनों के बीच मित्रता का भाव अंकुरित हो गया.सोनू का बैर भाव आँसुओं में बह गया.

भगतसिंह की अंतिम इच्छा

रचनाकार- संगीता पाठक



भारत माँ के सच्चे सपूत से
जेलर ने अंतिम इच्छा पूछी
भगत सिंह ने माँ से मिलने
की इच्छा जाहिर की.

माँ सिसकियाँ भरते-भरते
उनसे मिलने आयी थी.

तब भगत सिंह बोले
माँ !तेरे मन में अपनी बहू
को देखने की तमन्ना थी.

माँ! वो फाँसी का फंदा
ही मेरी दुल्हन है
मैं उसे गले लगाऊंगा.

सच कहता हूँ यदि
मिले मुझे कई जन्म तो
हर जन्म में
भारत माँ के चरणों में
शीश अपना चढ़ाऊंगा.

बेसब्री से इंतजार
कर रहा हूँ उस घड़ी का
कल तेईस तारीख है
मैं फाँसी पर चढ़ जाऊंगा.

माँ !तुम कल मत आना
तुम रोओगी
तो लोग हँसेंगे कि भगतसिंह
की माँ रो रही थी.

भाई को ही भेज देना,
वह आयेगा मेरी मृत देह
को ले जायेगा.

अगले दिन तेईस मार्च
की तारीख आयी

हँसते हँसते
वह वीर सपूत
फाँसी के तख्ते पर झूल गया.

तेईस मार्च की तिथि
के साथ इतिहास के पन्नों
पर हमेशा के लिये अमर हो गया.

हिंदी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



विश्व पटल पर छाई हिंदी.
जन - जन के मनभायी हिंदी.

मान लिया संयुक्त राष्ट्र ने
गर्व सहित, मुस्काई हिंदी.

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर
आदृत हो, इतराई हिंदी.

दूर विदेशी संस्थानों में
अब जा रही पढ़ाई हिंदी.

प्रौद्योगिकी - अभियंत्रण में
अतिशय धाक जमायी हिंदी.

दुनियाभर में बोली जाती
विपणन ने अपनाई हिंदी.

टीवी, फिल्म, पत्रिका, मोबाइल
चैनल में इठलाई हिंदी.

अँग्रेजी का नव विकल्प बन
लेती है अँगड़ाई हिंदी.

संस्कृति, उत्सव, त्योहारों की
नस - नस में है समायी हिंदी.

सहज, सरल भावों - शब्दों की
शीतल - सी पुरवाई हिंदी.

देशज बोली, भाषाओं की
करती है अगुवाई हिंदी.

हो संयुक्त राष्ट्र की भाषा
गिने न और दहाई हिंदी.

उड़े तिरंगा बीच नभ

रचनाकार- डॉ० सत्यवान 'सौरभ'



आज तिरंगा शान है, आन, बान, सम्मान.
रखने ऊँचा यूँ इसे, हुए बहुत बलिदान.

नहीं तिरंगा झुक सके, नित करना संधान.
इसकी रक्षा के लिए, करना है बलिदान.

देश प्रेम वो प्रेम है, खींचे अपनी ओर.
उड़े तिरंगा बीच नभ, उठती खूब हिलोर.

शान तिरंगा की रहे, दिल में लो ये ठान.
हर घर, हर दिल में रहे, बन जाए पहचान.

लिए तिरंगा हाथ में, खुद से करे सवाल.
देश प्रेम के नाम पर, हो ये ना बदहाल.

लिए तिरंगा हाथ में, टूटे नहीं जवान.
सीमा पर रहते खड़े, करते सब बलिदान.

लाज तिरंगा की रहे, बस इतना अरमान.
मरते दम तक मैं रखूँ, दिल में हिंदुस्तान.

तब और अब का अंतर

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



जब नहीं था हमारे पास अलार्म;
स्वयं से याद रखते थे सारे काम,
ना था मोबाइल और व्हाट्सएप,
मिलते थे अपनों से सुबह-शाम.

अनजानो से फ़ेसबुक में पूछते हैं हालचाल
नहीं पता क्या हो रहा है अपने घर का हाल
अपनों के लिए बिल्कुल समय नहीं,
नई पीढ़ी में आया कैसा असर!

बारिश की बूंदे और ठंडी हवा को छोड़,
ना सूरज की किरणें ना ही भागदौड़,
प्रकृति को महसूस करने की क्षमता हो गई कम,
यह जीवन का हे कौन सा मोड़.

गर्मी में ए.सी, ठंड में हीटर,
गर्मी में फ्रिज तो ठंड में गीजर,
शारीरिक शक्ति हो गई कम,
न चल पाते हम दो-चार किलोमीटर

देखें पूरी दुनिया को यूट्यूब में,
पढ़ाई करें मोबाइल के ई बुक में,
आंखों में कमजोरपन, सर्वाइकल और डिप्रेशन,
शरीर से नहीं ताकतवर पर दिमाग खूब है.

मानसिक रूप से लेते जाए ज्ञान,
पर भूले न शरीर का रखना ध्यान,
जीवन में लेकर आए संतुलन,
न होते जाए सत्य से अनजान.

जीवन की यात्रा

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



उम्मीद के दीए को जलाकर,
दर्द और तकलीफ को भूलाकर,
मुश्किलों को सुलझा कर,
हिम्मत को खुद में समाकर,
जीते जा तू जीते जा,
जीवन यात्रा को पूरा कर.

जोश से स्वयं को चला कर,
आलस्य को हटाकर,
परिश्रम से कमा कर,
अपने फर्ज को अदा कर,
आगे आगे तू बढ़ते जा,
जीवन की यात्रा को पूरा कर.

खुद पर भरोसा सदा कर,
काबिलियत को आजमा कर,
हृदय में नम्रता बसाकर,
कुछ ना रह जाए अधूरा,
जीवन की यात्रा को पूरा कर.

एहसास

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



एहसास है तो,
कभी खुशी होगी,
तो कभी दर्द होगा,
कभी दया होगी,
तो कभी क्रोध होगा.

एहसास है तो,
महसूस करेंगे ही,
जीवन में लड़ेंगे भी,
निडर तो बनेंगे ही,
पर कभी-कभी डरेंगे भी.

एहसास है तो,
किसी को समझेंगे कभी,
आँखों से आँसू झलक उठेंगे,
अपने लगेंगे सभी,
पर कभी-कभी जरूर रूठेंगे.

एहसास है तो,
मन में चेतना,
हृदय में इंसानियत,

कभी-कभी वेदना,
तो कभी संवेदना.

एहसास का तो होना है जरूरी,
जिंदगी है इसी से पूर्ण,
किसी भी एहसास से क्यों हो दूरी,
जी हाँ! एहसास से ही है जीवन संपूर्ण.

जाने के बाद

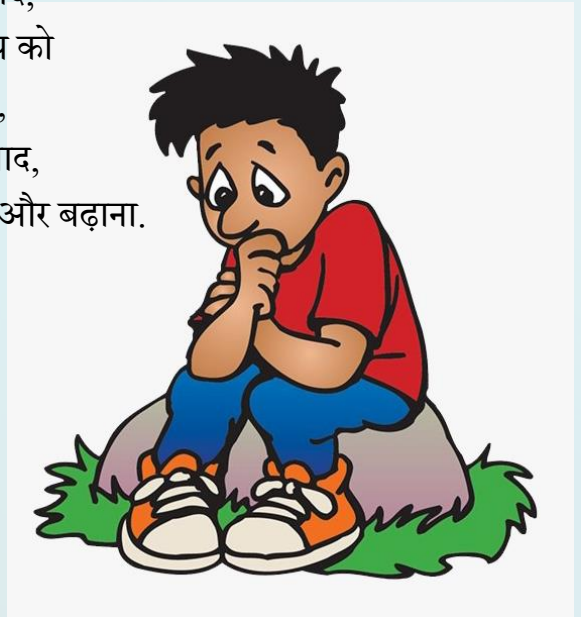
रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे

कुछ हो जाने के बाद,
उसके बारे में क्यों सोचना,
कुछ खो जाने के बाद,
उसे सोच कर क्यों रोना.

कुछ हो जाने के बाद,
उससे जरूरी है सीखना,
कुछ खो जाने के बाद,
अहमियत रखें, बाकी है हमारे पास जितना.

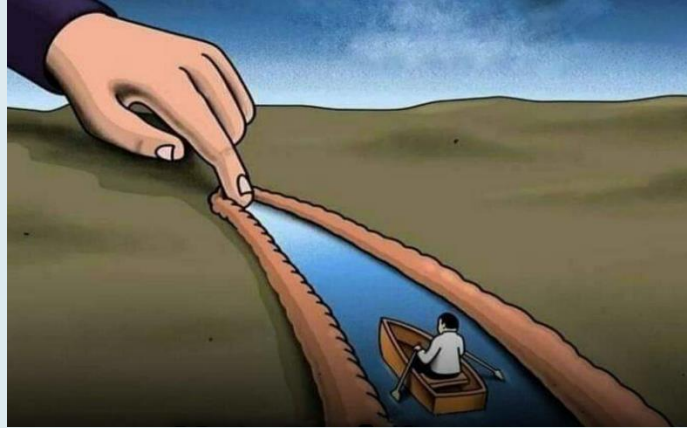
कुछ हो जाने के बाद,
क्यों उदासी में रहना,
कुछ खो जाने के बाद,
क्यों उसके बारे में बार-बार कहना.

कुछ हो जाने के बाद,
वर्तमान और भविष्य को
बेहतरीन बनाना,
कुछ खो जाने के बाद,
जो है उसे शिद्दत से बचाना और बढ़ाना.



रख खुद पर एतबार

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



परवाज नहीं है पंखों की मोहताज,
खामोशी से भी भरी है एक आवाज,
बढ़ते जा, चलते जा,
क्योंकि जमाने को तो है हर बात पर एतराज.

खटकने दे तेरी खामोशियाँ,
रास्ते में जरूर मिलेगी कामयाबियाँ,
जवाब देना नहीं है किसी को जरूरी,
जला तू हौसले का दीया.

तुझको भी है ख्वाब देखने का हक,
कर ना तू खुद की हिम्मत पर शक,
निकालने वाले निकालेंगे बहुत सी कमियाँ,
खुद के हुनर को तू ही परख.

क्यों रोएँ उस पर जो पीछे छूटा,
क्यों तू इतना खुद से ही रूठा,
पकड़ के रख जो है तेरे पास,
तेरा अंदाज है बेहद अनूठा.

गज़ल

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



आप इक आखिरी ख़ता करना
ज़िंदगी के लिए दुआ करना.

ज़िंदगी में सफल जो होना है,
रोज़ मेहनत का तुम नशा करना.

रिश्ते में गर खटास आ जाए
दिल से नफ़रत को ही दफ़ा करना.

अपने ही जब बने हुये दुश्मन
क्या किसी से यहाँ गिला करना.

दिल दुखाये जो प्यार में तेरा,
ऐसे लोगों से भी वफ़ा करना.

मेघलोक से उतरो बादल

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



सूखे - सूखे खेत हमारे,
सूख गए सब ताल- तलैया.
झुलस रही है सोनचिरेया,
प्यासी- प्यासी काली गैया.

मेघलोक से उतरो बादल,
झुलसे- झुलसे पेड़ के पत्ते.
कब तक आओगे धरती पर,
धान की खेती हो सब गत्ते.

प्यासे- प्यासे झींगुर मेंढ़क,
टर्- टर्- टर्- टर् खूब पुकारे.
बोलो बादल कब बरसोगे,
कब तक गगन किसान निहारे.

बोलो बादल मेघलोक से,
कब आओगे पानी लेकर.
जीव-जंतु सब प्यासे-प्यासे,
सबका प्राण बचाओ भू पर.

तिरंगा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू



भारत की पहचान तिरंगा
आन-बान औ' शान तिरंगा.

आसमान में लहराता है
हम सबका अभिमान तिरंगा.

सरहद पर सैनिक के हाथों
हरदम पाता मान तिरंगा.

हिंदुस्तानी हर मुख पर है
हम क्या दें अवदान तिरंगा.

तुम पर रहे सदा न्योछावर
बालक, वृद्ध, जवान तिरंगा.

भारत के नर-नारी करते
तेरा ही गुणगान तिरंगा.

गर आन में आँच आए तो
कोटि-कोटि बलिदान तिरंगा.

रक्षाबंधन

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'



राखी लेकर बहना आई,
कहे 'गिफ्ट' देना ओ भाई.

'कैडबरी' का 'गिफ्ट पेक' हो,
मीठा में बस 'मिल्क केक' हो.

देना तुम मुझे 'ड्रेस फैसी',
नगद नहीं 'क्रिप्टो केरेंसी'.

सुनकर भाई जेब टटोला,
कहने को अपना मुँह खोला.

पहले मैं कुछ पढ़ लिख जाऊँ,
जो चाहे वो तुझे दिलाऊँ.

भारत देश की आजादी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी थी भारत मां,
अपने महावीर लाल से लगा रही थी गुहार.
पराधीन बनकर खो दी मैंने अपनी अस्मिता,
कोई तो सुन लो अपने जननी की पुकार..

मां की करुणा देख उठ खड़े हुए भारतवासी,
जो जन थे पहले बेबस, मायूस और लाचार.
शंखनाद करके बिगुल बजा दिए संग्राम की,
नहीं सहेंगे राक्षस रूपी अंग्रेजों के अत्याचार.

कृषिक्षेत्र में काम करते किसान हल लेकर दौड़े,
फावड़ा ले-लेकर निकले श्रम करते हुए मजदूर.
तोप और बंदूक लेकर घेर लिए रक्षक तीनों सेना,
उतर गए मैदान में नेता राजनीति सीख भरपूर.

सुन गोरे तुम्हारी गोलियों ने हमारे खून को पिया,
अभी भी हमारे तन में है तुम्हारे कोड़ों के निशान.
हम लोग जुल्म को सहकार बन गए हैं फौलादी,
भारत माता की कसम मिटा देंगे तुम्हारी पहचान.

एक गोरे ने कहा, मरे हुए दिल अब जिंदा हो गए,
मर रहे हैं हमारे लोग, अब छोड़ चलो सब प्रभुता.
लौटा देते हैं भारतीयों को उनकी जननी जन्मभूमि,
कहीं हम गुलाम ना बन जाएं दो उनको स्वतंत्रता.

हिन्दी भाषा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



सरल, सहज और मीठी भाषा,
बहु प्रचलित और श्रेष्ठ भाषा.

हम सब की है प्रिय भाषा,
हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा.

साहित्य का शृंगार है हिंदी,
सूर, मीरा की भाषा हिन्दी.

मैत्री की भाषा है हिन्दी,
राष्ट्र का प्रतीक है हिन्दी.

पढ़ते हिन्दी, लिखते हिन्दी,
सुनते और समझते हिन्दी.

हिंदी भाषा हमारी शान,
करते हम इस पर अभिमान.

प्यारी माँ

रचनाकार- ललित तिवारी, कक्षा-5, शासकीय प्राथमिक शाला कुरूद, दुर्ग



प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ.

चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ.

सबसे मीठे बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ.

खाना हमें खिलाती माँ,
लोरी गाकर सुलाती माँ.

प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ.

ऐसा मेरा हिंदुस्तान हो

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



सभी का सम्मान हो,
हम देश की शान हों,
देश के लिए हमारे प्राण हों,
देश हमारी जान हो,
ऐसा हर एक हिंदुस्तानी और
मेरा हिंदुस्तान हो.

सभी साक्षर और बुद्धिमान हों,
वतन पर कुर्बान हों,
मानवता में महान हों,
सभी समान हों,
ऐसा हर एक हिंदुस्तानी और
मेरा हिंदुस्तान हो.

चमकती धरती, चमकता आसमान हो,
मातृभूमि का अभिमान हो,
अनगिनत वीर जवान हों,
शहीदों सा बलिदान हो,
ऐसा हर एक हिंदुस्तानी और
मेरा हिंदुस्तान हो.

सर उठा कर जीने का स्वाभिमान हो,
इस मातृभूमि को प्रणाम हो,
सुनहरे खेत खलिहान हों,
भारतीय हमारी पहचान हो,
ऐसा हर एक हिंदुस्तानी और
मेरा हिंदुस्तान हो.

राष्ट्रगीत का बखान हो,
अच्छी सोच की ऊँची उड़ान हो,
हिंदुस्तानी होने का गुमान हो,
ऐसा हर एक हिंदुस्तानी और
ऐसा मेरा हिंदुस्तान हो.

मैं एक तारा हूँ

रचनाकार- ललित तिवारी, कक्षा-5, शासकीय प्राथमिक शाला कुरुद, दुर्ग



आसमान में मैं रहता हूँ,
नीचे कभी नहीं आता हूँ.

सागर से बहुत ही दूर,
चांद के पास मैं रहता हूँ.

रात में मैं चमकता हूँ,
दिन में नहीं दिखता हूँ.

सबको प्यार सिखाता हूँ
किसी का बुरा नहीं चाहता हूँ.

जो कोई मुझसे जो मांगे,
सबकी माँगे पूरी करता हूँ.

चलो घर-घर तिरंगा फहराएंगे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



चलो घर-घर तिरंगा फहराएँगे,
भारत माता का मान बढ़ाएँगे.
राष्ट्रीयता का अलख जगाएँगे,
शहीदों को शीश हम झुकाएँगे.

रंग जाए आसमान तिरंगे से,
सफेद हरे और केसरिया से.
भारत की जय-जयकार गूँजे,
जन-गण-मन राष्ट्र के गान से.

त्याग, बलिदान, व समृद्धि का,
और शांति का संदेश दे जाएँगे.
न कोई दुखी रहे न कोई भूखा,
सबके चेहरे पर खुशियाँ लाएँगे.

बलिदानियों की अमर कथा,
चलो जन-जन को सुनाएँगे.
शहादत उनकी व्यर्थ न जाए,
यह मर्म चलो हम समझाएँगे.

रण-गाथा है अनमोल उनकी,
उस गाथा की स्तुति गा जाएँगे.
राष्ट्र-धर्म का हम शपथ खाकर,
भारत का सर ऊँचा उठाएँगे.

भोर ले भार धर के रेंगव

रचनाकार- सोमेश देवांगन



मय ह भोर ले भार धर के रेंगव,
सोच कमा के मय हर का लाहू
दुच्छा झँन राहय मोर ये झोली,
लांघन रही चुचवा पसीना कमाहू.

मय निकलेव ग धर के ये नांगर,
हो हो कही बईला हांकत जाहू.
फांद के नांगर अउ बांध के पागा,
हांकत होर होर नांगर मय चलाहू.

बीज छिछ मय हर बोवांरा करहूँ,
अउ भाग ला अपन मय अजमाहू.
हो जावय कमाय खाय के पूरती,
ओतके भगवान ले आस लगाहू.

रहय मोर मेरन थोरकिन भगवन,
तव लांघन ला पेज पसीया पियाहू.
झँन होवय कभू मोला ऐको गुमान,
झँन बिपत मा मय कोनो ला भुलाहू.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी-



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी

अमन बहुत प्यारा बच्चा था

वह कक्षा सातवीं में पढ़ता था, उसकी सिर्फ एक आदत बहुत खराब थी, वह सुबह जल्दी नहीं उठता था देर रात तक जगता और सुबह देर से उठता था उसका स्कूल 10:00 से 4:00 बजे तक लगता था, उसकी इस आदत से उसके मम्मी पापा परेशान थे.

1 दिन अमन के मामा उसके घर आए वह अपने साथ अमन को ले जाना चाह रहे थे,

मम्मी ने कहा अमन सुबह जल्दी नहीं उठ पाता मामा ने कहा - कोई बात नहीं उसे आप मेरे साथ भेजो,

अमन मामा के घर आने के लिए खुशी-खुशी तैयार हो गया .मामा के घर अमन की उम्र का ही उनका बेटा राज था और उनका एक पालतू कुत्ता डेयर भी उनके साथ रहता था

सुबह-सुबह राज डेयर को घुमाने लेकर जाता था, दूसरे दिन राज ने अमर से कहा चलो डेयर को घुमा कर लाते हैं ,

अमन ने कहा मैं नहीं जाऊंगा तुम अकेले ही चले जाओ कह कर फिर से अमन सो गया ,

दो-तीन दिन बाद मामी ने अमर से कहा कि राज की तबीयत खराब है कल सुबह तुम ही डेयर को घुमाने लेकर जाओगे, मामी ने सुबह अमन को जगा दिया और कहा

डेयर को घुमाकर लेकर आओ, अमन अनमना सा डेयर को लेकर कॉलोनी में चला गया, इधर-उधर डेयर को घुमाता रहा और अपने घर के रास्ते को ही भूल गया, कुछ देर तक डेयर और अमन रास्ते में ही रुके रहे,

डेयर ने धीरे से दौड़ना शुरू किया ,उसके बेल्ट को पकड़े पकड़े अमन भी धीरे-धीरे दौड़ने लगा ,

1-2 गली के पश्चात डेयर अपने घर पहुंच गया और उसके साथ ही अमन भी घर पहुंच गया

अमन की नींद भाग चुकी थी और उसे सुबह सुबह घूमने में थोड़ा मजा भी आया,

उसने राज से कहा कि वह भी कल जल्दी उठेगा और घूमने जाएगा,

दूसरे दिन अमन जल्दी उठ गया राज और डेयर के साथ वह कॉलोनी में घूमने लगा, सुबह की ताजी हवा उसे बहुत अच्छी लगी.

उसने तय किया कि सुबह जल्दी उठेगा और अपने सभी काम समय पर कर लेगा .

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

कहानी महानता की "दिव्यांग लड़का और घायल पिल्ला "

ईश्वर ने मनुष्य जीवन शायद इसलिए दिया है कि वह परोपकार करें, ना सिर्फ मानव के लिए बल्कि पशु-पक्षियों और अन्य जीव एवं प्राणी के लिए भी उपकार करें. यदि कभी भी हम किसी भी प्राणी को मुसीबत में पाए तो मनुष्य होने के नाते हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम उसकी मदद करें.

आइए एक कहानी के माध्यम से मानवता के मूल्य को समझने का प्रयास करते हैं.

रोज की तरह आज भी श्याम अपनी स्कूल से वापस आ रहा था. तभी एक पेड़ के पास सड़क किनारे कराहते हुए एक पिल्ला को देखा. उस पिल्ला को देखकर श्याम उसके पास पहुँचकर उसे प्यार से सहलाने लगा. उसे उठाते हुए खड़ा करने की कोशिश किया लेकिन पिल्ला अपनी पैरों से खड़ा हो नहीं पाया. शायद उनके एक पैर एक्सीडेंट की वजह से अचल हो गया था। श्याम जल्दी से अपने बैग में रखे हुए फर्स्ट एड बॉक्स निकाला और जख्म हुए स्थान पर पट्टी बांधकर इलाज किया। कुत्ता उसे देखकर प्यार से भौंकने लगा। श्याम समझ गया कि उसे भूख लगी है अपने बैग से टिफिन निकालकर बिस्कुट

दिया जिसे पिल्ला खाने लगा। श्याम उस हालत में पिल्ला को छोड़ नहीं सकता था। वह उसे पकड़कर घर ले आया।

पिल्ला को पकड़े हुए श्याम को देखकर, उसके माता-पिता ने उसे डाटा भी, लेकिन किसी भी तरह से श्याम अपने माँ और पापाजी को पिल्ला रखने के लिए मना ही लिया। श्याम सबसे पहले पिताजी को पिल्ला के बारे में जानकारी देते हुए पशु चिकित्सक के पास उसकी इलाज कराने के लिए ले गया। इलाज कराने के पश्चात श्याम उसे घर में खाना देता है और उसके साथ खेलते रहता है। उसे देखकर वह बहुत खुश होता है।

कुछ दिन पश्चात पिल्ला की हालत में सुधार नहीं होता। उसे खड़ा करने की कोशिश करता है लेकिन पिल्ला खड़ा नहीं हो पाता, उसे देख कर श्याम को बहुत दुःख होता है। उसे अपने ऊपर बीती घटना याद आ रहा था कि एक एक्सीडेंट की वजह से उसका पैर कट गया था। वह अब नकली पैर से चलता है, उसे भी डर लग रहा था कि यह मेरे दोस्त पिल्ला का पैर कट ना जाए। मन ही मन सोच रहा था कि मेरी माँ और पापाजी तो मेरे नकली पैर बनवाकर चलना सिखा दिया, मैं इसे कैसे चलना सिखाऊँ तभी पिल्ला को अपनी नकली पैर निकालकर दिखाता है और कहता है, देखो मेरे एक पैर कट जाने के बाद भी मैं ठीक से चल रहा हूँ। तुम भी आत्मविश्वास के साथ चलने का अभ्यास करो, निश्चित ही तुम चल पाओगे। पिल्ला को श्याम का पैर देखकर बहुत दुःख होता है और श्याम को वादा करता है कि मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ चलने का अभ्यास करूँगा।

कुछ क्षण बाद श्याम का सहारा लेकर धीरे-धीरे पिल्ला चलने की अभ्यास करता है कुछ दिन पश्चात श्याम के प्रयास से एवं पिल्ला के अभ्यास से वह चलने लग जाता है। जिसे श्याम देखकर बहुत खुश होता है। अब दोनों में अच्छी दोस्ती हो जाती है वह पिल्ला, श्याम को स्कूल जाते समय उसका जूता एवं अन्य सामग्री को लाकर उसकी सहायता करता है। उनकी सहायता एवं उन दोनों की मित्रता को देखकर, उसके माँ-पिताजी पिल्ला को अपने घर के सदस्य की तरह प्यार करने लग जाते हैं।

बच्चों मानवता की कहानी के माध्यम से समझा कि श्याम ने पिल्ला को क्यों घर लाया? उस पिल्ले के दर्द और दुःख को वह अच्छी तरह से समझ सकता था क्योंकि वह स्वयं भी दिव्यांग था।

जिन्होंने वास्तव में दुःख की अनुभूति की हो, वही दूसरे के दुःख दर्द को समझ सकता है। दूसरों की सहायता करना ही मानवता का सबसे बड़ा धर्म है।

अनन्या तंबोली कक्षा 7 द्वारा भेजी गई कहानी

आयुष नाम का एक लड़का था उसे कुत्तों से बहुत प्यार था, वह हमेशा छोटे-छोटे पिल्लो को देखकर उनके साथ खेलता उसे प्यार से छूता एक बार रास्ते में उसे एक छोटा पिल्ला दिखा उसके आसपास

कोई नहीं था उसे बहुत ठंड लग रही थी यह देख कर आयुष उसे उठाकर अपने घर ले गया. पिल्ले को देखकर उसकी मां भी उसका देखभाल करने लगी. धीरे-धीरे वह पिल्ला बड़ा होने लगा . आयुष जहां जाता वहां उसे लेकर जाता जो खाता उसे भी खिलाता दोनों में गहरी दोस्ती हो गई दोनों एक साथ खेलते और घूमते फिरते. जब आयुष स्कूल जाता तो भी वह अपने साथ अपने दोस्त टॉमी को अपने साथ ही लेकर जाता जब तक वह स्कूल में रहता तब तक टॉमी वहीं बाहर बैठकर आयुष का इंतजार करता जब छुट्टी होती तो दोनों एक साथ रास्ते में खूब मजा करते हुए घर वापस आ जाते.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनउला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 द					2	3 भो		4 स	
				5 त					
6		7 न		8				9	10
		11					12 पो		
13 घु					14 ख				
			15 गें						
						16 ह			17
18 र	19				20 मॉ				
			21 से					22	
23						24 क			

बाएँ से दाएँ

- अधपका
- तब भी
- सत्य
- मित्र
- रूठा
- किस्मत (अंग्रेजी)
- रात
- व्यक्तिगत
- गोबर रखने का गड्ढा
- कांख
- गेंचुआ
- अचानक
- रखवाला
- बड़ा मृदंग जैसा वाद्य यंत्र
- लिए
- पगली
- बड़ा चम्मच

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 अ				2 ट				3		4
				5	6		7 ख			
8				9 र						
		10 न								11 म
					12		13	14 ह		
					15 ग					
16 हें							17		18 प	
		19 न	20		21		22 ह			
23	24 चा				25	26				
	27				28 क					

ऊपर से नीचे

- भ्रम
- लगातार
- तालाब
- नाला
- काला
- खड़ा व्यक्ति के ऊपर हाथ तक का ऊंचाई
- अश्वशाला
- अहाता
- गंवारफली
- धम्म (से गिरना)
- कहावत
- जमाया हुआ धान का फसल
- पीछे